₹ 100/-
RNI No. : UPHIN/2023/84344
आश्विन-कार्तिक, विक्रम संवत् 2083 (अक्टूबर-2026)
पृष्ठ-100, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

प्रेरणा विचार

मासिक

उत्तर प्रदेश : मातृशक्ति विशेषांक

मातृशक्ति की उड़ान

संस्कार • समर्पण • सशक्तिकरण • सफलता • समर्थ समाज

मेरे सम्मानित प्रदेशवासियों,

प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश शुभत्व एवं मंगल के आराध्य हैं। मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठता है, जब मैं देखता हूं कि संपूर्ण प्रदेश में, विशेषकर युवा अपने घरों में भगवान गणपति की स्थापना कर श्रद्धा के साथ उनका पूजन करते हैं। **सामाजिक एकता एवं राष्ट्र के प्रति अपने संकल्प को सुदृढ़ करने वाले महापर्व गणेश चतुर्थी की आप सभी को कोटि-कोटि मंगलकामनाएं।**

भगवान गणेश का पर्यावरण और जीवों के साथ गहरा जुड़ाव, उनकी रूप-रचना तथा जीवन-दर्शन, प्रकृति के संरक्षण और संतुलन का संदेश देता है। गज मुख जंगलों और वन्यजीवों का प्रतीक है, तो मूषक वाहन भूमि की उर्वरता और कृषि से जुड़ा है। विशाल उदर संपूर्ण ब्रह्मांड को समाहित करने का भाव व्यक्त करता है, जबकि उनके बड़े कान हमें प्रकृति की हर पुकार को सुनने का संदेश देते हैं।

गणेश चतुर्थी पर पूजा जाने वाला 'एकविंशति पत्र' (इक्कीस प्रकार की विशेष पत्तियां) औषधीय पौधों के संरक्षण से जुड़ा है। इस प्रकार गणपति का चरित्र हमें मानव जीवन और प्रकृति के एक-दूसरे का पूरक होने का संदेश देता है। इसी विराटता को **लोकमान्य तिलक ने आस्था से एकता, एकता से जनशक्ति और जनशक्ति से राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देने वाला महापर्व बना दिया।**

गणेशोत्सव के ज्ञान, विवेक और कर्म की भावना सृजन तथा निर्माण के स्वरूप भगवान विश्वकर्मा के पूजन में दिखाई देती है। **17 सितंबर को जब सृष्टि के प्रथम अभियंता भगवान विश्वकर्मा का पूजन किया जाएगा,** तब कौशल एवं तकनीक के संगम से नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहे विकसित उत्तर प्रदेश के निर्माण का संकल्प और पुष्ट होगा।

एक्सप्रेसवे, एयरपोर्ट, औद्योगिक क्षेत्र और आधुनिक आधारभूत संरचनाएं नए उत्तर प्रदेश के बढ़ते सामर्थ्य का प्रमाण हैं। किसी प्रदेश का वास्तविक निर्माण केवल बड़े ढांचों से नहीं, वहां के लोगों के हुनर, विचारों की शक्ति और उद्यमिता के साहस से होता है। इसी सोच के साथ हमारी सरकार विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, एक जनपद-एक उत्पाद, उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन तथा मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान जैसी पहलों के माध्यम से पारंपरिक कारीगरों, शिल्पकारों, युवाओं और उद्यमियों को कौशल, उपकरण, वित्त और बाजार से जोड़ने का कार्य कर रही है।

मैं आप सभी से विशेष आग्रह करना चाहूंगा कि 'वोकल फॉर लोकल' को केवल विचार नहीं, बल्कि व्यवहार का अंग बनाएं। स्थानीय उत्पादों का सम्मान बढ़ेगा, तो कारीगरों के हाथों को काम, युवाओं को रोजगार के अवसर और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और हुनर तथा स्थानीय सामर्थ्य पर विश्वास से ही आत्मनिर्भर एवं विकसित उत्तर प्रदेश के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

आपका

योगी आदित्यनाथ

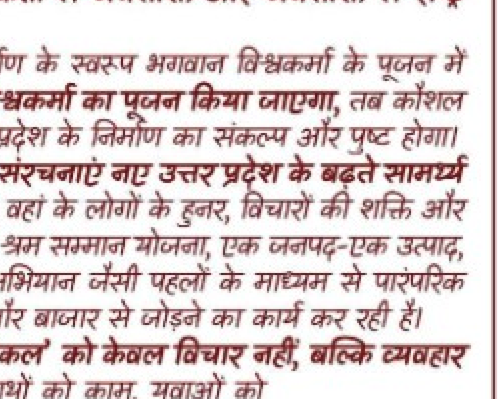

गणपति बप्पा मोरया

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 10

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार संपादक
श्याम किशोर, सुभाष चन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अंक संपादक
शिवानी चतुर्वेदी

अंक संपादकीय टोली
डॉ. शेखर सुमन, अभय श्रीवास्तव, मनोज गुप्ता, छाया सिंह, कुणाल शांडिल्य

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
संपादक
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों का संकलन प्रेरणा टीम ने किया है। इनमें व्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

इस अंक में

साक्षात्कार : संघर्ष, परिवार और आत्मविश्वास के बीच संतुलन......12
बच्चों के सुरक्षित भविष्य की आवाज......16
सृजन और सामाजिक चेतना की प्रेरणा......18
पोषण वाटिका से बदली जिंदगी......20
एक कैंसर सर्वाइवर की अनूठी सेवा......21
सिपाही बनी 'स्कूल वाली दीदी' बदली बच्चों की तकदीर......23
'ममता के आंचल' में थिरका चंडोल नृत्य......24
साक्षात्कार : सहनौल की बेटी बनी 'ड्रोन दीदी'......27
केवल लक्ष्य पर निशाना......28
बेटियों के भविष्य की शिल्पकार......32
साक्षात्कार : अभावों से हुआ संकल्प का जन्म......36
नीलू मिश्रा : 'उड़ान' अभी बाकी है......40
साक्षात्कार : संघर्ष को संकल्प में बदला......44
हाथों को हुनर, मेहनत को अवसर......45
निहारिका ने गांव ही नहीं, मन का 'कचरा' भी निकाला......48
साक्षात्कार : सफलता के लिए दूसरे के सपने न टूटने दें......49
साक्षात्कार : अपने सपने पर विश्वास रखिए जरूर साकार होगा......54
मिट्टी से पहचान, मेहनत से मंजिल......61
साक्षात्कार : कत्थक साधना और समाज सेवा......62
कचरे से संवरा कारोबार......63
साक्षात्कार : संघर्ष को संकल्प में बदला......68
बेटी, तू मेरा नाम कर दे......72
ब्रज की लोकधुनों को साधा......74
साक्षात्कार : संकल्प और साधना की कहानी......75
जिसकी लड़ाई, उसकी अगुवाई......82
सेहत भी, स्वावलंबन भी......85
प्रीति पाल ने दी मुश्किलों को मात......91
मातृशक्ति में राष्ट्र जागरण की आधारशिला......92

मातृशक्ति की उड़ान

जीवन की यात्रा कभी सरल पगडंडी सी सहज होती है, तो कभी कठिन रास्तों पर हमारे साहस और धैर्य की परीक्षा लेती है। अँधेरे और अनिश्चितता के बीच भी स्वयं को संभालकर आगे बढ़ते रहना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि, हमारी वास्तविक शक्ति है। महिलाओं के जीवन का एक अहम हिस्सा इसी संघर्ष के बीच आकार लेता है। कभी सामाजिक अपेक्षाएँ, कभी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, कभी अपने सपनों और दायित्वों के बीच संतुलन – हर दौर में उनके सामने चुनौतियाँ अलग–अलग रूप में उपस्थित होती रही हैं। कई बार मन में यह विचार भी आता है कि शायद प्रकृति ने स्त्री के भीतर इतनी शक्ति दे रखी है, इसीलिए उसके हिस्से में संघर्ष भी अधिक आए हैं।

परिवर्तन जीवन का स्वाभाविक सत्य है और किसी भी जीवंत समाज के विकास के लिए आवश्यक भी। बदलते समय के साथ स्त्री की भूमिका भी बदली है। कभी घर की चारदीवारी और पारिवारिक दायित्वों तक सीमित मानी जाने वाली स्त्री आज शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, खेल, उद्यमिता, राजनीति, सामाजिक सेवा और नेतृत्व के विविध क्षेत्रों में अपनी सशक्त पहचान बना रही है। यह बदलाव केवल समय का नहीं, बल्कि स्त्री के साहस, संघर्ष और स्वयं पर विश्वास का परिणाम है।

इसी विचार को केंद्र में रखकर 'प्रेरणा विचार' का यह विशेषांक उन महिलाओं को समर्पित है, जिन्होंने संघर्ष और संकल्प से अपने जीवन की दिशा बदली और दूसरों के जीवन में भी आशा का दीप जलाया। इस विशेषांक को पढ़ते हुए आपको लगेगा कि आप केवल कुछ जीवन–कथाएँ नहीं पढ़ रहे, बल्कि स्वयं एक यात्रा पर निकल पड़े हैं। यह यात्रा उत्तर प्रदेश के उन ग्रामीण अंचलों से शुरू होती है, जहाँ मिट्टी की सोंधी खुशबू, खेतों की हरियाली, पेड़ों की छाँव और रिश्तों का अपनापन जीवन को सहजता से स्पर्श करता है, और फिर कस्बों की गलियों से गुजरते हुए शहरों की उस तेज़ रफ्तार दुनिया तक पहुँचती है, जहाँ सपनों को नई पहचान, संघर्ष को नए अवसर और हौसलों को नई उड़ान मिलती है।परिवेश और परिस्थितियाँ भिन्न हैं, किंतु इन कथाओं का मूल स्वर एक है – संघर्ष से सामर्थ्य और सामर्थ्य से सृजन की ओर बढ़ती स्त्री। यहाँ जीवन–कथाएँ केवल पढ़ी नहीं जाएँगी, महसूस की जाएँगी। किसी की कहानी आपको अपने बचपन तक ले जाएगी, कोई संघर्ष आपके भीतर छिपी किसी पुरानी पीड़ा को छू जाएगा, किसी का साहस आपको अपने जीवन की किसी कठिन घड़ी की याद दिलाएगा और किसी की उपलब्धि आपको यह सोचने पर विवश करेगी कि हमने अपनी परिस्थितियों को कितना स्वीकार किया और उनसे कितना संघर्ष किया।

हमारी सनातन परंपरा सदैव 'चरैवेति–चरैवेति' निरंतर आगे बढ़ते रहने का संदेश देती रही है। किंतु प्रगति की सार्थकता केवल बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि इस बात में भी है कि आगे बढ़ते हुए हम अपने संस्कारों, संवेदनाओं और मूल्यों को कितना सहेजकर रखते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव शक्ति, सृजन और संस्कार की संवाहक माना गया है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' का भाव इसी सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं समृद्धि और मंगल का वास होता है। इसलिए बदलते समय में वास्तविक प्रगति वही है, जिसमें नारी केवल सहभागी ही नहीं, बल्कि सम्मान, समान अवसर और नेतृत्व के साथ समाज की दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति भी बने।

हम ऐसी नारी शक्ति की कल्पना करते हैं जो आत्मनिर्भर हो, लेकिन आत्मकेंद्रित नहीं; आधुनिक हो, लेकिन अपनी जड़ों से कटी हुई नहीं; अधिकारों के प्रति सजग हो, लेकिन कर्तव्यों के प्रति भी संवेदनशील हो; अपने सपनों को पूरा करे और साथ ही आने वाली पीढ़ी के सपनों की नींव भी मजबूत करे। यह विशेषांक हर नारी को समर्पित है, क्योंकि हर स्त्री अपने आप में विशिष्ट है। उसकी भूमिका, परिस्थितियाँ और जीवन–यात्रा भले ही अलग हों, लेकिन उसका साहस, संवेदना, संकल्प और सृजनशीलता उसे विशेष बनाते हैं। आपको विशेषांक कैसा लगा, हमें आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

♦ आज मैं ऊपर, आसमां नीचे 06

♦ आधी आबादी को मिली मुखर आवाज 07

♦ ताकि हर कमजोर महिला को मिले सम्मान............................ 08

उत्तर प्रदेश की नारी-शक्ति ने भरी हुंकार

आज मैं ऊपर, आसमां नीचे

- सर्वेश कुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार नारी शक्ति के उत्थान के लिए समर्पित है। प्रदेश में महिला सशक्तीकरण, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक स्वालम्बन, शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए कई प्रमुख योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का असर प्रदेश में जमीनी स्तर पर भी दिखायी दे रहा है।

इस बदलाव की शुरुआत 'मिशन शक्ति' और एंटी रोमियो स्कायड जैसे अभियानों से हुई। इन दोनों अभियानों से महिलाओं के अंदर आत्मरक्षा और आत्म सम्मान, स्वाभिमान का भाव जागृत हुआ। स्कूलों, कालेजों में छात्राओं के साथ होनी वाली अपमानजनक घटनाओं से छुटकारा मिला। दोषी तत्वों को तत्काल सजा मिली। इस अभियान के साथ-साथ पिंक बूथों की स्थापना की गयी है। सभी थानों पर महिला हेल्प डेस्क की अलग से स्थापना भी एक क्रांतिकारी कदम के रूप में सामने आयी। अब किसी भी थाने में महिला के पहुंचने पर उसे तत्काल सहायता मिल रही है। इन तीन अभियानों मिशन शक्ति, एंटी रोमियो स्काएड, और महिला थानों में हेल्प डेस्क ने प्रदेश की महिलाओं के मान सम्मान की रक्षा के लिए सरकार की मंशा को स्पष्ट किया। सरकार के सभी 1647 थानों में मिशन शक्ति केंद्र स्थापित करने की ओर सरकार बढ़ रही है। सुरक्षा के साथ साथ सरकार ने महिलाओं के आर्थिक उत्थान के लिए सार्थक प्रयास किये हैं। स्वयं सहायता समूह, लखपति दीदी योजनाओ के माध्यम से उन्हें रोजगार उपलब्ध कराये गए हैं।

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

उत्तर प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तस्वीर बदल दी है। आज गांवों की महिलाएं चौखट लांघकर अपने हुनर के दम पर बैंकों से जुड़ रही हैं, आजीविका चला रही हैं और अपने परिवार का आर्थिक संबल बन रही हैं। इसके अलावा, बुजुर्ग महिलाओं के लिए लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति योजना के तहत बसों में मुफ्त यात्रा जैसी सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मेधावी छात्राओं के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश की 50,000 मेधावी बेटियों को स्कूटी प्रदान करने की दिशा में भी सरकार आगे बढ़ रही है। आज उत्तर प्रदेश की बेटियां किसी से कम नहीं हैं। वे शिक्षा, रोजगार, प्रशासन, पुलिस और अन्य सभी क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। महिला सशक्तीकरण का प्रभाव प्रदेश की कानून-व्यवस्था और पुलिस व्यवस्था में भी दिखाई दे रहा है। वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश पुलिस में लगभग 10,000 महिला पुलिसकर्मी थीं। आज इनकी संख्या बढ़कर लगभग 45,000 हो चुकी है और आने वाले समय में यह संख्या और बढ़ाई जाएगी।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए हेल्पलाइन व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण सहारा है। विमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181 और आपातकालीन सेवा '112' महिलाओं को संकट की स्थिति में सहायता उपलब्ध कराने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम हैं। प्रदेश सरकार ने 1090 और 181 जैसी सेवाओं को एकीकृत आपातकालीन व्यवस्था से जोड़ने की दिशा में भी काम किया है। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग के अनुसार आपात स्थिति में 112 पर सहायता ली जा सकती है, जबकि आयोग की टोल-फ्री सहायता सेवा '1800-180-5220' भी उपलब्ध है।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में 'वन स्टॉप सेंटर' अथवा प्रदेश की 'आपकी सखी-आशा ज्योति केंद्र' जैसी व्यवस्थाएं विशेष महत्व रखती हैं। हिंसा, उत्पीड़न या संकट से गुजर रही महिलाओं को सहायता, परामर्श और विभिन्न आवश्यक सेवाओं तक पहुंच दिलाने के उद्देश्य से ऐसी संस्थागत व्यवस्थाएं विकसित की गई हैं। उत्तर प्रदेश महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यक्षेत्र में आपकी सखी-आशा ज्योति केंद्रों के संचालन, 181 महिला हेल्पलाइन और राज्य महिला सशक्तीकरण मिशन को शामिल किया गया है।

देश में नम्बर एक यूपी

प्रधानमंत्री आवास योजना - देश में 5.37 करोड़ आवास, उत्तर प्रदेश में 62 लाख से अधिक, जिनमें अधिकांश महिलाओं के नाम दर्ज हैं।

उज्ज्वला योजना - देश में 10.33 करोड़ परिवार; उत्तर प्रदेश में 1.86 करोड़ परिवार, साथ ही होली–दीपावली पर 2 निःशुल्क सिलेंडर।

मातृ वंदना योजना - देश में 4.28 करोड़ और उत्तर प्रदेश में 60 लाख माताएँ लाभान्वित।

बी.सी. सखी – 39,885 महिलाओं ने ₹42,711 करोड़ से अधिक का लेन–देन संभाला; **विद्युत सखी** के रूप में 15,409 महिलाओं ने ₹ 3,207 करोड़ का बिल कलेक्शन किया।

महिला-बाल अपराध- 98.90 प्रतिशत दोषसिद्धि दर के साथ उत्तर प्रदेश देश में प्रथम; हर थाने में **मिशन शक्ति केंद्र** पर जोरऔर 19,839 महिला पुलिसकर्मियों की हाल ही में भर्ती।

आधी आबादी को मिली मुखर आवाज

- सुभाष चन्द्र सिंह, पूर्व सूचना आयुक्त, लखनऊ

उत्तर प्रदेश की आधी आबादी अब डरती नहीं है, घर से शाम को निकलती है, बेधड़क देर रात लौटती है। क्यों? क्योंकि यहां योगी आदित्यनाथ की भाजपा सरकार है। यहां की महिलाओं को मालूम है कि एक चौराहे पर उसे परेशान किया जाएगा तो अगले चौराहे पर 'योगी के यमराज' जरूर मिलेंगे।

योगी जी के लिए महिलाओं की सुरक्षा सर्वोपरि है। इसलिए वे बेझिझक, बेधड़क और अपनी सुरक्षा के प्रति निश्चिंत होकर प्रगति के नये आयाम गढ़ रही हैं। अलावा इसके, योगी जी की सरकार ने नारी सुरक्षा के साथ अनेकानेक ऐसी योजनाओं की शुरूआत की है जिससे महिलाएं हर तरह से समुन्नति और स्वावलम्बन की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। सरकार ने इस वर्ष महिला एवं बाल विकास एवे पुष्टाहार विभाग के बजट में 11 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। इस निमित्त 18,620 करोड़ खर्च किये जाएंगे।

महिला कल्याण विभाग के लिए 1049.40 करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। महिलाओं को आवास के लिए सस्ते दर पर ऋण उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। महिला पेंशन के लिए 3500 करोड़ रुपये, मुख्यमंत्री सुमंगला योजना के लिए 400 करोड़ रुपये, कामकाजी महिलाओं की सुविधा हेतु छात्रावास योजना में 100 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है। मुख्यमंत्री श्रमजीवी महिला छात्रावास के लिए 35 करोड़ रुपये, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना में 252 करोड़ रुपये, बाल आश्रय योजना भवन निर्माण में 80 करोड़ रुपये, अनुपूरक पुष्टाहार के तहत पोषण सहायता के लिए एक करोड़ 57 लाख रुपये आवंटित किये गये हैं। इसी के साथ लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा योजना में 100 करोड़ रुपये आवंटित किए गये हैं। राज्य सरकार की मुख्यतः तीन योजनाएं ऐसी हैं जो सर्वथा महिलाओं की आवाज को मुखरता प्रदान कर रही हैं।

वर्ष 2026-27 के बाल विकास विभाग के बजट पर एक नजर

- ♦ बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग का कुल बजट – 18,620 करोड़ रुपये
- ♦ कुल बजट में 11 प्रतिशत की बढ़ोतरी
- ♦ महिला कल्याण विभाग के लिए 1049.40 करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रावधान
- ♦ महिला पेंशन के लिए 3500 करोड़ रुपये
- ♦ सुमंगला योजना के लिए 400 करोड़ रुपये
- ♦ कामकाजी महिलाओं की छात्रावास योजना में 100 करोड़ रुपये
- ♦ श्रमजीवी महिला छात्रावास के लिए 35 करोड़ रुपये
- ♦ बाल सेवा योजना में 252 करोड़ रुपये
- ♦ बाल आश्रय योजना में 80 करोड़ रुपये
- ♦ अनुपूरक पुष्टाहार के तहत पोषण सहायता के लिए एक करोड़ 57 लाख रुपये
- ♦ लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा योजना में 100 करोड रुपये

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना में जन्म होते ही बेटियों की चिंता की जाती है। शुरुआती पढ़ाई से स्नातक (ग्रेजुएशन) तक की शिक्षा के लिए छह चरणों में कुल 25 हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। बेटी के जन्म पर दो हजार दिये जाते हैं, एक वर्ष तक लगने वाले सभी टीकों के लिए एक हजार रुपये दिए जाते हैं। कक्षा एक से लेकर ग्रेजुएशन तक उसे निश्चित समयावधि में शिक्षा के लिए कुल 22 हजार रुपये दिये जाते हैं। यह मदद प्रति परिवार अधिकतम दो बेटियों को मिलती है। अब तक करीब 29 लाख बेटियों को इसका लाभ मिल चुका है।

मुख्यमंत्री सामुहिक विवाह योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों को विवाह के लिए ही प्रति जोड़ा एक लाख रुपये की आर्थिक मदद दी जाती है। इसमें 60 हजार सीधे बहू के खाते में दिये जाते हैं, बाकी 40 हजार रुपये वैवाहिक सामग्री और विवाह व्यवस्था के लिए दिया जाता है। इस योजना से करीब साढ़े 27 लाख बेटियां लाभान्वित हो चुकी हैं।

निराश्रित्र महिला पेंशन योजना में पति की मृत्यु के बाद निराश्रित महिलाओं को 1500 रुपये सीधे संबंधित महिला के खाते में दिया जाता है। योगी सरकार आने से पहले यह राशि 500 रुपये थी। योगी जी ने इसे बढ़ाकर 1000 रुपये किया था। अब यह राशि 1500 मासिक कर दी गयी है। पहले करीब 17 लाख महिलाओं को लाभ मिला था। महिला पेंशन की लाभकारी महिलाओं की संख्या अब 38.58 लाख हो गयी है, दोगुने से भी ज्यादा। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी ने घोषणा की है कि 60 वर्ष से ऊपर की सभी महिलाओं को पूरे प्रदेश में सरकारी बसों में मुफ्त बस यात्रा की सुविधा दी जाएगी। वृद्ध महिलाएं इस योजना का लाभ भी ले रही हैं। योजना का नाम रखा गया है लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा। योगी जी ने प्रदेश के सरकारी प्राइमरी स्कूलों में खाना पकाने वालों का मानदेय भी 2000 रुपये से बढ़ाकर 3000 कर दिया है। खाना पकाने वालों में 93 प्रतिशत महिलाएं हैं। इनके वस्त्रों के लिए एक साल में मिलने वाली राशि 500 रुपये से बढ़ाकर 1000 कर दी गयी है। मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने रक्षाबंधन से पहले प्रदेश की 50 हजार छात्राओं को स्कूटी देने की घोषणा की है। 2027 में यह स्कूटी स्नातक में पढ़ने वाली छात्राओं को दी जाएगी। माना जा रहा है कि अक्टूबर-नवम्बर में उनको स्कूटी देने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

ताकि हर कमजोर महिला को मिले सम्मान

- डॉ. आशीष वशिष्ठ, वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार कल्याणकारी योजनाओं के केंद्र में हमेशा मातृ शक्ति रही है। उनके हित में कई योजनाएं चल रही हैं। यहां पर दो योजनाओं की चर्चा करेंगे।

एक - जिस जीवनसाथी के साथ सात फेरे लेते वक्त सात जन्मों तक साथ रहने का वादा किया था, कई बार उसका साथ बीच में ही छूट जाता है। पति के निधन के बाद अक्सर पत्नी को तमाम मुसीबतें घेर लेती हैं। तमाम तरह की परेशानियां सामने आ खड़ी होती हैं। ऐसी ही मुसीबत में साथ देने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार 'निराश्रित महिला पेंशन योजना' (विधवा पेंशन) चलाती है। इस योजना के तहत यूपी सरकार की ओर से 1000 रुपये महीने के हिसाब से विधवा पेंशन दी जाती है। पेंशन की राशि लाभार्थी के बैंक खाते में सीधे भेजी जाती है। यदि तीन महीने की राशि एक साथ जारी की जाती है, तो यह 3000 की किस्त के रूप में खाते में आ जाती है। इस योजना का उद्देश्य पति की मृत्यु के बाद आर्थिक संकट से जूझ रही महिलाओं को नियमित आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है ताकि वे अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा कर सकें और किसी पर पूरी तरह निर्भर न रहें। वर्तमान में 26 लाख से ज्यादा विधवाएं इस योजना के तहत पेंशन पा रही हैं और समाज में सिर उठाकर जीवन यापन कर रही हैं।

विधवा पेंशन के नियम

♦ 18 साल से ज्यादा उम्र की महिला जिनके पति का निधन हो गया हो।

♦ महिला उत्तर प्रदेश की स्थायी निवासी होनी चाहिए।

♦ परिवार की सालाना आय दो लाख रुपये से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

♦ महिला को राज्य या केंद्र सरकार की किसी अन्य योजना से पेंशन न मिल रही हो।

राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि अप्रैल 2026 से निराश्रित महिलाओं की वर्तमान पेंशन राशि 1000 रुपये से बढ़ाकर 1500 रुपये मासिक की जाएगी। इस तरह बीते नौ वर्षों में सामाजिक सुरक्षा की पेंशन राशि में पांच गुने की बढ़ोतरी की गई है। प्रदेश सरकार ने वित्तीय वर्ष 2026-27 में योजना के तहत 380 करोड़ 15 लाख 74 हजार रुपये की धनराशि की व्यवस्था की है। यह धनराशि प्रदेश की निराश्रित एवं विधवा महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सहारा प्रदान करने में सहायक होगी।

दो - गरीब व वंचित वर्ग के परिवार की लड़कियों की शादी सम्मानजनक तरीके से हो और उसके लिए परिवार को परेशान भी न होना पड़े, इसलिए यूपी सरकार ने 2017 में श्मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनाश की शुरुआत की। पिछले नौ वर्षों में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत 5 लाख 20 हजार से अधिक बेटियों का विवाह संपन्न हो चुका है। यह योजना गरीब, अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों के लिये है। विधवा, परित्यक्ता और तलाकशुदा महिलाओं के विवाह की भी इस योजना में व्यवस्था की गई है।

योजना के तहत प्रति जोड़ा कुल एक लाख रुपये का खर्च निर्धारित है। इसमें 60 हजार रुपये कन्या के खाते में दिए जाएंगे। इसके अलावा 15 हजार रुपये की सामग्री वैवाहिक उपहार के रूप में दी जाएगी। जबकि भोजन, पंडाल, फर्नीचर, पेयजल, विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था जैसी व्यवस्थाओं पर 15 हजार रुपये प्रति जोड़ा खर्च किए जाएंगे। पायल-बिछिया से लेकर सीलिंग फैन और बिस्तर तक दिये जाने का प्रावधान है। नवविवाहित जोड़ों को गृहस्थी के लिए जरूरी सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है।

इसमें साड़ी, कपड़े, चांदी की पायल और बिछिया, डिनर सेट, कुकर, कढ़ाही, ट्रॉली बैग, वैनिटी किट, सीलिंग फैन, आयरन प्रेस, कूल केज, कंबल, गद्दा, तकिया और बेडशीट समेत अन्य सामग्री शामिल रहते हैं। इसमें तीन लाख सालाना आय वाले परिवार ही पात्र होंगे। योजना का लाभ उन्हीं परिवारों को मिलेगा जिनकी वार्षिक आय तीन लाख रुपये से अधिक नहीं है। शादी की तारीख पर कन्या की न्यूनतम आयु 18 वर्ष और वर की न्यूनतम आयु 21 वर्ष निर्धारित है। विधवा, परित्यक्ता तथा कानूनी रूप से तलाकशुदा महिलाओं के पुनर्विवाह को भी योजना में शामिल किया गया है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के आवेदकों को जाति प्रमाण पत्र देना होगा। निराश्रित कन्या, विधवा महिला की पुत्री, दिव्यांग अभिभावक की पुत्री तथा स्वयं दिव्यांग कन्या को प्राथमिकता प्रदान की जाएगी।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना जैसे प्रयास समाज के जरूरतमंद परिवारों के लिए वास्तव में सराहनीय हैं। आर्थिक सहायता के साथ सम्मान पूर्वक विवाह की व्यवस्था करना कई परिवारों के लिए बड़ी राहत साबित होता है। ऐसी योजनाएं सामाजिक सुरक्षा और समावेशी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके साथ ही यह योजना नेवविवाहित बेटियों को पूरे सम्मान और आत्मविश्वास के साथ अपने नए जीवन की शुरुआत करने का बेहतरीन अवसर प्रदान कर रही है।

आंकड़ों से पता चलता है कि यह योजना पिछड़े वर्गों, दलितों और अल्पसंख्यकों के लिए विशेष रूप से प्रभावी रही है। अब तक दलित समुदाय को सबसे अधिक लाभ मिला है। डॉ. बी.आर. अंबेडकर के आदर्शों को समर्पित यह योजना ने केवल दलितों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में सहायक है, बल्कि उन्हें गरिमापूर्ण और आत्मसम्मानित जीवन भी प्रदान कर रही है।

सामुहिक विवाह योजना

सामुहिक विवाह योजना के तहत प्रति जोड़ा कुल एक लाख रुपये का खर्च निर्धारित है। इसमें 60 हजार रुपये कन्या के खाते में दिए जाएंगे। इसके अलावा 15 हजार रुपये की सामग्री वैवाहिक उपहार के रूप में दी जाएगी। जबकि भोजन, पंडाल, फर्नीचर, पेयजल, विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था जैसी व्यवस्थाओं पर 15 हजार रुपये प्रति जोड़ा खर्च किए जाएंगे। पायल-बिछिया से लेकर सीलिंग फैन और बिस्तर तक दिये जाने का प्रावधान है।

पौधों की आहट बनी पहचान

"Voice of Plant" वाली मैम की प्रेरक कहानी

प्रकृति उनके लिए केवल काम का क्षेत्र नहीं, बल्कि पहचान, प्रेरणा और जीवन का उद्देश्य है। एक सामान्य परिवार में पली-बढ़ीं सुदीप्ति वाजपेयी बचपन से ही किताबों, अपने विचारों और पौधों की दुनिया के करीब रहीं। अपने ताऊजी को पौधों की देखभाल करते देख प्रकृति से जुड़ा जो सहज लगाव बचपन में अंकुरित हुआ, वही आगे चलकर उनके जीवन की दिशा बन गया। उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि पौधों से उनका यह रिश्ता एक दिन उन्हें एक अलग पहचान देगा। आज लोग उन्हें प्यार से "Voice of Plant वाली मैम" के नाम से जानते हैं। एक ऐसा नाम, जिसमें उनकी यात्रा, उनका जुनून और प्रकृति के प्रति उनका समर्पण, तीनों समाए हैं।

कहते हैं, प्रकृति के बिना हम अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। लेकिन उनके जीवन में प्रकृति का महत्व शायद इससे भी कहीं अधिक है। प्रकृति ने उन्हें सिर्फ काम नहीं दिया, बल्कि उनकी पहचान, उनका नाम और उनके जीवन का उद्देश्य भी दिया। आज लोग उन्हें " Voice of Plant वाली मैम" के नाम से जानते हैं, लेकिन कभी उन्होंने नहीं सोचा था कि पौधों से उनका यह रिश्ता एक दिन उनकी पहचान बन जाएगा।

दसवीं के बाद उन्होंने ग्यारहवीं और बारहवीं मे फिजिक्स, कमेस्ट्री और मैथमैटिक्स (PCM) विषय लिए और इसके बाद फिजिक्स और मैथमैटिक्स से ग्रेजुएशन किया। पढ़ाई के साथ-साथ वे बच्चों को गणित पढ़ाती थीं और कोचिंग भी देती थीं। इसी दौरान उन्होंने यूपीएससी, सीडीएस, एसएससी और कई अन्य सरकारी परीक्षाओं की तैयारी की। सरकारी नौकरी पाने के उनके दो प्रमुख कारण थे पहला, नौकरी की सुरक्षा और दूसरा, उनका एक छोटा-सा सपना था कि अगर कभी सरकारी क्वार्टर मिला तो उसमें अपना एक सुंदर-सा 'किचन गार्डन' जरूर बनाएँगी।

कई परीक्षाओं के अलग-अलग चरण पार करने के बाद उन्हें बैंक में नौकरी मिली और उनकी पहली पोस्टिंग मुंबई में हुई। करीब चार वर्षों तक बैंकिंग क्षेत्र में काम करने के बाद उन्होंने नौकरी छोड़ने का कठिन फैसला लिया क्योंकि वे जीवन को केवल नौकरी और वेतन तक सीमित नहीं रखना चाहती थीं।

विवाह के बाद वे नोएडा आ गईं। उन्होंने बालकनी में बागवानी शुरू की। उन्होंने Gardening की कोई औपचारिक ट्रेनिंग नहीं ली, इसे करते हुए, गलतियाँ करते हुए और अपने अनुभव से सीखा। कुछ समय अमेजन में काम करने के बाद बदलती शिफ्ट के कारण बागवानी (Gardening) के लिए समय निकालना मुश्किल होने लगा। पति के प्रोत्साहन पर उन्होंने घर से फ्रीलांसिंग शुरू की और (BYJU*S) व ग्रेडअप (Gradeup) के लिए Banking Awareness, सामान्य अध्ययन (GK) तार्किक सामग्री (Reasoning content) तथा बच्चों के लिए शिक्षण वीडिया (tutorial videos) बनाए।

इसी बीच बागवानी उनके समय का सबसे बड़ा हिस्सा बन गई। कई बार वे छत में तौलिया सुखाने जातीं और वहीं पौधों की देखभाल करते हुए 3-4 घंटे बीत जाते। घर धीरे-धीरे पौधों से भरने लगा और। धीरे-धीरे लोग पौधों की देखभाल, मिट्टी, खाद और कीटों से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए उनसे पूछने लगे।

उनके पति ने सुझाव दिया कि अपने अनुभव को सोशल मीडिया (social media) के माध्यम से ज्यादा लोगों तक पहुँचाया जाए। अपने गुरुदेव शंकरानंद महाराज के आशीर्वाद से उन्होंने अगस्त 2020 में "वायस ऑफ प्लांट" यूट्यूब चैनल "Voice of Plant" YouTube channel की शुरुआत की।

शुरुआत से उनका उद्देश्य केवल वीडियो या फॉलोवर बढ़ाना नहीं, बल्कि बागवानी को इतना सरल बनाना था कि हर व्यक्ति इसे आसानी से शुरू कर सके। आज वे अपने छत (terrace) पर जैविक बागवानी (Organic Gardening) करती हैं, जहाँ लौकी, कद्दू, करेला, तोरई, टमाटर, शिमला मिर्च जैसी अनेक सब्जियाँ और अमरूद, चीकू, शहतूत, अनार, करौंदा, आम और नींबू जैसे फल उगाती हैं।

आज उनके समूह (community) में लाखों लोग

जुड़े हैं और उनके वीडियो को लगभग 6 करोड़ बार देखा जा चुका है, लेकिन उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि ये आंकड़े नहीं हैं। उन्हें सबसे ज्यादा खुशी तब होती है जब कोई व्यक्ति बताता है कि उसने उनके वीडियो देखकर पहली बार बागवानी शुरू की, बीज से अपना पौधा तैयार किया या अपने किसी पौधे को बचा पाया।

लाखों लोगों ने उनके वीडियो से प्रेरित होकर बागवानी की शुरुआत की है और कई लोगों ने अपने बागवानी अनुभव को आगे बढ़ाकर दूसरों को भी प्रेरित किया है। इस तरह उनका प्रयास केवल पौधे उगाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि एक ऐसे समूह के निर्माण में बदल गया, जहाँ लोग प्रकृति से जुड़ने और दूसरों को उससे जोड़ने का काम कर रहे हैं।

जैविक बागवानी को बढ़ावा देना उनके काम का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। उनका मानना है कि बागवानी के लिए बड़े मैदान की जरूरत नहीं होती एक छोटी छत या घर का कोई कोना भी पर्याप्त है। वे चाहती हैं कि हर व्यक्ति कम से कम एक पौधे से शुरुआत करे और धीरे-धीरे अपने घर में कुछ सब्जियाँ या फल स्वयं उगाने का प्रयास करे। उनका मानना है कि जब हम एक पौधा उगाते हैं, तो सिर्फ एक पौधा नहीं उगता; उसके साथ प्रकृति के प्रति प्रेम, धैर्य, जिम्मेदारी और एक बेहतर भविष्य की उम्मीद भी उगती है।

यही सोच उनके जीवन की सबसे बड़ी पहचान बन गई है। बैंकिंग से लेकर स्वतंत्र लेखक (freelancing) और फिर बागवानी को अपने जीवन का उद्देश्य बनाने तक की उनकी यात्रा यह बताती है कि कभी-कभी जीवन में हमारी सबसे बड़ी पहचान किसी तय योजना से नहीं, बल्कि उस काम से बनती है जिसे हम पूरे मन से करते हैं। आज "वायस ऑफ प्लांट" (Voice of Plant) वाली मैम के रूप में उनकी पहचान केवल एक नाम नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ने और दूसरों को प्रकृति से जोड़ने की एक प्रेरक आवाज बन चुकी है।

स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता

ग्राम किरतपुर, पोस्ट आजमुर, जिला बिजनौर की निशा चौहान ने स्वयं सहायता समूह से जुड़कर न केवल अपने जीवन को नई दिशा दी, बल्कि गांव की अनेक महिलाओं के लिए स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता का मार्ग भी तैयार किया। वे 30 नवंबर 2018 को स्वयं सहायता समूह (SHG) से जुड़ीं और अप्रैल 2019 में मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन और बकरी पालन जैसे लघु उद्यमों की शुरुआत की।

वर्ष 2020-21 में मैनपुरी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने नेतृत्व और स्वरोजगार के क्षेत्र में अपनी भूमिका को और मजबूत किया। वर्ष 2020-22 के दौरान उन्होंने समूह की महिलाओं के कार्य को आगे बढ़ाते हुए मल्टीग्रेन आटा चक्की स्थापित कराई और उसी आटे से पास्ता, मकरोनी, लड्डू, बिस्कुट आदि उत्पाद तैयार करवाए।

वर्ष 2020, 2023 और 2024 में उन्होंने आसपास के गांवों की महिलाओं को जोड़कर विभिन्न प्रकार के अचार तैयार कराने का कार्य आगे बढ़ाया। इसके साथ ही पीली सरसों का शुद्ध तेल, मसाले, बेसन, दलिया तथा काला सेंधा नमक को शुद्ध रूप से धोकर, पीसकर और पैक कर बाजार में बेचने का कार्य भी समूह के माध्यम से किया जा रहा है।

वर्ष 2024-26 में उनका कार्य महिला किसानों को नई-नई कृषि तकनीकों की जानकारी देने, सरकारी योजनाओं के माध्यम से बीज एवं खाद पर मिलने वाली सुविधाओं का लाभ दिलाने तथा गौ-आधारित खेती को बढ़ावा देने तक विस्तृत हुआ। वे अपने विकासखंड के साथ-साथ जिले के अन्य विकासखंडों में जाकर महिलाओं को समूहों से जोड़ती हैं, उन्हें स्वरोजगार एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी देती हैं तथा संबंधित अधिकारियों से आवश्यक मार्गदर्शन भी दिलाती हैं।

वाहन व्यवस्था, युवा ऋण तथा प्रधानमंत्री से जुड़ी स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी महिलाओं तक पहुँचाने के उनके प्रयासों ने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत किया है। निशा चौहान की यात्रा इस बात का प्रमाण है कि एक महिला जब स्वयं आगे बढ़ती है तो उसके साथ पूरा समुदाय आगे बढ़ सकता है। स्वयं सहायता समूह से शुरू हुई उनकी पहल आज ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार, नेतृत्व और सामूहिक आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी बन चुकी है।

साक्षात्कार / बबिता वर्मा

संघर्ष, परिवार और आत्मविश्वास के बीच संतुलन

बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज से Mrs India 2022 तक का सफर तय करने वाली **बबिता वर्मा** का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के कायमगंज में एक साधारण परिवार में हुआ। उनके माता–पिता ने सीमित संसाधनों के बावजूद उन्हें बड़े सपने देखने और पूरा करने के लिए मेहनत करने की प्रेरणा दी। पढ़ाई में इनकी विशेष रुचि थी। वर्ष 1996 में इन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके बाद इंटरमीडिएट और अंग्रेजी साहित्य, अंग्रेजी भाषा तथा सामाजिक विज्ञान विषयों के साथ बी.ए. किया और उसमें भी प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पढ़ाई के साथ अन्य रुचियाँ क्या थीं?

मुझे सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बहुत रुचि थी। शास्त्रीय नृत्य की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए। स्काउट–गाइड से भी जुड़ी रही और टेंट लगाना, रस्सियों की गांठें बांधना तथा कठिन परिस्थितियों में स्वयं और दूसरों की सुरक्षा करना सीखा। मेरी सक्रियता को देखते हुए मुझे गाइड कैप्टन की जिम्मेदारी भी मिली और जिला स्तर पर सम्मान मिला।

'द बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज' का खिताब जीवन में कितना महत्वपूर्ण रहा?

1997–98 में लायंस क्लब द्वारा 'द बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज' प्रतियोगिता आयोजित की गई। शुरुआत में मैं भाग लेने को लेकर बहुत संकोच में थी, लेकिन मेरी शिक्षिका ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। मैंने पूरी मेहनत से तैयारी की। अंतिम चरण में वाद–विवाद प्रतियोगिता हुई, जिसका विषय था – 'नारी की सुंदरता उसका शोषण है या मान–वर्धन?' मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया और इसी के साथ पूरी प्रतियोगिता में भी विजेता बनी। मुझे 'द बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज' चुना गया। इसी दौरान 'मिस कायमगंज' का खिताब भी मिला। यह मेरे आत्मविश्वास की पहली बड़ी उड़ान थी।

जीवन की दिशा कैसे बदली?

बी.ए. में प्रथम आने के बाद मेरी शिक्षिकाएं चाहती थीं कि मैं बी.एड. करूँ और आगे नौकरी करूँ। मैंने अंग्रेजी में एम.ए. की पढ़ाई भी शुरू की। लेकिन मैं पाँच भाई–बहनों में सबसे बड़ी थी और परिवार की परिस्थितियों के बीच वर्ष 2003 में मेरा विवाह मैनपुरी जिले के कुरावली में हो गया। विवाह के बाद मुझे अच्छा परिवार और सहयोगी पति मिले। बच्चे होने के बाद बच्चों की परवरिश मेरी सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गई और मेरे अपने सपने पीछे छूट गए।

आपकी पहचान गृहिणी तो नहीं है?

लंबे समय तक मैंने अपने बारे में सोचना ही छोड़ दिया था। लेकिन सपने कभी पूरी तरह समाप्त नहीं होते। 2021 में मेरे भीतर दबा आत्मविश्वास फिर जागा। मुझे लगा कि परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाने के बाद भी एक महिला अपनी प्रतिभा और पहचान को दोबारा सामने ला सकती है।

'बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज' से 'Mrs India 2022' का सफर कैसे तय हुआ?

यही मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत दूसरा अध्याय है। वर्षों बाद मैंने स्वयं को फिर से अवसर देना शुरू किया। व्यक्तित्व विकास, मंच पर प्रस्तुति और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से मेरा आत्मविश्वास लौटता गया। वर्ष 2022 में मुझे 'Mrs India The Goddess 2022' के खिताब से सम्मानित किया गया। मेरे लिए यह केवल सौंदर्य प्रतियोगिता का खिताब नहीं था, बल्कि उस सपने की वापसी थी जिसे मैंने वर्षों पहले परिवार की जिम्मेदारियों के बीच कहीं पीछे छोड़ दिया था।

सामाजिक क्षेत्र में भी आप सक्रिय रही हैं। इसके बारे में बताइए।

मेरे लिए उपलब्धि तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज तक पहुँचे। मैंने महिला सशक्तीकरण और सामाजिक जागरूकता से जुड़े कार्यों में सक्रिय भागीदारी की। मुझे स्वर्णकार समाज महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष चुना गया। मुझे 'मिसेज इंडिया' सम्मान भी मिला। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत मुझे ब्रांड एंबेसडर की जिम्मेदारी दी गई, जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता का संदेश पहुँचाने का अवसर मिला। मैंने गोसेवा और सामाजिक जागरूकता से जुड़े कार्यक्रमों में भी भाग लिया।

आज की महिलाओं के लिए आपका संदेश क्या है?

मैं हर महिला से यही कहना चाहती हूँ कि परिवार हमारी जिम्मेदारी है, लेकिन स्वयं की पहचान भी महत्वपूर्ण है। उम्र या परिस्थितियां सपनों की राह में अंतिम बाधा नहीं हैं। मैंने 'बेस्ट गर्ल ऑफ कायमगंज' का खिताब किशोरावस्था में पाया था और वर्षों बाद 'Mrs India The Goddess 2022' का सम्मान हासिल किया। मेरे जीवन ने मुझे सिखाया है कि सपनों को थोड़ी देर के लिए रोका जा सकता है, लेकिन यदि विश्वास जीवित रहे तो उन्हें फिर से जिया जा सकता है। ◘

शिवानी : लहरें भी बदल लेती हैं रास्ता

सिकंदराबाद (बुलंदशहर) की रहने वाली कैनोइंग खिलाड़ी शिवानी जब जल क्रीड़ा करते हुए लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ती हैं तो जीत को कोई नहीं रोक पाता है।

कैनोइंग पानी में खेला जाने वाला वह गेम होता है जिसमें नाव में घुटनों के बल बैठकर सिंगल ब्लेड वाले चप्पू से नाव को चलाया जाता है। इसमें नाव को दिशा देने के लिए स्टेयरिंग नहीं होता। चप्पू से ही गति और दिशा को संभालना पड़ता है। नावें भी बेहद पतली, हल्की होती हैं। इसमें घुटनों के बल बैठकर संतुलन बनाए रखना बेहद कठिन होता है। कंधों और पेट की मांसपेशियों पर भी जोर पड़ता है। पर कैनोइंग खिलाड़ी शिवानी यह सब कर पातीं है।

शिवानी से बात करने का अवसर मिला तो उन्होंने अपने खेल से संबंधथित पहलू उजागर किए।

शिवानी का बचपन गरीबी में बीता। पांच भाई बहनों वाले परिवार को पिता के 4000 रूपये ऊंट के मुंह में जीरा वाली कहावत चरितार्थ करता प्रतीत होता। तब इनके मामा ने यह वाटर स्पोर्ट्स सीखने के लिए कहा। शुरू में तो सीखने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। शिवानी ने हार नहीं मानी और सीखकर कई मेडल भी हासिल किए 2015 से अब तक ये कमी गोल्ड, सिल्वर व बोनस जीत चुकी हैं। खेल कोटे से इन्हें सीमा सुरक्षा बल में कांस्टेबल के पद पर नियुक्त किया गया। आजकल सीएसएफएस में हेड कांस्टेबल के पद पर कार्यरत हैं।

सिकंदराबाद के ग्रामीण परिवेश से निकल कर एक ऐसे शरीर थका देने वाले खेल का चुनाव चुनौती से कम नहीं। साथ ही उससे नौकरी भी प्राप्त कर लेना यह दर्शाता है कि यदि इंसान कोई काम लगन और मेहनत से करे तो अनूठी मिसाल मिसाल बन कर ही उभरता है। एक हाथ बंदूक, दूसरे हाथ से पानी में उतारा चप्पू संभाल कर आगे बढ़ती हैं और मेडल जीत कर लाती है। यह उनके अदम्य साहस की अनूठी मिसाल बन जाता है। शिवानी ने साबित कर दिया कि यदि हौसलों में उड़ान हो तो कोई भी चुनौती भारी नहीं। संसाधन की कमी भी रास्ता नहीं रोक सकती। उनका जीता हर मेडल देश की बेटियों को कुछ सिखाकर जाता है।

वह सिर्फ यही नहीं रुकना चाहती हैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपने हुनर की छाप छोड़ना चाहती हैं। शिवानी जैसी बेटी एक प्रेरणा बन कर उभरती है और मिसाल बन कर देश पर छा जाने का दम अपने अंदर रखती है। उनके बुलंद इरादों के बीच लहरें भी अपना रास्ता बदल लेती हैं।

ममता ने 58 की उम्र में उठाया रैकेट जीवन को मिली नई दिशा

मुरादाबाद निवासी ममता रानी की जीवन–यात्रा का सबसे सुंदर पक्ष यही है कि उन्होंने अपनी खुशी को केवल अपने तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने स्वयं को ऊपर उठाया और अब दूसरों को ऊपर उठाने का प्रयास कर रही हैं।19 वर्ष की उम्र में परिवार की जिम्मेदारियों से शुरू हुई यात्रा 58 वर्ष की उम्र में एक नए रूप में सामने आई। एक ऐसा समय, जब शायद कोई व्यक्ति अपने जीवन को समेटने की सोच सकता था, ममता ने उसी समय उसे नए अर्थ में जीना शुरू किया।

कभी-कभी जीवन अपनी गति से चलता रहता है और हमें पता ही नहीं चलता कि कब हमारी अपनी इच्छाएँ, रुचियाँ और सपने पीछे छूट गए। ममता रानी यादव की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। 19 वर्ष की उम्र में विवाह, दो पुत्रों का पालन-पोषण, परिवार की जिम्मेदारियाँ और इसी बीच बढ़ती उम्र के साथ स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ देखते-देखते वे 58 वर्ष की हो गईं। बचपन से ही खेलों में उनकी रुचि थी। वे खेला करती थीं और खेल उनके जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा था। लेकिन विवाह और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच उनकी यह रुचि कहीं पीछे छूट गई। समय बीतता गया। इसी दौरान वे मधुमेह की समस्या से भी जूझने लगीं। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों के बीच एक समय ऐसा भी आया जब उनके सामने यह प्रश्न था -"अब आगे जीवन कैसे जिया जाए? जीवन का उद्देश्य क्या हो?" इसी प्रश्न ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी।

ममता रानी की सबसे बड़ी जीत शायद स्वर्ण पदक नहीं है। उनके शब्दों में, इस यात्रा ने उन्हें फिर से यह समझने का अवसर दिया कि जीवन केवल जिम्मेदारियां निभाने का नाम नहीं है(जीवन को खुशी के साथ जीना और दूसरों के जीवन में भी खुशी बाँटना उतना ही महत्वपूर्ण है।

वर्ष 2022 में 58 वर्ष की उम्र में उन्होंने दोबारा रैकेट उठाया। मुरादाबाद में UP State tournamet 55+ में हुई प्रतियोगिता में उन्होंने फाइनल तक पहुंचकर रजत पदक जीता। वह पदक उनके लिए केवल एक खेल उपलब्धि नहीं था, बल्कि उनके भीतर सो चुकी ऊर्जा और आत्मविश्वास के जागने का संकेत था। इसके बाद उन्होंने खेल को गंभीरता से अपनाने का निर्णय लिया। लगभग एक वर्ष तक उन्होंने कोचिंग ली। इसके बाद तकनीक को बेहतर समझने के लिए YouTube के माध्यम से भी सीखना शुरू किया। अभ्यास बढ़ता गया, आत्मविश्वास बढ़ता गया और हर वर्ष उनके हाथ में कोई न कोई पदक आने लगा।

ममता ने केवल बैडमिंटन का रैकेट नहीं उठाया था, उन्होंने अपने जीवन को फिर से उठाने का निर्णय लिया था। उन्होंने स्वयं को शारीरिक और मानसिक रूप से बेहतर बनाने के लिए नियमित जिम जाना शुरू किया और अपनी फिटनेस पर ध्यान दिया। उम्र और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के बावजूद उन्होंने अपने शरीर को सक्रिय रखा और आधुनिक खेल प्रशिक्षण की तकनीकों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया। इस निरंतर प्रयास का परिणाम वर्ष 2026 में सामने आया, जब आगरा में Veteran National Ranking Category में Women*s Doubles 60+ में उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। राष्ट्रीय स्तर पर मिली यह उपलब्धि उस महिला की कहानी थी, जिसने 58 वर्ष की उम्र में अपनी नई शुरुआत की थी।

ममता रानी की सबसे बड़ी जीत शायद वह स्वर्ण पदक नहीं है। उनके शब्दों में, इस यात्रा ने उन्हें फिर से यह समझने का अवसर दिया कि जीवन केवल जिम्मेदारियां निभाने का नाम नहीं है; जीवन को खुशी के साथ जीना और दूसरों के जीवन में भी खुशी बाँटना उतना ही महत्वपूर्ण है।

वे अब अपने आसपास के बच्चों को निःशुल्क बैडमिंटन प्रशिक्षण देती हैं। उनका मानना है कि जिस खेल ने उन्हें जीवन में नई ऊर्जा दी, उस ऊर्जा को दूसरों तक पहुँचाना भी उनकी जिम्मेदारी है। वे महिलाओं की कार्यक्रमों तथा बच्चों और महिलाओं की खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से भी जुड़ी रहती हैं।

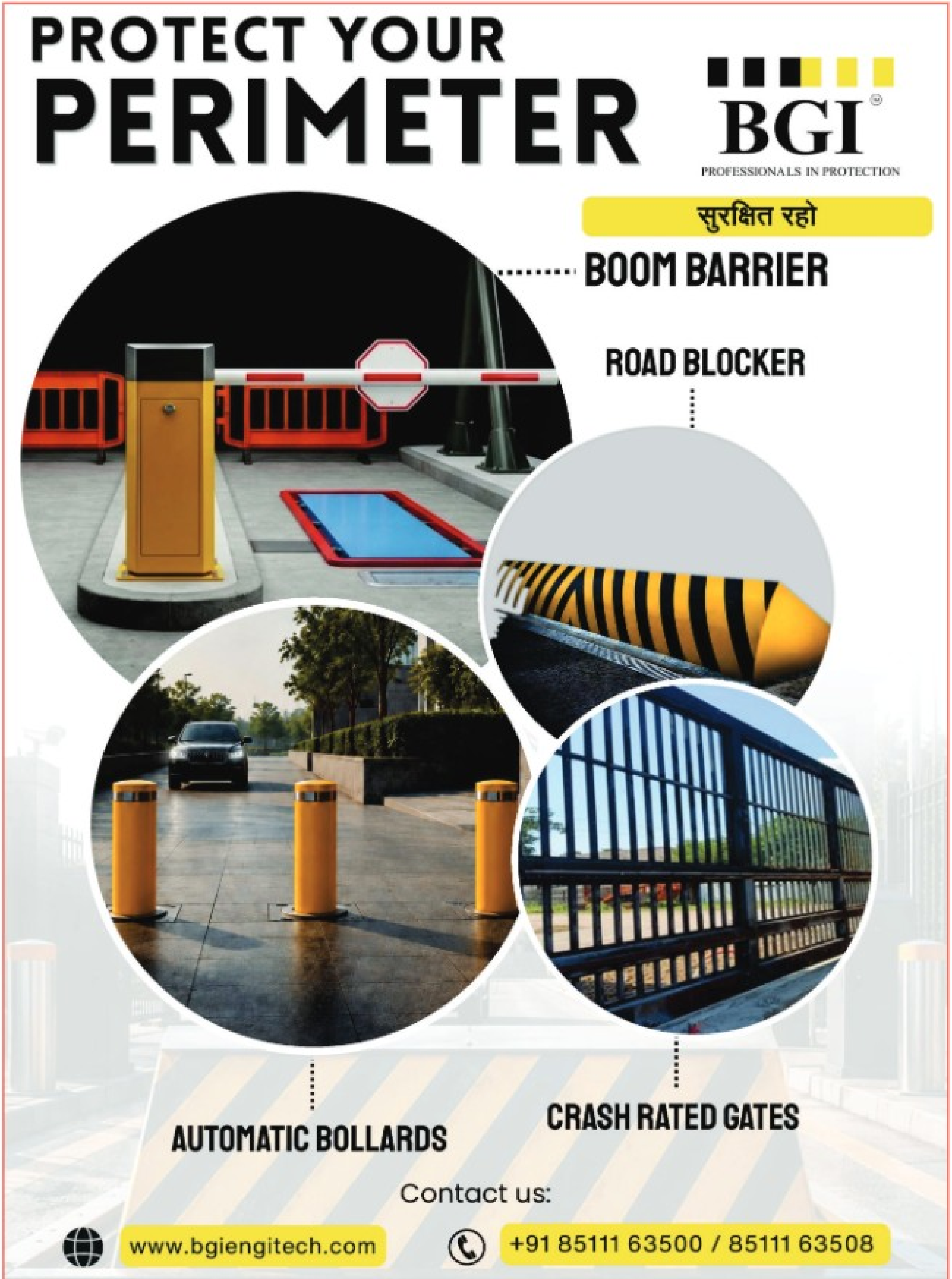
PROTECT YOUR
PERIMETER
BGI
PROFESSIONALS IN PROTECTION
सुरक्षित रहो
BOOM BARRIER
ROAD BLOCKER
AUTOMATIC BOLLARDS
CRASH RATED GATES
Contact us:
www.bgiengitech.com
+91 85111 63500 / 85111 63508

बच्चों के सुरक्षित भविष्य की आवाज

नीति तोमर का सफर शिक्षा, पत्रकारिता, पर्यावरण और सामाजिक सेवा से होते हुए बच्चों को नशे से बचाने की मुहिम तक पहुँचा

इलाहाबाद (अब प्रयागराज) की शैक्षिक पृष्ठभूमि रखने वाली नीति तोमर की पहचान केवल एक शिक्षाविद और पर्यावरणविद तक सीमित नहीं है। पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। उनके लेख विभिन्न समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। तथा वह राष्ट्रीय समाचार–पत्र उदयभूमि की प्रबंध संपादक के रूप में भी कार्य कर चुकी हैं। उनके अनुभव ने उन्हें समाज के मुद्दों को समझने, उन्हें लोगों तक पहुँचाने और जनजागरूकता को प्रभावी माध्यम देने की क्षमता प्रदान की।

समाज में परिवर्तन के लिए हमेशा बड़े मंच की आवश्यकता नहीं होती। कई बार एक संवेदनशील सोच, दृढ़ संकल्प और निरंतर किए जाने वाले छोटे-छोटे प्रयास ही बड़े बदलाव की नींव रखते हैं। नीति तोमर का जीवन इसी विश्वास की प्रेरक मिसाल है। शिक्षा, पत्रकारिता, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सेवा से जुड़ी उनकी यात्रा आज बच्चों और किशोरों को नशे की नई प्रवृत्तियों से बचाने के एक महत्वपूर्ण सामाजिक अभियान तक पहुँच चुकी है।

शैक्षणिक रूप से मजबूत पृष्ठभूमि रखने वाली नीति तोमर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में एम.एससी. तथा पर्यावरण विज्ञान में पीएच. डी. की। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें जल संसाधन संरक्षण, जैव विविधता और प्रकृति संरक्षण जैसे विषयों से लगातार जोड़े रखा। वे इंडियन बॉटनिकल सोसायटी की आजीवन सदस्य भी हैं।

प्रकृति के संरक्षण से लेकर बच्चों के भविष्य की सुरक्षा तक, नीति तोमर की यात्रा एक ही विचार से जुड़ी है- समाज को बेहतर बनाने के लिए केवल चिंता करना पर्याप्त नहीं, उसके लिए निरंतर खड़े होना आवश्यक है। बच्चों को नशे से बचाना केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी है।

नीति तोमर के सामाजिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय आज Mothers Against Vaping (MAV) से जुड़ा है। वे इसकी फाउंडर मेंबर के रूप में बच्चों और किशोरों को वेपिंग तथा निकोटीन की लत से बचाने के लिए जागरूकता अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

Mothers Against Vaping के अभियान को राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण पहचान तब मिली, जब इसके एक कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। कार्यक्रम में बच्चों और युवाओं के बीच बढ़ती वेपिंग की प्रवृत्ति और उसके संभावित सामाजिक प्रभावों पर चर्चा हुई।

नीति तोमर और उनकी टीम के लिए यह केवल एक अभियान की उपलब्धि नहीं है। यह उस विश्वास की पुष्टि है कि यदि सामाजिक सरोकार को निरंतरता, तथ्य और सही दिशा के साथ उठाया जाए, तो उसकी आवाज समाज से निकलकर नीति–निर्माण के मंच तक पहुँच सकती है।

सामाजिक सेवा से उनका जुड़ाव भी लंबे समय से रहा है। वे देवदूत वानर सेना की सक्रिय सदस्य हैं और मानवीय सेवा से जुड़े कार्यों में योगदान देती हैं। उनके सामाजिक सरोकारों का दायरा बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा से लेकर पर्यावरण संरक्षण और मानवीय सेवा तक फैला हुआ है।

नीति तोमर की यात्रा बताती है कि किसी एक क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करना ही सामाजिक योगदान नहीं है। ज्ञान जब संवेदना से जुड़ता है और संवेदना जब संकल्प में बदलती है, तब एक व्यक्ति समाज में वास्तविक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।उनका विश्वास है कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी आने वाली पीढ़ी होती है। यदि बच्चों को सही शिक्षा, सही दिशा और सुरक्षित वातावरण मिले, तो वे न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाएँगे, बल्कि देश के भविष्य को भी नई दिशा देंगे। प्रकृति के संरक्षण से लेकर बच्चों के भविष्य की सुरक्षा तक, नीति तोमर की यात्रा एक ही विचार से जुड़ी है- समाज को बेहतर बनाने के लिए केवल चिंता करना पर्याप्त नहीं, उसके लिए निरंतर खड़े होना आवश्यक है।

बच्चों को नशे से बचाना केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी है।

समाज-सेवा का मार्ग सबसे ऊपर

बिजनौर को अपनी कर्मभूमि बनानी वाली **डॉ. राखी आनंद अग्रवाल** का योगदान अस्पताल की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। समाज में महिलाओं की चुनौतियों को करीब से देखने के बाद उन्होंने सखी वेलफेयर फाउंडेशन की स्थापना की। इसके माध्यम से महिला सशक्तिकरण को अपना व्यापक सामाजिक मिशन बनाया। कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जनजागरण, सिलाई प्रशिक्षण, ब्यूटीशियन कोर्स, सैनिटरी पैड निर्माण, वित्तीय साक्षरता और स्वरोजगार जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित और समर्थ बनाया।

एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी डॉ. राखी आनन्द अग्रवाल ने बचपन से ही शिक्षा, ईमानदारी और संवेदनशीलता के संस्कार पाए। उन्हें सिखाया गया कि यदि जीवन ने आपको कुछ विशेष अवसर दिए हैं, तो उनका उपयोग समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए होना चाहिए। बचपन से ही उनका सपना डॉक्टर बनने का था। यह उनके लिए केवल एक पेशा नहीं, बल्कि समाज की सेवा का माध्यम था। किताबों से उन्होंने ज्ञान पाया, लेकिन जीवन के वास्तविक अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ा। महिलाओं को चुपचाप दर्द, भेदभाव और अन्याय सहते देख उनके भीतर एक संकल्प जन्मा, जो आगे चलकर महिला सशक्तिकरण के आजीवन मिशन में बदल गया। उनकी यात्रा आसान नहीं थी। अपने समय की अनेक महिलाओं की तरह उन्हें भी परिवार और अपने सपनों के बीच संतुलन बनाना पड़ा। कई बार परिस्थितियाँ कठिन थीं, कई बार सेवा का रास्ता व्यक्तिगत सुविधाओं से समझौता मांगता था। लेकिन हर चुनौती ने उन्हें और अधिक दृढ़ बनाया।

चिकित्सा शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने उनके जीवन की दिशा तय कर दी। महानगर में आकर्षक करियर बनाने के बजाय उन्होंने उत्तर प्रदेश के छोटे से शहर नजीबाबाद, बिजनौर को अपनी कर्मभूमि बनाया, जहाँ महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की बेहद आवश्यकता थी। बहुत लोगों ने उनके इस निर्णय पर प्रश्न उठाए। इतने अवसर छोड़कर छोटे शहर में क्यों? सीमित संसाधनों के बीच क्यों? उनका उत्तर हमेशा सरल रहा। अच्छी स्वास्थ्य सेवाएँ केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। डॉक्टर होने का अर्थ वहीं जाना है, जहाँ आपकी सबसे अधिक आवश्यकता हो।

पिछले दो दशकों से अधिक समय में वे केवल एक स्त्री रोग विशेषज्ञ नहीं रहीं। हजारों महिलाएँ उनके पास इलाज के लिए आईं और केवल दवा ही नहीं, बल्कि सम्मान, आत्मविश्वास और उम्मीद लेकर लौटीं। उनके लिए मरीज कभी केवल एक केस नहीं रहे; वे किसी की बेटी, किसी की माँ, किसी की बहन और अनगिनत सपनों का आधार थीं। उन्होंने चिकित्सा को व्यवसाय नहीं, बल्कि सेवा का पवित्र माध्यम माना।

उनकी सामाजिक यात्रा पर्यावरण संरक्षण तक भी पहुँची। मालन नदी की दुर्दशा ने उन्हें विचलित किया और उन्होंने उसकी स्वच्छता के लिए अभियान शुरू किया। नदी में प्रवाहित होने वाले पूजा-पाठ के फूलों को कचरा मानने के बजाय उन्होंने उन्हें पुनर्चक्रित कर पर्यावरण-अनुकूल धूप बनाने की पहल की।

एक महिला के रूप में चिकित्सा, सामाजिक सेवा, जनजीवन और अभिनय जैसे विविध क्षेत्रों में कार्य करते हुए उन्हें कई बार अपनी क्षमता पर उठते प्रश्नों का भी सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने कभी पूर्वाग्रहों को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। चाहे वे बिजनौर की कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (POSH) समिति की अध्यक्ष हों, 50-बेड के अस्पताल की सह-स्वामिनी, राष्ट्रीय समाचार चैनलों की पैनलिस्ट, समाजसेवी या चिकित्सक, उन्होंने हर भूमिका में अपने कार्य से सम्मान अर्जित किया।

उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि वास्तविक शक्ति पद, प्रतिष्ठा या तालियों में नहीं, बल्कि उस साहस में होती है जो किसी का दर्द कम करे, किसी का हाथ थामे और इस दुनिया को पहले से थोड़ा बेहतर बनाकर जाए।

अयोध्या (फैजाबाद) में जन्मीं **रेखा चौरसिया** ने बचपन से ही अपनी लगन, मेहनत और बहुमुखी प्रतिभा के बल पर शिक्षा, खेल, कला, साहित्य, मंच संचालन, समाज सेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। कठिन परिस्थितियों को अपने साहस, धैर्य और प्रतिभा से मात देने वाली रेखा का जीवन संघर्ष, साधना और सफलता की एक प्रेरक मिसाल है। आज साहित्य, मंच, समाज सेवा, कला और नारी शक्ति की ऐसी प्रेरक आवाज हैं, जो अपने लेखन, वाणी और कर्म से समाज में सकारात्मक चेतना की अलख जगा रही हैं।

सृजन और सामाजिक चेतना की प्रेरणा

रेखा चौरसिया की पुस्तक 'नफरत करो मुझसे, मैं औरत हूं' का प्रकाशन प्रयागराज से हुआ। उन्हें 'हिन्द शिरोमणि सम्मान' मिला

सन 1978 में जन्मीं रेखा जी ने छात्र जीवन से ही अपनी प्रतिभा का परिचय देना शुरू कर दिया था। वे कनोसा कॉन्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज, फैजाबाद की छात्रा रहीं और विद्यालय की हेड गर्ल भी चुनी गईं। हॉकी में उन्होंने जनपदीय और मंडलीय स्तर पर अनेक पुरस्कार प्राप्त किए तथा राज्य स्तर तक चयनित होकर अपनी खेल प्रतिभा सिद्ध की। सन 1995 में 10वीं बोर्ड परीक्षा से मात्र 20 दिन पहले उनकी माता श्रीमती सरला देवी चौरसिया का निधन हो गया, परन्तु इस गहरे आघात के बाद भी रेखा जी ने हार नहीं मानी। उन्होंने परीक्षा दी और सर्वोच्च अंक प्राप्त किए, जिसके लिए तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।

कला और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी रेखा जी की उपलब्धियां उल्लेखनीय रही हैं। पोस्टर मेकिंग, स्लोगन राइटिंग, ड्राइंग, मेंहदी, रंगोली, फैंसी ड्रेस तथा अन्य प्रतियोगिताओं में उन्होंने अनेक प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्राप्त किए। वर्ष 1995 में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना का खिताब जीता। इसी वर्ष उन्हें मिस टीनएजर का सम्मान मिला और वर्ष 1997 में वे मिस फैजाबाद की रनर-अप रहीं। शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 1997 की इंटरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर परिवार और समाज का नाम रोशन किया।

लेखन और साहित्य के क्षेत्र में रेखा चौरसिया की पहचान अत्यंत सशक्त रही है। पिछले लगभग 35 वर्षों से वे कविता, लेख और समसामयिक विषयों पर निरंतर लेखन करती रही हैं। उनकी पुस्तक "नफरत करो मुझसे मैं औरत हूं" का प्रकाशन प्रयागराज से हुआ, जिसका विमोचन न्यायिक और शैक्षणिक जगत की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। नारी सशक्तिकरण और देशभक्ति पर उनके लेखन को अनेक मंचों पर सराहा गया। जयपुर से उन्हें "हिन्द शिरोमणि सम्मान", मिर्जापुर की सांसद श्रीमती अनुप्रिया पटेल जी द्वारा "मातृ शक्ति वंदन पुरस्कार" तथा लखनऊ के हिंदी संस्थान के निराला सभागार में "भारत भाग्य विधाता सम्मान" से सम्मानित किया गया।

मंच संचालन के क्षेत्र में भी रेखा जी ने विशेष पहचान बनाई। दिल्ली के बाबा साहब भीमराव अंबेडकर भवन में उन्होंने 8.30 घंटे का निरंतर मंच संचालन कर रिकॉर्ड बनाया और वरिष्ठ राजनीतिक हस्तियों द्वारा "कबीर कोहिनूर सम्मान" से सम्मानित हुईं। दिल्ली के एडवोकेट्स कॉन्फ्रेंस अहफ इंडिया के सत्र का मंच संचालन भी उन्होंने NDMC के विशेष प्रांगण में किया, जिसका सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर हुआ। इसके अतिरिक्त उन्होंने रेडियो इंडिया 50+ पर "RJ रेखा" के रूप में "इन्द्रधनुषी रेखा" नाम से कई कार्यक्रमों का प्रसारण किया। उन्होंने अपनी प्रभावशाली वाणी, सकारात्मक सोच और सामाजिक दृष्टिकोण को श्रोताओं तक पहुंचाया। स्वरचित गीत, 'अयोध्या मंगल गान' यू ट्यूब पर लगभग 9K व्यूअर्स हैं, देश और विदेश में एक अलग ही पहचान देने में सहायक हुआ। अपने मानव जिजीविषा में नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि रखने के लिए तत्पर रहना ही जीवन को सार्थकता प्रदान करना ही आपका उद्देश्य रहा जिससे आपके व्यक्तित्व को सभी लोगों ने सराहा।

रेखा जी अपनी हर सफलता का श्रेय अपने पिताजी स्वर्गीय श्री लाल जी प्रसाद चौरसिया को देती हैं। उनका विश्वास है कि एक स्त्री यदि अपनी ऊर्जा का सही प्रयोग करे, निरंतर सीखती रहे और अपने प्रयासों से आगे बढ़ती रहे, तो वह अपनी सफलता का इतिहास स्वयं लिख सकती है।विवाह के 27 वर्षों के पूर्ण होते साथ ही एलएलबी की डिग्री प्राप्त करने वाली रेखा जी आर्या पब्लिक स्कूल, प्रयागराज की प्रिंसिपल भी रह चुकी हैं।निजी जीवन में असहाय, गरीब बच्चों की सहायता, वस्त्र और भोजन वितरण तथा लावारिस पशुओं की सेवा उनके प्रिय कार्यों में शामिल हैं।

नेतृत्व और विकास का अनोखा संगम

अटारी माल गांव का मिनी सचिवालय सुविधाओं और व्यवस्थित प्रणाली के कारण किसी कारपोरेट कार्यालय जैसा लगता है।

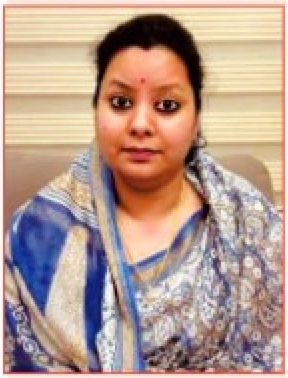

सीतापुर की बेटी और अटारी (माल, लखनऊ) की बहू के रूप में **संयोगिता सिंह चौहान** ने दोनों परिवारों की परंपराओं को अपने कर्म से जोड़ने का प्रयास किया है। ग्रामीणों के बीच उनकी लोकप्रियता और उनके प्रति सम्मान इस बात का प्रमाण है कि जब शिक्षा, संस्कार, परिश्रम और नेतृत्व एक साथ आते हैं, तो एक महिला केवल अपना जीवन नहीं बदलती, बल्कि पूरे समुदाय की दिशा बदलने की क्षमता रखती है।उनका प्रयास रहा है कि महिलाओं को केवल सहायता का लाभार्थी न बनाया जाए। बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाए।

सीतापुर की धरती पर प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने वाली संयोगिता सिंह चौहान की कहानी उस भारतीय नारी की कहानी है, जिसमें सौम्यता के साथ साहस, संस्कारों के साथ नेतृत्व और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ समाज के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई देती है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनकी उस मजबूत नींव को समझना आवश्यक है, जिसने उन्हें समाजसेवा और नेतृत्व के क्षेत्र में आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया।

तेरह जनवरी 1989 को जन्मी संयोगिता सिंह चौहान को बचपन से ही अच्छे संस्कार और शिक्षा मिली। उनके पिता संजय सिंह एक सम्मानित जमींदार रहे हैं, जबकि माता नीलम सिंह एक आदर्श गृहिणी हैं। उनके पारिवारिक संबंध हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी बाबू के. डी. सिंह से भी रहे हैं। विधि के क्षेत्र में अग्रणी रहे पुरखों की परंपरा और परिवार से मिले संस्कारों ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बीबीए और एमबीए की डिग्री हासिल की। विवाह के बाद वे लखनऊ जनपद के ग्राम अटारी, माल में आईं। लेकिन उन्होंने ससुराल को केवल अपना घर नहीं माना, बल्कि वहां की सामाजिक और सार्वजनिक जिम्मेदारियों को भी पूरे मन से अपनाया। आज वे ग्राम पंचायत अटारी की युवा ग्राम प्रधान होने के साथ-साथ प्रधान संघ, माल की अध्यक्ष भी हैं।

संयोगिता सिंह चौहान की सामाजिक सक्रियता केवल ग्राम प्रधानी तक सीमित नहीं रही। वे रोजगार भारती, जो सेवा भारती से संबद्ध है, की अवध प्रांत की उपाध्यक्ष रह चुकी हैं। इसके साथ ही वैभवश्री एवं स्वावलंबन अवध प्रांत टोली की कार्यकारिणी सदस्य और प्रकृति भारती टोली की सदस्य के रूप में भी उन्होंने अपनी भूमिका निभाई है।

राजनीतिक और सामाजिक विरासत को संयोगिता सिंह चौहान ने केवल संभाला ही नहीं, बल्कि उसे विकास की नई दिशा देने का प्रयास किया। ग्राम प्रधान के रूप में अटारी में हुए विकास कार्यों ने उन्हें अलग पहचान दी है। ग्राम पंचायत का मिनी सचिवालय, प्राथमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी, गौशाला और अमृत सरोवर जैसे कार्यों की चर्चा पूरे जनपद में होती है। अटारी का मिनी सचिवालय आधुनिक सुविधाओं और व्यवस्थित कार्यप्रणाली के कारण किसी कॉरपोरेट कार्यालय जैसा दिखाई देता है।

ग्राम प्रधान के रूप में संयोगिता सिंह चौहान ने विकास को केवल सड़क, भवन और बुनियादी सुविधाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि ग्रामवासियों के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को भी अपनी प्राथमिकता बनाया। उनका विशेष प्रयास रहा कि गांव की कोई भी महिला बेरोजगार न रहे और प्रत्येक ग्रामवासी को सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का पूरा लाभ मिल सके। इसके लिए उन्होंने लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया। महिला स्वावलंबन को उन्होंने ग्राम विकास का महत्वपूर्ण आधार माना। उनका प्रयास रहा कि महिलाओं को केवल सहायता का लाभार्थी न बनाया जाए, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाए।

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम मानते हुए उन्होंने बालिकाओं के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था भी कराई। उनका उद्देश्य है कि गांव की बेटियों को पढ़ने के लिए बेहतर वातावरण और संसाधन मिलें, वे अपने सपनों को पहचानें और शिक्षा के माध्यम से अपने भविष्य का निर्माण कर सकें।

उनकी विकास-दृष्टि का मूल मंत्र मानो यही है-"हर हाथ को काम और हर बेटी को शिक्षा।" वे चाहती हैं कि गांव का कोई परिवार केवल जानकारी या अवसर के अभाव में सरकारी योजनाओं से वंचित न रहे और कोई बालिका संसाधनों की कमी के कारण अपनी पढ़ाई और सपनों को बीच में न छोड़े।

पोषण वाटिका से बदली जिंदगी

सीतापुर के उमारपुर गांव की रहने वाली सरिता यादव की कहानी यही सिखाती है कि गरीबी हमेशा रास्ते बंद नहीं करती। कभी-कभी वह इंसान को नए रास्ते खोजने के लिए प्रेरित करती है। जरूरत है तो केवल सीखने की इच्छा, मेहनत करने का साहस और उपलब्ध संसाधनों को अवसर में बदलने की सोच की।

एक छोटी-सी पोषण वाटिका से शुरू हुई सरिता की यात्रा आज अनेक ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और उम्मीद की हरियाली बन चुकी है। उन्होंने मशरूम पाउडर, मशरूम का अचार और श्रीअन्न से बने खाद्य उत्पाद तैयार करने शुरू किए। धीरे-धीरे उनकी छोटी-सी पहल ग्रामीण उद्यमिता का रूप लेने लगी।

सीतापुर के मछरेहटा ब्लॉक के उमरापुर गांव की सरिता यादव की जिंदगी की शुरुआत किसी असाधारण कहानी की तरह नहीं हुई थी। एक साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में पली-बढ़ी सरिता ने बचपन से ही अभावों को बहुत करीब से देखा था। घर की जरूरतें सीमित थीं और साधन उससे भी कम। फिर शादी हुई और सरिता अपने ससुराल आ गईं। उन्हें उम्मीद थी कि जीवन धीरे-धीरे अपनी राह बना लेगा, लेकिन यहां भी हालात आसान नहीं थे। परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि कई बार घर में खाने-पीने की जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल हो जाता था।

सरिता के सामने सबसे बड़ा सवाल था कि आखिर ऐसा क्या किया जाए जिससे घर की हालत सुधरे। न तो उनके पास इतना पैसा था कि कोई छोटा कारोबार शुरू कर सकें और न ही बाहर जाकर नौकरी करने की परिस्थितियां थीं। लेकिन सरिता के भीतर कुछ नया सीखने का जज्बा था और अपने परिवार के लिए कुछ करने की इच्छा।

इसी तलाश में उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके-2), कटिया, सीतापुर से प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला। उन्हें नहीं पता था कि यह कोर्स उनकी जिंदगी बदलने वाला था। खेती के नए तौर-तरीकों, पोषण वाटिका, जैविक खाद, मशरूम उत्पादन और श्रीअन्न से जुड़े प्रयोगों के बारे में सीखते हुए सरिता को पहली बार महसूस हुआ कि जिस जमीन को वे अब तक केवल खाली जगह समझती थीं, वही उनके परिवार की खुशहाली का आधार बन सकती है।

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद उन्होंने किसी बड़े निवेश का इंतजार नहीं किया। घर के आसपास पड़ी खाली जमीन को ही अपनी पहली पूंजी बनाया। थोड़ी-सी जगह में उन्होंने लौकी, भिंडी, तोरई और दूसरी मौसमी सब्जियां उगानी शुरू कर दीं।

धीरे-धीरे घर में सब्जियां आने लगीं। बाजार से सब्जियां खरीदने पर होने वाला खर्च कम हुआ और परिवार को ताजी तथा पौष्टिक सब्जियां मिलने लगीं।

कुछ अतिरिक्त उपज बेचने पर थोड़ी आमदनी भी होने लगी। जिस घर में कभी भोजन की जरूरतों को पूरा करना चुनौती था, वहां अब घर की जमीन ही परिवार के लिए भोजन और आय दोनों का साधन बनने लगी।

सरिता यहीं नहीं रुकीं। उन्होंने जैविक और प्राकृतिक खेती के तरीकों को अपनाया। गोबर की खाद, कंपोस्ट, बीजामृत और जीवामृत जैसे विकल्पों का इस्तेमाल किया। मशरूम उत्पादन से निकलने वाले अपशिष्ट से कंपोस्ट तैयार कर उन्होंने खेती की लागत घटाने और संसाधनों का बेहतर उपयोग करने का रास्ता भी खोज लिया। उन्होंने अपनी सफलता को अपने तक सीमित नहीं रखा। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को उन्होंने पोषण वाटिका, मशरूम उत्पादन और श्रीअन्न आधारित गतिविधियों के बारे में प्रशिक्षण देना शुरू किया। आज वे 1000 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित कर चुकी हैं। कभी अपने परिवार के लिए दो वक्त का भोजन जुटाने की चिंता से जूझने वाली सरिता आज दूसरी ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की राह दिखा रही हैं। उनके लिए खाली पड़ी जमीन केवल मिट्टी का एक टुकड़ा नहीं थी; वह संभावनाओं की जमीन थी।

एक कैंसर सर्वाइवर की अनूठी सेवा

शाहजहांपुर जिले के ग्राम करनपुर की रहने वाली **शिखा सिंह** की कहानी संघर्ष, साहस और सेवा की ऐसी मिसाल है, जो यह विश्वास जगाती है कि कठिन परिस्थितियां इंसान को तोड़ने के बजाय उसे और मजबूत बना सकती हैं। शिक्षिका, कैंसर सर्वाइवर, सामाजिक कार्यकर्ता और महिला स्वास्थ्य एवं जनजागरूकता कार्यकर्ता के रूप में शिखा आज अनेक लोगों के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं।

उनका जीवन-मंत्र है – "मुश्किल वक्त में इंसान या तो टूटता है या निखरता है किंतु मैंने टूटने के बजाय निखरना ज्यादा उचित समझा।"

एक सितंबर 1994 को जन्मीं शिखा का पालन-पोषण एक साधारण निम्न-मध्यमवर्गीय ग्रामीण परिवार में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के विद्यालय से हुई। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और एम.एड. (मास्टर ऑफ एजुकेशन) तथा एम.एससी. (रसायन विज्ञान) की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ने के साथ उन्होंने सामाजिक सेवा, महिला स्वास्थ्य, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, मेडिकल कैंप और पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

वर्ष 2017 में शिखा के जीवन में एक बड़ा मोड़ आया। उनके पिता का निधन हो गया। उस समय वह पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर नौकरी की तैयारी कर रही थीं। परिवार में उनकी दो छोटी बहनें और एक छोटा भाई था। पिता के निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारियां उनके कंधों पर आ गईं। उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ प्राइवेट शिक्षण कार्य शुरू किया और परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए जीवन को आगे बढ़ाया।

लेकिन जीवन की असली परीक्षा अभी बाकी थी। दिसंबर 2022 में, मात्र 28 वर्ष की उम्र में, उन्हें कैंसर होने की जानकारी मिली। जनवरी 2023 में उपचार के लिए उन्हें मुंबई जाना पड़ा और परिस्थितियों के कारण लगभग दस महीने वहां रहना पड़ा। यह समय उनके लिए भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण था। कई बार आत्मविश्वास और साहस भी डगमगाया, लेकिन उन्होंने हार मानने के बजाय अपने भीतर की शक्ति को फिर से जगाया।

वर्ष 2023 के अंत तक उनका उपचार पूरा हुआ और वह घर वापस लौटीं। इस कठिन दौर ने उनके व्यक्तित्व को भीतर से बदल दिया। उन्होंने महसूस किया कि परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, मनुष्य के भीतर उनसे लड़ने की शक्ति अवश्य होती है।

मुंबई में अपने उपचार के दौरान शिखा ने कैंसर से जूझ रहे अन्य मरीजों और उनके परिवारों की मदद करना शुरू किया। उत्तर प्रदेश से मुंबई आए कैंसर मरीजों को उपचार और आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने में उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग किया। टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं और सेवा संगठनों के कार्यक्रमों में उन्होंने अपने अनुभव साझा किए और कैंसर मरीजों के बीच आशा, साहस और सकारात्मकता का संदेश पहुंचाया।

वह कैंसर मरीजों और उनके परिवारों को उचित अस्पताल एवं उपचार केंद्र की जानकारी देने, उपचार शुरू कराने में सहयोग करने, आवश्यक प्रक्रियाओं को समझाने, सरकारी सहायता की जानकारी देने और आर्थिक सहायता के उचित माध्यमों से जोड़ने का प्रयास करती हैं।

उनका मानना है कि जिस पीड़ा से वह स्वयं गुजरी हैं, उसे दूसरों के लिए राह आसान बनाने की शक्ति में बदलना ही उनकी सेवा का उद्देश्य है।

शिखा सिंह की यात्रा केवल कैंसर से जीत की कहानी नहीं, बल्कि यह संदेश है कि अपने संघर्ष को यदि सेवा और सकारात्मकता में बदल दिया जाए, तो वही संघर्ष किसी और के जीवन में उम्मीद की रोशनी बन सकता है।

अपने शब्दों से दिया समाज को स्वर

लखनऊ निवासी शिल्पी सेन नारीवाद को पश्चिमी अवधारणा नहीं मानतीं। उनका मानना है कि नारीवाद की सबसे अधिक पोषक भारतीय संस्कृति और विचारधारा है। प्राचीन भारत की विदुषियां स्वतंत्र निर्णय लेती थीं और उनका स्वतंत्र व्यक्तित्व था। इसी दृष्टि से उन्होंने सीता तथा रामायण के स्त्री पात्रों पर व्याख्यान दिए हैं और महाराणा प्रताप की मां रानी जयवंता बाई पर तथ्यपरक लेख लिखकर बताया कि किस प्रकार उन्होंने महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को गढ़ा। संस्कृति और राष्ट्रवाद पर भी शिल्पी सेन ने लगातार काम किया है। अयोध्या को 2005 के बाद से लगातार कवर करते हुए उन्होंने रामकथा और रामायण के पात्रों पर विभिन्न मंचों पर व्याख्यान दिए।

कुछ यात्राएँ केवल करियर नहीं बनातीं, वे अपने पीछे एक विचार छोड़ जाती हैं। शिल्पी सेन की पत्रकारिता की यात्रा भी ऐसी ही है, जहाँ दो दशक से अधिक की सक्रिय पत्रकारिता केवल खबरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति, सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों को निरंतर अपनी आवाज़ देती रही।

शिल्पी सेन का जन्म कोलकाता में हुआ, लेकिन परिवार के लखनऊ में पीढ़ियों से बसे होने के कारण उनकी शिक्षा लखनऊ में हुई। मातृभाषा बांग्ला होने और अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ाई के बावजूद उन्होंने हिंदी में ही काम शुरू किया। वे मानती हैं कि भारत अपनी विविधता के साथ ही एकता के लिए जाना जाता है। इसलिए बांग्ला मातृभाषा है तो हिंदी को वे अपनी मातृभूमि की भाषा होने की वजह से 'दूसरी मातृभाषा' मानती हैं।

शिल्पी सेन का टेलीविजन सफर लखनऊ दूरदर्शन में बच्चों के कार्यक्रम से शुरू हुआ। पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने एंकरिंग शुरू कर दी थी। हाईस्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक और परास्नातक परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के कारण परिवार चाहता था कि वे प्रशासनिक सेवा में जाएँ, लेकिन उन्होंने पत्रकारिता को अपना कैरियर बनाया। लखनऊ विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री हासिल करने के बाद वर्ष 2001 में हिंदुस्तान समाचार पत्र में ट्रेनी कॉपी एडिटर के तौर पर जुड़ीं। इसके बाद सहारा समय न्यूज चैनल में रिपोर्टर के रूप में पहचान बनी। उन्होंने इंडिया टुडे ग्रुप के आजतक, गुड न्यूज टुडे और यूपी तक में कार्य किया। महाकुंभ 2025 से पहले नेटवर्क 18 डिजिटल के 'महाकुंभ चैनल' से जुड़कर उन्होंने महाकुंभ को कवर किया। वर्तमान समय में उन्होंने डिजिटल मीडिया की ओर भी रुख किया और 'द फेडरल न्यूज' में उत्तर प्रदेश संपादक के तौर पर कार्य किया।

करीब 24 वर्षों से सक्रिय पत्रकारिता कर रहीं शिल्पी सेन की सबसे बड़ी ताक़त ग्राउंड रिपोर्टिंग है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में से 65 जिलों में राजनीतिक, सामाजिक, चुनाव और बड़े घटनाक्रमों की रिपोर्टिंग की है। वर्ष 2012-2014 में सहारा समय के महिला चैट शो 'वामा वीथिका' में एंकरिंग की, जिसमें महिलाओं की सुरक्षा, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता जैसे मुद्दों पर चर्चा होती थी।

जेंडर इश्यूज और राष्ट्रवाद उनकी रुचि के प्रमुख क्षेत्र हैं। उन्हें UNFPA समर्थित लाडली मीडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। उनकी फीचर स्टोरी में मलिहाबाद की ग्रामीण महिलाओं की कंप्यूटर सीखने में रुचि और 'डिजिटल इंडिया' की कामयाबी को बताया गया था। राष्ट्रीय महिला आयोग के जागरूकता अभियानों में वे रिसोर्स पर्सन रही हैं और उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग द्वारा भी सम्मानित हुई हैं।

संस्कृति और राष्ट्रवाद पर भी शिल्पी सेन ने लगातार काम किया है। अयोध्या को 2005 के बाद से लगातार कवर करते हुए उन्होंने रामकथा और रामायण के पात्रों पर विभिन्न मंचों पर व्याख्यान दिए। अयोध्या में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय 'सीता राम विवाह संवाद' तथा प्रयागराज के 'कुंभ कॉन्क्लेव' में वे वक्ता रहीं। उनका मानना है कि धर्म और आध्यात्म सुशासन में बाधक नहीं, बल्कि सुशासन के पूरक हैं।

अपनी पत्रकारिता के लिए वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल से चार बार सम्मानित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त राज्य महिला आयोग का उत्कृष्ट पत्रकारिता पुरस्कार, हिंदी पत्रकारिता पुरस्कार, पी. डी. टंडन अवार्ड फॉर जर्नलिज्म, UN लाडली मीडिया अवार्ड फॉर जेंडर सेंसिटिविटी और राष्ट्रीय एकता मिशन पुरस्कार सहित कई सम्मान उन्हें प्राप्त हुए हैं।

सिपाही बनी 'स्कूल वाली दीदी' बदली बच्चों की तकदीर

वर्दी का रिश्ता आमतौर पर कानून, अनुशासन और सुरक्षा से जोड़ा जाता है, लेकिन रामपुर के खजुरिया थाने में तैनात महिला आरक्षी **अमृता भूषण** ने खाकी का एक ऐसा मानवीय चेहरा सामने रखा है, जिसने ग्रामीणों के बीच पुलिस की छवि को एक नई पहचान दी है। कोई उन्हें महिला आरक्षी कहता है तो कोई 'स्कूल वाली दीदी'। अमृता ने शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल तक पहुंचाने को अपने जीवन का एक मिशन बना लिया है।

वर्ष 2022 से खजुरिया थाने में तैनात अमृता भूषण ने अगस्त 2025 में मिशन शक्ति अभियान के तहत गांव मंसूरपुर की चौपाल से अपनी पहल शुरू की।

सिपाही अमृता भूषण का उद्देश्य साफ है। ऐसा कोई बच्चा न रहे जो किसी न किसी वजह से स्कूल जाने से वंचित हो। शुरुआत में उन्होंने तीन बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाया। इसके बाद आठ और बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा। गांव अहरों में आधार कार्ड न होने के कारण छह बच्चों का दाखिला अटका था। अमृता ने समस्या को बाधा मानने के बजाय उसका समाधान तलाशा और जरूरत पड़ने पर शपथपत्र बनवाकर इन बच्चों का भी विद्यालय में प्रवेश सुनिश्चित कराया।

अमृता का मानना है कि किसी बच्चे के हाथ में किताब होना केवल उसके भविष्य को नहीं बदलता, बल्कि पूरे परिवार की दिशा बदल सकता है। विशेष रूप से बेटियों की शिक्षा को वह सशक्तिकरण का सबसे मजबूत आधार मानती हैं। इसी सोच के साथ वह थाना क्षेत्र के गांवों में ऐसे बच्चों की पहचान कर रही हैं, जो आर्थिक, सामाजिक या दस्तावेजी कारणों से शिक्षा से दूर हैं।

शिक्षा के साथ अमृता ने जरूरतमंद महिलाओं की समस्याओं को भी समझा। उन्होंने तीन महिलाओं की वृद्धावस्था और विधवा पेंशन शुरू कराने में मदद की। उनका प्रयास केवल सरकारी योजनाओं की जानकारी देने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पात्र लोगों को योजनाओं का लाभ दिलाने तक पहुंचा।

मेरठ की रहने वाली अमृता ने बीएड की शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 2021 में पुलिस सेवा में आने के बाद उन्होंने वर्दी को केवल नौकरी नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखा। पुलिस की ड्यूटी के साथ सामाजिक सरोकारों के लिए समय निकालना उनके लिए आसान नहीं है, लेकिन बच्चों की शिक्षा को लेकर उनका उत्साह उन्हें लगातार आगे बढ़ाता है।अब तक 17 बच्चों को स्कूल पहुंचाने वाली अमृता का लक्ष्य संख्या तक सीमित नहीं है। वह चाहती हैं कि उनके थाना क्षेत्र का हर बच्चा विद्यालय जाए और कोई भी बच्चा परिस्थितियों के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। ग्रामीणों ने उन्हें प्यार से 'स्कूल वाली दीदी' नाम दिया है। पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार सिंह भी उनके प्रयासों को मिशन शक्ति का अनुकरणीय उदाहरण मानते हैं। अमृता की कहानी यह बताती है कि वर्दी केवल कानून लागू करने की शक्ति नहीं देती, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों के जीवन में बदलाव लाने का अवसर भी देती है। उनके लिए पुलिस की ड्यूटी थाने की चारदीवारी से आगे बढ़कर गांव की चौपाल और बच्चों के स्कूल तक पहुंच चुकी है।

'ममता के आंचल' में थिरका चंडोल नृत्य

संभल की गुन्नौर निवासी **ममता राजपूत** का प्रयास किसी एक नृत्य को मंच दिलाने भर तक सीमित नहीं है। यह उस सांस्कृतिक विरासत को बचाने की कोशिश है, जिसकी जड़ें गांवों की मिट्टी, लोकविश्वास और पारंपरिक जीवनशैली में गहरी हैं। चंडोल नृत्य का फिर से मंचों तक पहुंचना इस बात का प्रमाण है कि यदि किसी लोककला को समर्पित प्रयास, प्रशिक्षण और मंच मिले तो वह आधुनिक दौर में भी अपनी पहचान बना सकती है। ममता और उनकी संस्था ने जिस कला को विलुप्ति की ओर बढ़ते देखा था, उसे आज नई पीढ़ी के कदमों के साथ आगे बढ़ाने का काम शुरू कर दिया है। धीरे-धीरे चंडोल नृत्य ने स्थानीय सीमाओं से बाहर निकलकर दिल्ली, लखनऊ, प्रयागराज, मुरादाबाद सहित कई शहरों के मंचों तक अपनी जगह बनाई।

लोककलाएं केवल मनोरंजन का साधन नहीं होतीं, बल्कि वे किसी समाज की स्मृतियों, परंपराओं और सांस्कृतिक पहचान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती हैं। लेकिन बदलते समय के साथ अनेक लोककलाएं धीरे-धीरे मंच और समाज दोनों से दूर होती जा रही हैं। संभल की प्राचीन चंडोल नृत्य कला भी कभी इसी संकट से गुजर रही थी। ऐसे समय में ममता राजपूत और उड़ान आर्टिस्ट ग्रुप ने इस लोकनृत्य को नई 'उड़ान' देने का प्रयास शुरू किया।

गुन्नौर की रहने वाली ममता राजपूत उड़ान आर्टिस्ट ग्रुप में लोक कला संयोजक के रूप में सक्रिय हैं। संस्था का उद्देश्य प्रदेश के कलाकारों को मंच उपलब्ध कराने के साथ-साथ विलुप्त होती लोककलाओं, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य पारंपरिक विधाओं का संरक्षण करना है।

ममता बताती हैं कि संभल की चंडोल नृत्य परंपरा लगभग विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गई थी। यह नृत्य मुख्य रूप से शुभ विवाह समारोहों से जुड़ी प्राचीन लोक परंपरा रही है। समय के साथ आधुनिक मनोरंजन के साधनों के बढ़ते प्रभाव के कारण नई पीढ़ी इस कला से दूर होती गई। ऐसे में इसे केवल यादों में संरक्षित करने के बजाय मंच पर वापस लाने का निर्णय लिया गया।

उड़ान आर्टिस्ट ग्रुप ने चंडोल नृत्य को संस्कृति विभाग के लोक एवं जनजातीय कला अनुभाग में पंजीकृत कराने की दिशा में काम किया। इसके बाद विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों में इस लोकनृत्य का मंचन शुरू हुआ। धीरे-धीरे चंडोल नृत्य ने स्थानीय सीमाओं से बाहर निकलकर दिल्ली, लखनऊ, प्रयागराज, मुरादाबाद सहित कई शहरों के मंचों तक अपनी जगह बनाई।

इस प्रयास का एक महत्वपूर्ण पक्ष नई पीढ़ी को इससे जोड़ना है। बबराला क्षेत्र में बालिकाओं और युवतियों को चंडोल नृत्य का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ममता का मानना है कि किसी लोककला को बचाने का सबसे प्रभावी तरीका उसे अगली पीढ़ी के हाथों में सौंपना है। जब युवा कलाकार इसे सीखेंगे, मंच पर प्रस्तुत करेंगे और इसके महत्व को समझेंगे, तभी यह परंपरा जीवित रह पाएगी।

उड़ान आर्टिस्ट ग्रुप का दायरा भी अब काफी विस्तृत हो चुका है। ममता के अनुसार प्रदेश के विभिन्न जिलों के 500 कलाकार संस्था से जुड़े हैं। ये कलाकार अपने-अपने क्षेत्रों की विलुप्त होती लोककलाओं और सांस्कृतिक विधाओं को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

सफलता की प्रेरक कहानी

अमरोहा निवासी मिथिलेश सैनी की कहानी बताती है कि आत्मनिर्भरता के लिए हमेशा बड़े संसाधनों की जरूरत नहीं होती। कभी-कभी एक छोटा-सा विचार, परिवार का सहयोग और समाज की बातों की परवाह न करने का साहस जीवन की दिशा बदल देता है।

आज गांव की गलियों में बाइक पर सिलिंडर लेकर निकलती मिथिलेश केवल गैस की डिलीवरी नहीं करतीं, बल्कि उन महिलाओं के लिए भी संदेश लेकर चलती हैं जो परिस्थितियों के कारण अपने सपनों को रोक देती हैं। रास्ते बंद नहीं होते, उन्हें तलाशने का साहस होना चाहिए।

करीब दस साल पहले तक मिथिलेश सैनी के सामने परिवार के भरण-पोषण की चिंता थी। पति मजदूरी करते थे और चार बच्चों की जिम्मेदारी बढ़ती जा रही थी। आमदनी सीमित थी और परिवार की जरूरतें लगातार बढ़ रही थीं। ऐसे समय में मिथिलेश ने समस्या में ही समाधान तलाश लिया। उन्होंने देखा कि गांव के लोगों को गैस सिलिंडर लेने के लिए अमरोहा शहर जाना पड़ता है और इसके लिए उन्हें अलग से पैसे खर्च करने पड़ते हैं। यहीं से शुरू हुई उनकी ऐसी यात्रा, जिसने उन्हें आज अमरोहा की चर्चित 'डिलीवरी वूमन' बना दिया है।

मिथिलेश के मन में विचार आया कि अगर वह ग्रामीणों के लिए गैस सिलिंडर शहर से गांव तक पहुंचा दें तो उनका समय और आने-जाने का खर्च दोनों बच सकते हैं। बदले में उन्हें कुछ आमदनी भी हो सकती है। विचार आसान था, लेकिन उसे जमीन पर उतारना आसान नहीं था।

उन्होंने पति से बात की। पति का सहयोग मिला तो मिथिलेश ने बाइक चलाना सीखा। शुरुआत में गांव के ही एक व्यक्ति से सिलिंडर पहुंचाने की जिम्मेदारी ली। खाली सिलिंडर और बुकिंग की किताब लेकर वह अमरोहा की गैस एजेंसी पहुंचीं और वहां से भरा हुआ सिलिंडर लेकर गांव पहुंचीं। पहली डिलीवरी के बदले उन्हें 30 रुपये मिले। यह रकम भले छोटी थी, लेकिन उनके लिए आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला कदम थी।

धीरे-धीरे ग्रामीणों का भरोसा बढ़ने लगा। एक सिलिंडर से शुरू हुआ काम आज प्रतिदिन करीब 20 से 25 सिलिंडर की डिलीवरी तक पहुंच चुका है। उनकी रोजाना आमदनी करीब एक हजार रुपये तक पहुंच जाती है। मऊमय चक स्थित ढिल्लो गैस एजेंसी की ओर से उन्हें डिलीवरी वूमैन का कार्ड भी जारी किया गया है।

लेकिन आर्थिक सफलता की इस कहानी के पीछे सामाजिक संघर्ष भी कम नहीं था। शुरुआत में लोगों ने ताने दिए। कुछ ने उनका मजाक बनाया और कुछ लोगों को यह स्वीकार नहीं था कि एक महिला बाइक चलाकर गांव-गांव सिलिंडर पहुंचाए। मिथिलेश ने इन बातों को अपने रास्ते की दीवार नहीं बनने दिया।

वह कहती हैं कि सामाजिक रूढ़ियों ने उनके कदम भी रोकने की कोशिश की, लेकिन पति के सहयोग और अपने आत्मविश्वास से उन्होंने धीरे-धीरे लोगों की सोच बदल दी। आज वही काम उनकी पहचान बन चुका है।

मिथिलेश ने केवल बाइक चलाना ही नहीं सीखा, बल्कि कार चलाना भी सीख लिया है। उनका काम अब परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने का माध्यम बन गया है। सबसे बड़ी खुशी उन्हें इस बात की है कि उनके चारों बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बड़ी बेटी विनीता एलएलबी कर रही हैं, छोटी बेटी प्रीति एमए की पढ़ाई कर रही हैं, जबकि बेटे अजीत और जीतू बीए के विद्यार्थी हैं।

रचना ने खेती को बनाया कारोबार

रामपुर निवासी **रचना चौहान** केवल मशरूम उत्पादक नहीं हैं। वह एक ऐसी ग्रामीण महिला उद्यमी के रूप में उभर रही हैं, जिसने अपने निर्णय से अपनी जिंदगी बदली और साथ ही गांव की दूसरी महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर दिए।

सरकारी नौकरी से खेती तक का यह सफर इस बात का उदाहरण है कि सफलता का रास्ता हमेशा एक जैसा नहीं होता। कभी–कभी सुरक्षित रास्ते से बाहर निकलकर अपनी क्षमता और रुचि के क्षेत्र में कदम रखना ही नई संभावनाओं की शुरुआत बन जाती है।

सुरक्षित सरकारी नौकरी को छोड़कर खेती को अपना व्यवसाय बनाना आसान फैसला नहीं होता। लेकिन रचना चौहान ने यह फैसला लिया और आज उनका यही निर्णय न केवल उनकी पहचान बन चुका है, बल्कि गांव की आठ महिलाओं के लिए रोजगार का माध्यम भी बन गया है।

कुछ वर्ष पहले तक रचना बरेली महानगर के सूफी टोला स्थित बेसिक स्कूल में सहायक अध्यापक थीं। उनके पति संजीव तोमर जिला पंचायती राज विभाग में ग्राम पंचायत सचिव हैं। पति-पत्नी दोनों सरकारी सेवा में थे, लेकिन नौकरी के कारण परिवार और घर की जिम्मेदारियों के लिए पर्याप्त समय निकाल पाना मुश्किल हो रहा था। परिवार की परिस्थितियों को देखते हुए रचना ने पति की सहमति से अपनी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने का निर्णय लिया।

नौकरी छोड़ने के बाद उन्होंने रामपुर में परिवार के साथ रहकर घर संभालना शुरू किया। लेकिन उनकी कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। ग्रामीण परिवेश से होने के कारण उन्हें खेती-किसानी की जानकारी पहले से थी। इसी रुचि को उन्होंने रोजगार के अवसर में बदलने का निर्णय लिया। रचना ने पंतनगर विश्वविद्यालय से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। प्रशिक्षण ने उन्हें भरोसा दिया कि पारंपरिक खेती के साथ-साथ मशरूम उत्पादन को भी व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है। परिवार से करीब डेढ़ बीघा जमीन मिलने के बाद उन्होंने ग्राम शादी की मढ़इया में मशरूम की खेती शुरू की।

शुरुआत छोटे स्तर पर हुई, लेकिन उत्पादन और बाजार की संभावनाओं को समझते हुए रचना ने धीरे-धीरे इस काम को विस्तार किया। जब मशरूम की खेती का परिणाम उत्साहजनक रहा तो उन्होंने इसका प्लांट स्थापित किया। आज वह करीब पांच बीघा क्षेत्र में मशरूम की खेती कर रही हैं।

रचना की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होंने अपने व्यवसाय को केवल व्यक्तिगत आय का माध्यम नहीं बनने दिया। खेती और प्लांट की देखभाल के लिए उन्होंने गांव की आठ महिलाओं को काम से जोड़ा। इस तरह उनकी अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ दूसरी महिलाओं के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा हुए।

रचना का मानना है कि ग्रामीण महिलाओं के पास मेहनत और हुनर की कमी नहीं है, जरूरत केवल अवसर और सही प्रशिक्षण की है। उनका अपना सफर भी इसी बात का उदाहरण है। एक ओर उन्होंने सरकारी नौकरी जैसी स्थिर आय का विकल्प छोड़ा, वहीं दूसरी ओर कृषि आधारित उद्यम को अपनाकर अपनी नई पहचान बनाई।

मशरूम की खेती ने उनके लिए कई संभावनाओं के दरवाजे खोले। इसमें सीमित भूमि में उत्पादन की संभावना, प्रशिक्षण के माध्यम से तकनीकी जानकारी और बाजार से जुड़ने के अवसर ने उनके निर्णय को मजबूती दी। रचना की कहानी उन युवाओं और महिलाओं के लिए भी प्रेरणा है जो खेती को केवल पारंपरिक आजीविका मानते हैं। उनका सफर बताता है कि आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण और उद्यमिता के साथ खेती भी एक लाभकारी व्यवसाय बन सकती है।

साक्षात्कार /हेमलता सिंह

सहनौल की बेटी बनी 'ड्रोन दीदी'

बुलंदशहर के सहनौल की बेटी और सतोहा की बहू से लेकर राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित 'ड्रोन दीदी' तक की हेमलता सिंह की यात्रा से हमें एक महत्वपूर्ण प्रेरणा मिलती है कि अवसर जब दरवाजे पर दस्तक दे, तो डर के कारण उसे बंद नहीं करना चाहिए। कभी–कभी एक छोटा–सा निर्णय पूरी जिंदगी की दिशा बदल देता है। हेमलता सिंह चाहती हैं कि ज्यादा से ज्यादा महिलाएँ आगे आएँ, नई चीजें सीखें और अपने पैरों पर खड़ी हों। अगर एक महिला आत्मनिर्भर होती है तो उसका पूरा परिवार मजबूत होता है।

ड्रोन दीदी हेमलता सिंह कहती है कि "शुरुआत में मुझे भी लगता था कि ड्रोन चलाना मेरे बस की बात नहीं है। लेकिन फिर मैंने सोचा अगर सीखने का मौका मिला है, तो कोशिश किए बिना पीछे क्यों हटूँ?"

सहनौल के मायके से लेकर बुलंदशहर के खेतों और फिर राष्ट्रीय मंच तक पहुँची हेमलता आज 'ड्रोन दीदी' के नाम से जानी जाती हैं। लेकिन उनकी असली पहचान केवल ड्रोन उड़ाने वाली महिला की नहीं है; वह उस बदलती ग्रामीण महिला की तस्वीर हैं, जो परंपरागत भूमिकाओं से आगे बढ़कर तकनीक को अपने हाथ में लेकर आत्मनिर्भरता का रास्ता बना रही हैं।

आपके भीतर आगे बढ़ने की प्रेरणा कहाँ से आई?

हमारे गाँव की महिलाओं के पास प्रतिभा और मेहनत दोनों हैं, लेकिन कई बार अवसर नहीं मिलता। मुझे लगा कि अगर मुझे कोई नया काम सीखने का अवसर मिल रहा है तो मुझे इसे छोड़ना नहीं चाहिए। परिवार ने भी मेरा साथ दिया। यही मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा बनी। 2023 में हेमलता ने फूलपुर में ड्रोन पायलट का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी जानकारी हासिल करने के साथ उन्हें यह विश्वास भी हासिल करना पड़ा कि वह इस नई भूमिका को सफलतापूर्वक निभा सकती हैं।

सबसे बड़ी चुनौती क्या थी, तकनीक या लोगों की सोच?

दोनों तरह की चुनौतियां थीं। मशीन नई थी, उसे समझना था। लेकिन उससे भी जरूरी था अपने मन का डर निकालना। लोग पूछते थे कि महिला ड्रोन कैसे चलाएगी? मैंने सोचा कि इसका जवाब बोलकर नहीं, काम करके देना है। यही सोच धीरे-धीरे उनकी ताकत बन गई। 2024 में हेमलता बुलंदशहर की शुरुआती 'नमो ड्रोन दीदी' Namo Drone Didis में शामिल हुईं। खेतों में खाद और कीटनाशक का छिड़काव करने वाली यह तकनीक किसानों के लिए समय और श्रम बचाने वाली थी, लेकिन हेमलता के लिए इसका अर्थ इससे कहीं बड़ा था। यह उनके लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता का नया दरवाजा था। उनके पति इस काम में उनका सहयोग करते हैं।

आपके लिए सफलता का अर्थ क्या है?

हेमलता के लिए सफलता केवल आय अर्जित करना नहीं है। "मैं चाहती हूँ कि गाँव की महिलाएँ यह समझें कि हम केवल घर तक सीमित नहीं हैं। अगर हमें प्रशिक्षण और अवसर मिले तो तकनीक भी सीख सकती हैं और अपना काम भी खड़ा कर सकती हैं।" अपने तक सीमित सफलता नहीं, बल्कि दूसरी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार करना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात ने आपको क्या दिया?

मई 2025 में मुंबई में आयोजित वेव्स 2025 में हेमलता को सम्मानित किया गया। वहाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे बातचीत की और उनके ड्रोन संचालन के अनुभव के बारे में जाना। उन्हें ₹25,000 की सम्मान राशि भी प्रदान की गई। हेमलता के लिए यह केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं था। यह उस यात्रा की स्वीकृति थी, जो एक छोटे से गाँव से शुरू हुई थी।

केवल लक्ष्य पर निशाना

बागपत की बेटी से राष्ट्रीय कोच तक का प्रेरणादायी सफर

बागपत की बेटी वर्षा तोमर की कहानी का सबसे खूबसूरत अध्याय तब शुरू हुआ जब 2025 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय शूटिंग टीम की Trap Coach की जिम्मेदारी मिली। जिन हाथों ने कभी लक्ष्य पर निशाना साधकर भारत के लिए पदक जीते थे, आज वही हाथ नई पीढ़ी को लक्ष्य साधना सिखा रहे हैं। वर्षा की यात्रा संदेश देती है कि संसाधनों की कमी सपनों को नहीं रोक सकती। बस परिवार का विश्वास, स्वयं पर भरोसा और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता साथ हो। वर्षा आज केवल अपने लिए नहीं, बल्कि उन अनगिनत बेटियों के लिए अवसर के नए रास्ते खोल रही हैं जो अपने सपनों को उड़ान देना चाहती हैं।

बागपत की मिट्टी में पली-बढ़ी वर्षा तोमर की कहानी सिर्फ निशानेबाजी में पदक जीतने की कहानी नहीं, बल्कि सपनों को पहचानने, परिस्थितियों से संघर्ष करने और बार-बार खुद को साबित करने की कहानी है। गांव की गलियों से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचने वाली वर्षा आज देश के उभरते निशानेबाजों को प्रशिक्षित कर रही हैं। खिलाड़ी से राष्ट्रीय Trap Coach तक का उनका सफर हजारों बेटियों के लिए प्रेरणा है।

वर्षा ने वर्ष 2002 में कॉलेज में प्रवेश लिया। इसी दौरान कॉलेज में आयोजित राइफल शूटिंग ट्रायल में उन्होंने पहली बार निशानेबाजी में हाथ आजमाया। इससे पहले उन्होंने कभी बंदूक नहीं उठाई थी। पिता के प्रोत्साहन ने उन्हें आगे बढ़ने का साहस दिया और चयन ने उनके भीतर आत्मविश्वास जगाया। इसके बाद वह नियमित अभ्यास करने लगीं और जल्द ही प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान बनाने लगीं।

बागपत के जोहड़ी राइफल क्लब ने उनके खेल को नई दिशा दी। शुरुआत राइफल और पिस्टल से हुई, लेकिन बनारस में एक प्रतियोगिता के दौरान पहली बार शॉटगन शूटिंग देखने के बाद उनका मन इसी खेल में रम गया। उड़ते हुए लक्ष्य पर निशाना साधने की चुनौती उन्हें इतनी पसंद आई कि उन्होंने शॉटगन में हाथ आजमाने का फैसला किया। पहली ही प्रतियोगिता में 50 में से 43 लक्ष्य भेदकर उन्होंने पदक जीत लिया। यह उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था।

उनकी प्रतिभा को देखते हुए पिता उन्हें प्रशिक्षण के लिए दिल्ली तक ले जाने लगे। आगे सेना में खेल कोटे से चयन हुआ। वर्ष 2004 में भारतीय सेना का हिस्सा बनने के बाद वर्षा ने शॉटगन में अपने प्रदर्शन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सफलता के साथ उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत का प्रतिनिधित्व किया। एशियन चैंपियनशिप वर्ल्ड कप और वर्ल्ड चैंपियनशिप जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में उन्होंने Trap और Double Trap में देश का प्रतिनिधित्व किया। 2012 ऐशियन शूटिंग चैंपियनशिप में (वोमेंस ट्रैप टीम) में उन्होंने स्वर्ण पदक भी जीता।

सफलता के इस सफर में संघर्ष भी कम नहीं था। पिता के निधन ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। इसके बाद कोविड काल में बड़े भाई को खोना उनके लिए एक और गहरा आघात था। परिवार की जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत दुखों के बावजूद उन्होंने अपने खेल और जीवन से हार नहीं मानी। सेना में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें दो बार चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ कमेंडेशन से भी सम्मानित किया गया। जाहिर है कि अगर लक्ष्य स्पष्ट हो तो रास्ते की कठिनाइयां मंजिल का फैसला नहीं करतीं, संकल्प करता है।

Secure. Smart. Scalable.

GVD
GENIUS VISION DIGITAL

SEE EVERYTHING. MISS NOTHING.

From factories to retail stores to hospitals — every business runs round-the-clock, managing people, assets and operations. Yet real-time visibility and safety often remain major challenges.

500+ Projects Delivered | 100+ Countries Served
100+ Repeat Customers | 95%+ Customer Satisfaction

CHALLENGES

Retail Store Setting
Missed activity across key areas and premises.

Unauthorized Access & Theft
Entry breaches, internal theft and asset loss.

Hospital/Corporate Lobby Setting
People, vehicles & assets not monitored across sites.

Manual Monitoring Delays
Slow response due to human-only surveillance.

Multi-Industry Compliance Scene
Difficulty maintaining safety standards & audit readiness.

Disconnected Systems
CCTV, access & fire systems not unified for quick action.

SMART SOLUTIONS

- **CCTV, NVRs & Servers (Octocam):** In-house manufactured, end-to-end video infrastructure for reliable, high-quality monitoring
- **Neubit AI:** Real-time detection of intrusion, fire & unsafe acts
- **Command & Control (Neubit Platform):** Unified screen for CCTV, access, fire, alarms & third-party devices
- **PoE Switches:** Power-efficient networking backbone for seamless connectivity

KEY BENEFITS

- 24×7 automated monitoring with instant alerts
- Prevent theft, fire & downtime through proactive response
- Centralized control across multiple sites or locations
- Improve safety compliance & operational efficiency
- Faster incident response with unified system integration

WHY CHOOSE GVD

- 18+ years of AI & Video Intelligence expertise
- **500+ projects** across 100+ countries
- Backed by **Supermicro (NASDAQ: SMCI) & ITRI Taiwan**
- ISO-certified quality & reliability
- Fully in-house ecosystem — cameras to AI
- We Secure Lives | Business | Places

Secure Your Operations with Intelligent Protection. CONNECT NOW.

Call for More Info **9560 80 2399** | marcom@geniusvision.in | www.geniusvision.in

Headquarters & Global Offices: Taiwan | India | France | UAE

सेवा, संवेदना, स्वावलंबन का सफर

बिजनौर निवासी **सविता अग्रवाल** की यात्रा यह संदेश देती है कि समाजसेवा केवल दान देने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। किसी के हाथ में सहायता देने से बेहतर है कि उसके हाथों को हुनर दिया जाए ताकि वह स्वयं अपने जीवन की दिशा बदल सके। बेटियों को प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने और जरूरतमंदों के साथ खड़े रहने की उनकी दो दशक लंबी यात्रा इसी सोच का उदाहरण है कि सेवा ऐसी हो जो किसी के जीवन में स्थायी बदलाव ला सके।

उनका एक बड़ा सपना वृद्धाश्रम स्थापित करना भी है। वे चाहती हैं कि बुजुर्गों को सम्मान और सुरक्षित वातावरण मिल सके, जिन्हें जीवन के इस पड़ाव पर सहारे की आवश्यकता है।

बेटियों को हुनर देकर आत्मनिर्भर बनाने से लेकर जरूरतमंदों की सेवा तक, सविता अग्रवाल का सामाजिक जीवन सेवा, संवेदना और स्वावलंबन की निरंतर यात्रा है।

समाजसेवा के अनेक रूप हैं। किसी जरूरतमंद को केवल सहायता देना और उसे अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए हुनर देना इन दोनों में बड़ा अंतर है। बजनौर की सविता अग्रवाल पिछले लगभग दो दशकों से इसी विचार को अपने सेवा कार्यों का आधार बनाकर आगे बढ़ रही हैं। उनका उद्देश्य विशेष रूप से बेटियों और महिलाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ना है। सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, दरी-कालीन निर्माण, नायलॉन डोरी वर्क तथा अन्य हस्तकला का निःशुल्क प्रशिक्षण देकर वे अब तक पांच हजार से अधिक छात्राओं और महिलाओं को प्रशिक्षित कर चुकी हैं।

केवल प्रशिक्षण नहीं : उनके सेवा कार्यों का संचालन अग्रवाल प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान, पंजीकृत, बिजनौर (उत्तर प्रदेश) के माध्यम से किया जाता है। संस्था का प्रयास केवल प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है, बल्कि जरूरतमंदों को आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराना भी है। गरीब परिवारों की बेटियों को सिलाई मशीन और साइकिल उपलब्ध कराने के साथ उन्हें ऐसा हुनर सिखाने पर जोर दिया जाता है जिससे वे भविष्य में आय अर्जित कर सकें। सविता अग्रवाल का मानना है कि स्थायी सशक्तीकरण वही है, जिसमें सहायता के साथ आत्मनिर्भर बनने का रास्ता भी मिले।

शिक्षा और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर : बच्चों की शिक्षा और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना भी उनके सामाजिक कार्यों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। चार सरकारी विद्यालयों को गोद लेकर पूरे वर्ष विद्यार्थियों की पढ़ाई और आवश्यक स्टेशनरी में सहयोग किया जाता है। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों की फीस, स्कूल ड्रेस, किताबें, कॉपियां, बैग, जूते-मोजे, पेंसिल बॉक्स, लंच बॉक्स और पानी की बोतल जैसी जरूरत की सामग्री उपलब्ध कराने में भी सहयोग किया जाता है।

बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को सामने लाने के लिए सामान्य ज्ञान, राखी, मेहंदी, नृत्य, गीत और ढोलक जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। पिकनिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से भी बच्चों का मनोबल बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। उनके लिए ये गतिविधियां केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व-विकास का माध्यम हैं।

कोरोना काल में सेवा का व्यापक अभियान : कोरोना महामारी के कठिन दौर में भी सविता अग्रवाल ने जरूरतमंदों तक सहायता पहुंचाने का प्रयास जारी रखा। उन्होंने रोडवेज पर यात्रियों के लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था की तथा मास्क और चप्पल वितरित किए। जरूरतमंद परिवारों को राशन की कच्ची सामग्री की किट उपलब्ध कराने के साथ अस्पतालों और घरों तक भोजन, नाश्ता, दवाइयां और फल पहुंचाने का कार्य किया। पुलिसकर्मियों के लिए भी चाय-नाश्ते की व्यवस्था की गई।

यह दौर उनके लिए सेवा की कठिन परीक्षा था, लेकिन उन्होंने परिस्थितियों की परवाह किए बिना अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों तक सहायता पहुंचाने का प्रयास किया।

पर्यावरण और जनसेवा भी प्राथमिकता : सविता अग्रवाल के सामाजिक सरोकारों में पर्यावरण संरक्षण भी शामिल है। इंदिरा पार्क सहित विभिन्न स्थानों पर औषधीय और फलदार पौधे लगाए गए हैं। वे इन पौधों की नियमित देखभाल पर भी ध्यान देती हैं। गर्मी के दिनों में लोगों को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न स्थानों पर प्याऊ लगवाने का कार्य भी किया गया है। जरूरतमंद परिवारों की बेटियों के विवाह में सहयोग और गरीब कन्याओं की शादी में सहायता देना भी उनकी सेवा गतिविधियों का हिस्सा है। सर्दियों में ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर गर्म कपड़े, कंबल, रजाई, गद्दे और गर्म पानी की बोतल जैसी आवश्यक वस्तुएं वितरित की जाती हैं।

बुजुर्गों के प्रति संवेदना : वृद्धजनों की सेवा को भी सविता अग्रवाल विशेष महत्व देती हैं। वृद्धाश्रम में जरूरत के अनुसार कपड़े, चप्पल, भोजन और नाश्ता उपलब्ध कराने के साथ गर्म पानी की सुविधा के लिए तीन गीजर लगवाने में सहयोग किया गया। मदर्स डे जैसे अवसरों पर वृद्धाश्रम जाकर बुजुर्गों का सम्मान करना और उनका आशीर्वाद लेना उनके लिए भावनात्मक अनुभव होता है। गुरुकुल विद्यालय, नवलपुर में जरूरत के अनुसार कंबल, जूते-चप्पल, अनाज और अन्य सामग्री उपलब्ध कराने के साथ विद्यार्थियों और गौसेवा में सहयोग किया जाता है।

अब लक्ष्य है बड़ा बदलाव : लगभग दो दशक की सेवा-यात्रा के बाद भी सविता अग्रवाल के प्रयास थमे नहीं हैं। अब वे महिलाओं के स्वरोजगार को बड़े स्तर पर आगे बढ़ाना चाहती हैं। बेकार समझी जाने वाली कोल्ड ड्रिंक की प्लास्टिक बोतलों से उपयोगी वस्तुएं तैयार करवाकर उन्हें व्यवसाय का रूप देने की योजना पर वे काम करना चाहती हैं ताकि महिलाएं अपने हुनर को आय के साधन में बदल सकें।

उधर नशे का अंधेरा इधर शिक्षा की रोशनी

किसी समाज को बदलने के लिए हमेशा बड़े संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती। कई बार एक जागरूक व्यक्ति का साहस, संवेदनशीलता और निरंतर प्रयास ही बदलाव की शुरुआत बन जाता है। गोंडा जनपद में सुश्री रुचि मोदी का प्रयास ऐसी ही परिवर्तनकारी पहल की कहानी है, जहाँ उन्होंने नशे के अंधकार से जूझते परिवारों के बीच जागरूकता की लौ जलाने का बीड़ा उठाया।

गोंडा के विभिन्न क्षेत्रों में कभी कच्ची शराब और लहन के अवैध कारोबार ने अनेक परिवारों को अपनी गिरफ्त में ले रखा था। नशे की बढ़ती प्रवृत्ति लोगों के स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर रही थी। ऐसे चुनौतीपूर्ण वातावरण में रुचि मोदी ने महिलाओं को जागरूक करना शुरू किया। उन्होंने न केवल नशे के दुष्परिणामों के प्रति लोगों को सचेत किया बल्कि शराब की भट्ठियों और लहन को नष्ट करने के अभियान में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उनका उद्देश्य केवल नशे के कारोबार को रोकना नहीं, बल्कि लोगों को उसके विकल्प उपलब्ध कराकर एक बेहतर जीवन की ओर ले जाना था।

इसी सोच के साथ महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण और मशरूम कल्टिवेशन जैसे रोजगारपरक कौशल से जोड़ा गया। उनका मानना था कि जब हाथों में हुनर और परिवार के लिए आय का साधन होगा, तब नशे के कारोबार पर निर्भरता को भी कम किया जा सकेगा। इस प्रयास ने महिलाओं के भीतर आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत करने का मार्ग प्रशस्त किया। रुचि मोदी की संवेदनशीलता का दायरा केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने महसूस किया कि किसी भी समाज का वास्तविक विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक उसकी बेटियाँ शिक्षा से जुड़ी न हों। इसी संकल्प के साथ उन्होंने जरूरतमंद बालिकाओं की फीस स्वयं एकमुश्त जमा कराकर उनका विद्यालयों में दाखिला कराया। उनके निरंतर प्रयासों से 200 से अधिक बालिकाओं को शिक्षा की राह मिली। किसी बेटी के हाथ में किताब पहुँचाना, उनके लिए केवल सहायता नहीं, बल्कि उसके भविष्य को नई दिशा देना था।

जब कोविड महामारी के दौरान भय और असुरक्षा का माहौल था। अधिसंख्य लोग अपने घरों से बाहर निकलने में संकोच कर रहे थे, तब रुचि मोदी ने सेवा का रास्ता चुना। वे स्वयं अस्पतालों तक जातीं और 'कोविड मरीजों को नाश्ता उपलब्ध करातीं'। संकट के उस दौर में उनका यह प्रयास मरीजों के लिए भोजन से कहीं अधिक मानवीय संवेदना और भरोसे का संदेश था। रुचि मोदी की कहानी किसी एक अभियान या उपलब्धि की कहानी नहीं है। यह उस सोच की कहानी है जो नशे के विरुद्ध जागरूकता से शुरू होकर महिलाओं के स्वावलम्बन, बेटियों की शिक्षा और संकट में मानव सेवा तक पहुँचती है। उन्होंने यह साबित किया कि समाज परिवर्तन केवल समस्याओं की पहचान करने से नहीं, बल्कि उनके बीच जाकर समाधान का रास्ता बनाने से होता है।

नशे की भट्ठियों को बुझाकर, महिलाओं के हाथों में हुनर देकर और बेटियों के हाथों में किताबें थमाकर रुचि मोदी ने गोंडा के अनेक परिवारों के भविष्य में उम्मीद की एक नई रोशनी जगाई है।

बेटियों के भविष्य की शिल्पकार

जौनपुर जिले के मड़ियाहूं तहसील के शिवपुर (बेलवा) गांव निवासी कमला सिंह पिछले दो दशकों से गरीब और जरूरतमंद बेटियों के जीवन में शिक्षा की रोशनी फैलाने का निःस्वार्थ कार्य कर रही हैं। बिना किसी प्रचार–प्रसार और निजी स्वार्थ के उन्होंने बेटियों को शिक्षित, आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन के लिए सक्षम बनाने का जो संकल्प लिया, वह आज एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुका है। कमला सिंह की दो दशक लंबी यह यात्रा इसी सोच का प्रमाण है। उन्होंने सैकड़ों गरीब बेटियों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले हैं और उन्हें अपने सपनों को आकार देने का अवसर दिया है। उनके प्रयासों से निकली बेटियां आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा बन रही हैं।

वर्ष 2004 में कमला सिंह ने श्रीजंगी सिंह इंटरमीडिएट बालिका कॉलेज की स्थापना की। उस समय उनका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट था – ऐसे परिवारों की बेटियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना, जो आर्थिक तंगी के कारण अपनी बेटियों की पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ थे। मात्र 54 छात्राओं से शुरू हुई यह छोटी–सी पहल आज एक बड़े अभियान का रूप ले चुकी है। वर्तमान में 500 से अधिक छात्राएं इस विद्यालय में अध्ययनरत हैं आसपास के करीब 23 गांवों की बेटियां कक्षा छह से 12 तक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

कमला सिंह केवल छात्राओं की फीस माफ करने तक सीमित नहीं रहीं। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि आर्थिक कठिनाई उनकी पढ़ाई में किसी भी स्तर पर बाधा न बने। सुनिश्चित किया कि छात्राओं को कॉपियां, किताबें, ड्रेस, गर्म कपड़े तथा पढ़ाई के लिए आवश्यक अन्य सामग्री भी निःशुल्क उपलब्ध कराई जाये। उनका मानना है कि किसी गरीब परिवार की बेटी केवल इसलिए शिक्षा से वंचित न रह जाए कि उसके पास किताबें या विद्यालय की पोशाक खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं।

उनकी पहल का एक और महत्वपूर्ण पक्ष उच्च शिक्षा को प्रोत्साहन देना है। 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने वाली छात्राओं को वह प्रतिवर्ष 30 हजार रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान करती हैं। अब तक 73 छात्राएं इस सहायता का लाभ लेकर उच्च शिक्षा की राह पर आगे बढ़ चुकी हैं। इनमें से कई छात्राओं के लिए यह आर्थिक सहयोग उनके सपनों को पूरा करने का महत्वपूर्ण आधार बना है।

समय के साथ कमला सिंह ने शिक्षा के साथ समाजसेवा और आधुनिक तकनीक को जोड़ते हुए अपनी पहल को एक नई दिशा दी है। उनका प्रयास केवल बेटियों को किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें ऐसा हुनर और आत्मविश्वास देने का है, जिससे वे भविष्य में अपने पैरों पर खड़ी हो सकें और सम्मान के साथ अपना जीवन जी सकें। उनका विश्वास है कि शिक्षित और सक्षम बेटी केवल अपने परिवार का भविष्य नहीं बदलती, बल्कि पूरे समाज के विकास की आधारशिला बनती है।

आज जब महिला शिक्षा, बालिका सशक्तीकरण और बेटियों के लिए सरकारी योजनाओं की चर्चा व्यापक स्तर पर होती है, तब शिवपुर का यह विद्यालय यह संदेश देता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल सरकारी योजनाओं से नहीं आता। उसके लिए ऐसे संवेदनशील, दूरदर्शी और समर्पित व्यक्तित्वों की भी आवश्यकता होती है जो किसी समस्या को देखकर केवल चिंता न करें, बल्कि उसके समाधान के लिए स्वयं आगे बढ़ें।

कमला सिंह की दो दशक लंबी यह यात्रा इसी सोच का प्रमाण है। उन्होंने सैकड़ों गरीब बेटियों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले हैं और उन्हें अपने सपनों को आकार देने का अवसर दिया है।

नारी सफलता की प्रेरक कहानी

फतेहपुर की समाज सेविका रन्नो देवी बचपन से श्रीराम लीला देखकर बड़ी हुई हैं और इनके मन में सदैव यह टीस रहती थी कि काश श्रीराम लीला मैदान होता। जब अवसर मिला तो इन्होंने गांव में ही श्रीराम लीला मैदान को संरक्षित करने का कार्य किया। पूरे मैदान में इंटरलॉकिंग करवा दिया। साथ ही वृक्षारोपण भी करवाया।

रन्नो देवी ने गांव को विकसित करने का लक्ष्य लिया है। उद्देश्य है कि ग्रामीण जन आत्मनिर्भर बनें, महिलाएं स्वस्थ और समृद्ध हों। बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, गांव के कृषक कैसे वैज्ञानिक पद्धति से खेती करें, इसके लिए किसान गोष्ठी का आयोजन करवाती हैं।

भारत का इतिहास नारी के उच्च आदर्शों से भरा पड़ा है। वैसे भी 21वीं सदी में जब ऐसी नारी देखने को मिल जाए जो पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए जन सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना ले तो फिर कहना ही क्या...जी हां, मैं बात कर रहा हूं 51 वर्षीय श्रीमती रन्नो देवी की, जो गरीबी में पली-बढ़ी और स्वयं को समाज सेवा, नारी सशक्तिकरण, कृषि उन्नति आदि को लेते हुए मिशन विकसित ग्राम विजयीपुर के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

सन् 1976 में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के विजयीपुर ग्राम में श्री रामानंद सविता, अति पिछड़ा वर्ग, नाईं जाति के यहां हुआ था। 5 वीं तक पढ़ाई करने के बाद घर के कामों में हाथ बंटाने लगीं। सन् 1988 में माता जी का स्वर्गवास हो गया था। दो बहन और एक भाई और पिता इस परिवार में संकट छा गया था। बड़ी बहन की शादी मां की मृत्यु से पूर्व हो गई थी। फिर माता जी की मृत्यु 1988 में हो गई थी। ठीक 2 वर्ष बाद , सन 1990 में इनका भी विवाह फतेहपुर जिला के अईझी कोटवा ग्राम के श्री रामलखन के साथ हुआ था। किंतु प्रकृति ने तो कुछ और ही रचा था। वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा क्योंकि पति को नशा की लत थी। अतः उन्होंने विवाह के कुछ माह बाद ही अपने साथ रखने से मना कर दिया। रन्नो देवी ने हार नहीं मानी और अपने पिता जी के घर आ गईं तब छोटा भाई दयाशंकर भी बहुत छोटा ही था। रन्नो देवी के पिताजी गांव की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अपनी बेटी को भी इस काम में साथ लिया। जैसे रन्नो देवी के पिताजी गांव के मांगलिक या अमांगलिक समस्त प्रकार के पारिवारिक कार्यक्रम में लोगों की सेवा करते थे, पुरुषों के केश प्रक्षालन करना, संदेश देना आदि। ठीक इसी प्रकार से रन्नो देवी ने भी प्रसूता की मालिश करना, नवजात की मालिश करना, घर का चौका-बर्तन करना और महिलाओं का श्रृंगार करना आदि।

अपने गांव की अनाथ बिटिया रोशनी देवी पुत्री स्व. राधे गौतम को आँत में क्षय रोग हो गया था। इनके पास पैसे भी नहीं थे और जीवन संकट में आ गया था। रन्नो देवी ने लोगों को एकत्रित किया टीम बनाई और लोगों के साथ-साथ विद्यालय से भी सहयोग लेकर प्रयागराज, स्वरूप रानी हॉस्पिटल में इलाज करवाया। इस प्रकार रोशनी के जीवन में पुनः रोशनी आई।

इन सबको करते हुए फिर भी रन्नो देवी के मन में समाज सेवा के लिए और भी कुछ करने को जज्बा जगा... वर्ष 2014 में पिता की लंबी आयु के बाद मृत्यु हो गई.. तबसे विभिन्न तबके के लोगों को साथ लेकर, समाज सेवा कर रही हैं।

ग्राम सभा के तालाबों को बचाने के लिए संघर्ष किया। इतना ही नहीं अवैध कब्जा भी हटवाया। जलाशयों को बचाने के लिए जन जागरण अभियान चलाया।

शिवपुर ग्रामवासी निम्बूलाल की पत्नी खेत में काम कर रही थीं। इनके ऊपर 12,000 वोल्ट की तार गिर गई थी उसी समय मृत्यु हो गई, रन्नो देवी मौके पर टीम के साथ पहुंच गईं। पोस्ट मार्टम कराया और 2 महीने के भीतर 5 लाख रुपए सरकारी लाभ दिलाया। बच्चों के स्कूल में जाकर बात किया, निःशुल्क पढ़ाई के लिए। आज निम्बूलाल के परिवार में भले ही पत्नी नहीं हैं, फिर भी परिवार का जीवन पटरी पर आ गया है।

रन्नो देवी कहती हैं कि वो भले ही 5 वीं तक पढ़ाई की हैं लेकिन इनका सपना है कि सभी को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। इसी क्रम में ग्राम के ही शिखर कॉन्वेंट स्कूल से संबद्ध होकर रन्नो देवी ऐसे बच्चों की पूरी फीस जमा करती हैं और पढ़ाई की सामग्री की भी समुचित व्यवस्था करवाती हैं। अब तक सैकड़ों बच्चों को प्राथमिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक शिक्षा में सहयोग कर चुकी हैं। इनका कहना है कि प्रत्येक बच्चा अपने सपनों को पूरा करें और शिखर तक पहुंचे। विजयीपुर ग्राम में बारिश के कारण जल भराव हो गया था, लोगों के घरों में पानी भर गया था, इतना ही नहीं जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। रन्नो देवी ने शासन प्रशासन से पत्राचार किया और स्वयं टीम के साथ लगकर गांव को डूबने से बचाया।

सेवा परमो धर्मः बना रीमा का संकल्प

आज 'नेह नीड़' में बच्चों की शिक्षा पर ही ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि उन्हें निःशुल्क आवासीय सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है। उनके रहन–सहन, खानपान, स्वास्थ्य, शिक्षा और उनकी छोटी–बड़ी आवश्यकताओं की चिंता रीमा जी एक मां की तरह करती हैं। यहां आने वाले बच्चों के लिए नेह नीड़ केवल विद्यालय या छात्रावास नहीं, बल्कि एक ऐसा परिवार है, जहां उन्हें स्नेह, सुरक्षा, संस्कार और अपने भविष्य के प्रति विश्वास व अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध का ज्ञान मिलता है। 2016 में विवाह के बाद रीमा के जीवन साथी श्री कन्हैया लाल जी ने भी उनकी सेवा भाव को मूर्त रूप देने में सहयोग किया।

मां गंगा के पावन तट पर उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर (ब्रजघाट) में स्थित 'नेह नीड़ फाउंडेशन' की सचिव और यहां रहकर पढ़ रहे 130 बालकों की 'दीदी' रीमा जी बचपन से ही समाज और लोगों की सेवा करने का सपना देखती थीं। उनकी इच्छा थी कि ऐसा जीवन चुना जाए, जिसमें अपने कार्य के साथ समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए भी कुछ सार्थक किया जा सके। इसी उद्देश्य से उन्होंने सिविल सर्विसेज में जाने का निर्णय लिया। परन्तु जब उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली तो वे कुछ समय के लिए विचलित अवश्य हुईं, लेकिन हार नहीं मानी। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बदलने के बजाय उसकी दिशा बदल दी और झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले बच्चों को शिक्षित करने के लिए वहां निःशुल्क कक्षाएं प्रारम्भ कर दीं।

वर्ष 2016 में विवाह के बाद आपके जीवनसाथी श्री कन्हैया जी ने रीमा जी की इसी खुशी और सेवा-भाव को समझते हुए वर्ष 2020 में मेरठ के माधवकुंज से ब्रज प्रान्त के महानगरों की झुग्गी-बस्तियों के 32 जरूरतमंद बालकों को साथ लेकर इस पुनीत कार्य का विधिवत शुभारम्भ किया। 'नेह नीड़' अर्थात 'स्नेह का घोंसला' नाम ही इस संस्था के उद्देश्य को सार्थक करता है।

बालकों की शिक्षा, संस्कार और समग्र व्यक्तित्व विकास को समर्पित यह संस्था प्रतिवर्ष झुग्गी-बस्तियों तथा प्रवासी श्रमिक परिवारों के 30 से 35 होनहार और जरूरतमंद बालकों का चयन करती है। उन्हें विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराती है। उद्देश्य केवल उन्हें पढ़ा-लिखाकर परीक्षा में अच्छे अंक दिलाना नहीं, बल्कि उन्हें संस्कारित, स्वावलंबी, अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक भी बनाना है।

इन बच्चों के भीतर संस्कारों के बीज बोने के साथ उन्हें सनातन संस्कृति, भारतीय जीवन-मूल्यों और राष्ट्रभाव से परिचित कराया जाता है। योग, स्वच्छता, अनुशासन और आत्मनिर्भरता उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बनाए जाते हैं। कभी अभाव, उपेक्षा और गलत संगत के बीच जीवन जीने वाले ये बच्चे आज अच्छे अंक प्राप्त कर नेह नीड़ का नाम रोशन कर रहे हैं। खेलकूद, कला, नृत्य, संवाद प्रतियोगिता और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भी वे अपनी अलग पहचान बना रहे हैं। नेह नीड़ परिसर में स्थित गौशाला और मंदिर भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। गौसेवा के माध्यम से उनमें करुणा और सेवा का भाव विकसित किया जाता है, वहीं धार्मिक गतिविधियों एवं भारतीय परंपराओं से उनका परिचय उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है।

नेह नीड़ का कार्य केवल कुछ बच्चों के जीवन को संवारने तक सीमित नहीं है। प्रवासी श्रमिकों और झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले परिवारों के होनहार बच्चों को शिक्षा, संस्कार और सम्मानजनक भविष्य का अवसर देकर यह संस्था समाज की उस बड़ी

चुनौती का समाधान करने का प्रयास कर रही है, जहां आर्थिक अभाव में प्रतिभाशाली बच्चे मुख्यधारा से दूर हो जाते हैं व इन बस्तियों के कुछ निवासी कई बार देशविरोधी ताकतों के हाथों की कठपुतली बन जाते हैं व उनके लिए भीड़ जुटाने लगते हैं। जिन बस्तियों के बच्चे अनेक बार अभाव, अशिक्षा, असामाजिक वातावरण और भटकाव के बीच अपना भविष्य तलाशने को विवश होते हैं, उन्हीं बस्तियों में राष्ट्रभाव, सामाजिक उत्तरदायित्व और भारतीय संस्कारों का दीप जलाने का संकल्प नेह नीड़ ने लिया है। शिक्षा के माध्यम से बच्चों को सक्षम बनाना और संस्कारों के माध्यम से उन्हें देश और समाज के प्रति संवेदनशील नागरिक बनाना यही इस संस्था की सबसे बड़ी विशेषता है।

'सेवा परमो धर्मः' को अपने जीवन का आधार बनाकर रीमा जी वास्तव में एक मूर्तिकार की तरह इन बालकों के भविष्य को आकार दे रही हैं। जिस प्रकार एक मूर्तिकार पत्थर में छिपी सुंदर प्रतिमा को अपनी साधना और धैर्य से आकार देता है, उसी प्रकार रीमा जी अभावों में छिपी इन प्रतिभाओं को शिक्षा, स्नेह, संस्कार और अवसर देकर उनके भीतर के उज्ज्वल भविष्य को सामने ला रही हैं। नेह नीड़ केवल एक संस्था नहीं, बल्कि उन 130 बालकों के लिए स्नेह का वह घर है, जहां उन्हें शिक्षा के साथ परिवार मिलता है, संस्कार के साथ संस्कृति मिलती है और सपनों के साथ उन्हें पूरा करने का अवसर भी मिलता है। मां गंगा के किनारे जलता यह छोटा-सा दीप आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा, सेवा, संस्कार और राष्ट्रनिर्माण की एक बड़ी ज्योति बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

गोल्डन गर्ल की नजर विश्व चैंपियनशिप पर

छोटे शहरों की लड़कियां, जब बड़े सपने देखती हैं तो वे सपने किस तरह फलीभूत होते हैं, यह बुलंदशहर के खुर्जा की **रेखा चौधरी** से पूछें। तीसरी चैंपियनशिप प्रतियोगिता जीतकर बल्कि गोल्ड मेडल जीतकर अपना नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज करा लिया।

रेखा चौधरी बताती हैं कि 14-15 साल से ही उन्हें खेलों में रुचि थी। पहले वह सारे स्पोर्ट्स ऐसे ही शौकिया तौर पर खेलती थीं पर फिर एक बार डांसिंग का अवसर मिला। फिर इन्हें बॉक्सिंग खेल अच्छा लगने लगा। फिर यह किक बॉक्सिंग की ट्रेनिंग लेने लगीं। शुरुआत में तो इनके पास पैसे भी नहीं थे। जब ये कोई मैच जीततीं तो उससे थोड़ी आमदनी हो जाती। धीरे-धीरे पदक मिलने पर इनका नाम होने लगा और आर्थिक तंगी भी दूर होने लगी। शुरुआत में तो इनके चोटें भी आईं, बाद में सीख जाने पर ठीक हो गयीं।

बहुमुखी प्रतिभा धनी रेखा चौधरी फाइट क्लब की स्टार कोच सुशील के साथ मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग में भी ली। ये चार बार राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी चैंपियन रह चुकी हैं। जयूजुतसु में कमाल किया जिसके दम पर थाइलैंड में हुई प्रतियोगिता का अवसर मिला। ये अमेजॉन के रियलिटी शो, द वारियर्स हंट शो में भी फायटिंग का कमाल दिखा चुकी हैं। एक साधारण सी पृष्ठभूमि से निकल कर जब इन्होंने सपनों को पूरा किया और यह अपने गांव खुर्जा पहुंची तो इनका स्वागत पूरा गांव सजाकर किया गया। यह रेखा चौधरी की व्यक्तिगत जीत ही नहीं बल्कि देश के नाम उनकी पहचान भी है। एक साधारण से कस्बे से निकल कर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच कर खेल की पहचान बन जाना आसान बात नहीं है। अब इनकी निगाहें विश्व चैंपियनशिप पर टिकी हैं जिनमें वह गोल्ड जीत कर देश का मान बढ़ाने वाली हैं।

काशी की बेटी **सोनी चौरसिया** का जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ। प्रारंभिक जीवन अभावों और परिस्थितियों की कसौटी पर बीता। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उनका पालन–पोषण नाना–नानी ने किया। कई वर्षों तक वही माता–पिता और उनका संसार रहे। इन प्रारंभिक अभावों का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। शायद उन्हीं अभावों ने उनके भीतर आत्मनिर्भरता, दृढ़ता और संकल्प का बीज रोपा। बचपन से किसी कार्य को ठान लेने के बाद उसे पूरा करना उनके स्वभाव का हिस्सा रहा। आज लगता है, वह जिद नहीं, ईश्वर का दिया हुआ संकल्प था।

साक्षात्कार /सोनी चौरसिया

अभावों से हुआ संकल्प का जन्म

24 घंटे लगातार रोलर स्केट पर कथक और फिर 126 घंटे तक लगातार कथक का विश्व रिकॉर्ड बनाया।

अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति, अटूट संकल्प की साधिका और लक्ष्य के प्रति जुनून की जीवंत मिसाल काशी की बेटी सोनी चौरसिया। इन्होंने अभावों को अपनी शक्ति, संघर्ष को अपनी साधना और उपलब्धियों को समाज एवं राष्ट्र-सेवा का संकल्प बनाया; अपनी कला को कीर्तिमान, अपने खेल को अभियान और अपने प्रत्येक कदम को समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण का माध्यम बनाया।

आठवीं कक्षा में हरिश्चंद्र विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। आगे आर्य महिला पी.जी. कॉलेज से स्नातक तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से परफॉर्मिंग आर्ट्स में स्नातकोत्तर किया। एनसीसी 'सी', कबड्डी और खो-खो सहित खेलों में सक्रिय रही। धीरे-धीरे कला और खेल मेरे जीवन की दो धाराएं बन गए। अभावों ने मुझे खाली नहीं किया। उन्होंने मेरे भीतर वह स्थान बनाया जहाँ संकल्प ने जन्म लिया।

आपको कथक नृत्य के साथ रोलर स्केट करने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

संयुक्त परिवार के पारंपरिक परिवेश में पली-बढ़ी, जहाँ लड़कियों के सपनों की सीमाएं अक्सर तय होती थीं। खेल ने मुझे उन सीमाओं से बाहर की दुनिया दिखाई। इसी यात्रा में एक दिन मेरे रोलर स्केटिंग गुरु राजेश डोगरा जी को एक लड़की से कहते सुना - "अगर तुम रोलर स्केटिंग पर कथक करोगी तो दुनिया में तुम अकेली लड़की होगी जो ऐसा करेगी।" यह वाक्य मेरे भीतर संकल्प बनकर उतर गया। मैंने उसी क्षण मन में कहा - "वह लड़की मैं बनूँगी।"

इसके बाद दिन-रात साधना शुरू हुई। पंडित ओमप्रकाश मिश्रा जी से लखनऊ घराने के कथक और राजेश डोगरा जी से रोलर स्केटिंग की शिक्षा ने दोनों विधाओं को एकाकार किया। पहियों की गति और कथक की लय-ताल के इस अद्भुत संगम से रोलर स्केट पर कथक की नई पहचान बनी।

इसी अनुभव से आगे चलकर 'Dance on Wheel' (डांस ऑफ व्हील) की परिकल्पना जन्मी। रोलर स्केटिंग सीखने वाले बच्चों की प्रतिभा को एक मंच पर लाकर उन्हें नृत्य, लय, अनुशासन और सामूहिक प्रस्तुति से जोड़ने का प्रयास किया। मेरे लिए यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि इस विश्वास का विस्तार था कि हर बच्चे के भीतर प्रतिभा है, जिसे सही दिशा और अवसर चाहिए।

गंगा महोत्सव, वाराणसी महोत्सव सहित अनेक मंचों पर इस कला को प्रस्तुत करने का अवसर मिला। भारतीय संस्कृति और शास्त्रीय कला को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से 2017-18 में कथक की कार्यशालाओं के माध्यम से भी इस कला को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया। मेरे गुरुओं ने मुझे केवल कला ही नहीं दी; उन्होंने मेरे भीतर यह विश्वास जगाया - "तुम्हारे भीतर कला है, तुम कुछ भी कर सकती हो।" मेरा मानना है कि "प्रतिभा ईश्वर का वरदान हो सकती है, लेकिन उसे समाज और राष्ट्र के काम में लगाना हमारी जिम्मेदारी है।"

आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

जीवन ने मुझे अनेक बार परखा। परिवार का साथ न होना, सीमित संसाधन और अनिश्चित भविष्य - सब सामने थे। लेकिन मैंने सीखा कि रोने से परिस्थितियां नहीं बदलतीं; सबसे बड़ी लड़ाई किसी और से नहीं, स्वयं से होती है।

कॉलेज के बाद बच्चों को नृत्य सिखाया, मेहंदी लगाई और छोटी-छोटी बचत से अपनी साधना के साधन जुटाए। पहली रोलर स्केट तक गुल्लक में जमा सिक्कों से खरीदी। कभी पैदल, कभी साइकिल

और कभी ऑटो से लंबी दूरी तय करके प्रशिक्षण के लिए जाती रही। मेरे दोनों गुरु कठोर अवश्य थे, लेकिन उन्हीं की कठोरता ने मुझे फौलाद बना दिया।

अप्रैल 2004 में ढाका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक प्राप्त किया। 2010 में रोलर स्केट पर कथक की नई विधा को मंच मिला। इसके बाद 24 घंटे लगातार रोलर स्केट पर कथक और फिर 126 घंटे लगातार कथक का विश्व रिकॉर्ड! हर उपलब्धि के पीछे वर्षों की तपस्या थी। 87 घंटे के प्रयास के बाद स्वास्थ्य के कारण रुकना पड़ा, लेकिन मैंने असफलता को अंत नहीं, अगली विजय की तैयारी माना।

मेरी साधना को पहचान मिली और 2016-17 में उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च सम्मान 'यश भारती' से सम्मानित होने का गौरव मिला। 1 मई 2017 को वाराणसी के सांसद एवं भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ। ये सम्मान मेरे लिए व्यक्तिगत गौरव से अधिक मेरी कला, खेल और साधना का सम्मान हैं।

जीवन ने फिर कठोर परीक्षा ली। 10,500 किलोमीटर की यात्रा के दौरान नागपुर के पास मेरा गंभीर एक्सीडेंट हुआ। रीढ़ सहित शरीर की कई हड्डियां प्रभावित हुईं और डॉक्टरों ने लंबे समय तक उठने से मना किया। आत्मबल, इच्छाशक्ति, चिकित्सकीय सहयोग और आयुर्वेदिक उपचार के सहारे लगभग तीन महीने बाद धीरे-धीरे चलना शुरू किया और छह महीने में स्वयं को फिर साधना के लिए तैयार किया।

इसके बाद गंगोत्री से गंगासागर तक रोलर स्केटिंग की यात्रा माँ गंगा को समर्पित करने का संकल्प लिया। श्रीरामलला की ऐतिहासिक प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर काशी से अयोध्या तक राज्य द्वारा भेजे जाने का अवसर भी मेरे लिए संस्कृति, आस्था और राष्ट्र-चेतना से जुड़ा गौरवपूर्ण अनुभव रहा।

2021 में SG से जुड़ने और पूर्वांचल युवा ब्रांड एंबेसडर के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इन सभी यात्राओं ने मुझे एक बात सिखाई - गिरी तो धरती ने थामा, टूटी तो संकल्प ने जोड़ा; हर बार बिखरी जरूर, पर हर बार पहले से अधिक मजबूत होकर खड़ी हुई।

युवाओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

युवाओं से मेरा पहला संदेश है - मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। शॉर्टकट सफलता दे सकता है, लेकिन साधना व्यक्तित्व बनाती है। जिस दिशा को चुनें, उसमें कुछ वर्ष पूरे समर्पण से लगा दीजिए।

सफलता के लिए केवल प्रतिभा और परिश्रम ही नहीं, स्वस्थ शरीर और संतुलित मन भी आवश्यक हैं। मेरा विश्वास है, जो स्वयं स्वस्थ और मानसिक रूप से संतुलित है, वही अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए सार्थक योगदान दे सकता है।

अपनी साधना के दौरान गंगा पार करना, बालू में दौड़ना, योग-व्यायाम और घंटों घुंघरू बाँधकर रियाज करना मेरी दिनचर्या का हिस्सा रहा। मैंने सादगीपूर्ण, प्राकृतिक और देसी आहार को प्राथमिकता दी जैसे गर्म पानी, हल्दी वाला दूध, अंकुरित चने और शुद्ध भोजन मेरी ऊर्जा के आधार रहे।

शरीर साधना का माध्यम है और मन उसकी दिशा; शरीर स्वस्थ, मन स्थिर और संकल्प अडिग हो, तो मनुष्य अपनी सीमाओं से बहुत आगे जा सकता है।

आज युवाओं के पास अवसर और साधन पहले से कहीं अधिक हैं। इसलिए केवल सफल बनना पर्याप्त नहीं; अपनी सफलता को समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाना भी आवश्यक है।

आधुनिक बनिए, आगे बढ़िए, लेकिन अपनी जड़ों से कभी मत कटिए। हमारी संस्कृति केवल पहचान नहीं, हमारी आत्मा है। आप दुनिया के किसी भी कोने में रहें, आपके हृदय में अपनी मातृभूमि के लिए धड़कन बनी रहनी चाहिए।

जिस मिट्टी ने हमें जन्म दिया, उसके प्रति हमारा भी दायित्व है। अपने संस्कार, संस्कृति और राष्ट्रभाव को अगली पीढ़ी तक पहुंचाइए और ऐसा जीवन जीएं कि आपकी उपलब्धियां केवल आपकी न रहें, बल्कि किसी और के लिए प्रेरणा बनें।

कला के माध्यम से आप समाज को क्या दे पा रही हैं?

मेरी कला का उद्देश्य भी अब केवल मंच की तालियों तक सीमित नहीं है। मैं विशेष आवश्यकता वाले एवं दिव्यांग बच्चों के लिए Dance as Therapy (डांस एज थिरैपी) के माध्यम से कार्य कर रही हूँ, ताकि कला उनके जीवन में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति और आनंद का माध्यम बन सके। सबसे बड़ी उपलब्धि यह नहीं कि दुनिया आपके नाम से परिचित हो; सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि आपके कारण किसी और की दुनिया बदल जाए। मेरी यात्रा अभी शेष है। ईश्वर ने जीवन में जो भी पथ दिखाया, मैं उस पर पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ चलती गई।

आपकी इस यात्रा में किस किस का

महती योगदान रहा है?

इसी यात्रा में मुझे वंदनीय शांतक्का जी, अखिल भारतीय प्रमुख संचालिका, राष्ट्र सेविका समिति का सान्निध्य मिला। उन्होंने मुझे संघ परिवार से जुड़ने का मार्ग दिया। इसके पश्चात् मैंने प्रथम वर्ष संघ शिक्षा वर्ग का प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपनी कला, खेल तथा ऊर्जा को राष्ट्रकार्य के लिए समर्पित करने का संकल्प और दृढ़ किया। आज अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, क्रीड़ा भारती एवं मातृशक्ति के विभिन्न दायित्वों के माध्यम से समाज और राष्ट्र निर्माण के कार्यों से जुड़कर सेवा का अवसर मिल रहा है।

मैं अपने गुरुओं, चिकित्सकों, आहार विशेषज्ञों, परिवारजनों, सहयोगियों और उन असंख्य शुभचिंतकों के प्रति हृदय की गहराइयों से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरे लक्ष्य को अपना लक्ष्य समझकर मेरा साथ दिया। उन लोगों के प्रति भी नतमस्तक हूँ, जो मुझे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे, फिर भी मेरे लिए प्रार्थना करते रहे।

मैं बच्चों से हमेशा कहती हूँ- "अपने जीवन में ऐसा कुछ करिए कि आपकी पहचान केवल आपके नाम से नहीं, आपके कर्मों से हो; जब लोग आपका उल्लेख करें, तो उसमें सम्मान हो और आपकी कहानी किसी दूसरे के जीवन में प्रेरणा बन जाए।" मेरे लिए सफलता कोई अंतिम पड़ाव नहीं, एक सतत यात्रा है। अभी अनेक लक्ष्य शेष हैं, अनेक सपने साकार होने बाकी हैं। समाज एवं राष्ट्र के लिए बहुत कुछ करना बाकी है।

मैं गिरना जानती हूँ, इसलिए उठना भी जानती हूँ। मैं संघर्ष से गुजरी हूँ, इसलिए संकल्प की शक्ति पहचानती हूँ।

मैं रुकना नहीं जानती, क्योंकि मेरी मंजिल केवल मेरी नहीं बल्कि समाज, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ी है।

संकल्प यदि अडिग हो, तो परिस्थितियाँ पथ बन जाती हैं। साधना यदि सच्ची हो, तो असंभव भी संभावना बन जाता है।

मेरी यात्रा अभी थमी नहीं है।

मेरी मंजिलें अभी बाकी हैं।

और जब तक साँस है,

तब तक साधना, सेवा और राष्ट्र के प्रति समर्पण का यह पथ चलता रहेगा। ◘

स्वयं सहायता समूह से बदली सुभावती की पहचान

उत्तर प्रदेश के भदोही जिले के औराई विकास क्षेत्र के गरौली गांव की रहने वाली सुभावती देवी की कहानी मेहनत, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की प्रेरक मिसाल है। कुछ समय पहले तक परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि पति की मात्र पांच हजार रुपये की नौकरी और छप्पर के घर में परिवार का गुजारा मुश्किल से हो पाता था। लेकिन सुभावती ने परिस्थितियों के आगे हार मानने के बजाय अपनी मेहनत और हुनर को अपनी ताकत बनाया।

वर्ष 2021 के आसपास सुभावती राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ीं। उन्होंने प्रज्ञा जगप्रभा स्वयं सहायता समूह का गठन किया और धीरे-धीरे अपनी आजीविका के नए साधन तलाशने शुरू किए। उन्होंने मशरूम उत्पादन के साथ-साथ आंवला, बेल और आम का मुरब्बा तथा विभिन्न प्रकार के अचार तैयार करने का काम शुरू किया। शुरुआत भले ही छोटे स्तर से हुई, लेकिन उनके प्रयासों ने जल्द ही सफलता का रूप लेना शुरू कर दिया।

सुभावती की मेहनत को उस समय और बड़ा अवसर मिला, जब वह लालानगर स्थित वैदिक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी (एफपीओ) से जुड़ीं। एफपीओ के माध्यम से उनके उत्पादों को एक बेहतर बाजार मिला। इससे न केवल उनकी बिक्री बढ़ी, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी नई उड़ान मिली। मशरूम उत्पादन आज सुभावती की पहचान बन चुका है। वह बटन और ओएस्टर यानी सीप के आकार वाले मशरूम की खेती करती हैं। उनके द्वारा तैयार मशरूम की मांग बाजार में अच्छी है। थोक बाजार में यह लगभग 80 रुपये प्रति किलोग्राम, खुले बाजार में करीब 200 रुपये प्रति किलोग्राम तथा सूखा मशरूम लगभग 800 रुपये प्रति किलोग्राम तक बिक जाता है। उनके यहां तैयार मशरूम का उपयोग परिषदीय विद्यालयों के मिड-डे मील में भी किया जा रहा है। यह उनके उत्पाद की गुणवत्ता और स्वीकार्यता का प्रमाण है।

मशरूम के अलावा सुभावती विशेष आर्डर पर अचार तैयार करती हैं और आंवला, बेल तथा आम का मुरब्बा भी बनाती हैं। इन छोटे-छोटे प्रयासों ने मिलकर उनकी आय का मजबूत आधार तैयार किया है। आज वह केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में सफल नहीं हुई हैं, बल्कि गांव की दूसरी महिलाओं के लिए भी आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखा रही हैं।

उनकी इस सफलता में उनके पति श्री संतोष मौर्य का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा है। संतोष स्वयं मशरूम किसान प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं और सुभावती के काम में उनका पूरा सहयोग रहता है। पति-पत्नी ने मिलकर मेहनत, प्रशिक्षण और अनुभव को आजीविका का माध्यम बनाया है।

सुभावती की कहानी यह साबित करती है कि आत्मनिर्भर बनने के लिए हमेशा बड़े संसाधनों की जरूरत नहीं होती है। सही अवसर, प्रशिक्षण, मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो छोटे से गांव की महिला भी अपनी पहचान बना सकती है। छप्पर के घर से शुरू हुई सुभावती की यात्रा आज आत्मनिर्भरता और सम्मान तक पहुंच चुकी है। उनकी सफलता ग्रामीण महिलाओं के लिए यही संदेश देती है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, हौसला और मेहनत उन्हें बदलने की ताकत रखते हैं।

न्याय दिलाने वाली नायिका!

चंदौली निवासी अधिवकता **सारिका दुबे** का मानना है कि आज का युवा प्रतिभाशाली है। उसके पास ज्ञान, तकनीक तथा अवसरों की कोई कमी नहीं है। आधुनिकता की दौड़ में मानवता और सामाजिक जिम्मेदारी पीछे छूटती जा रही है। युवाओं से उनकी अपील है कि "सफल जरूर बनिए, लेकिन सफल होने के साथ सार्थक भी बनिए। अपने लिए जीना जरूरी है, लेकिन दूसरों के लिए जीना ही जीवन को वास्तविक अर्थ देता है।" सारिका दुबे इस बात का उदाहरण हैं कि बदलाव के लिए हमेशा बड़े संसाधनों की जरूरत नहीं होती। उसके लिए एक संवेदनशील दृष्टि पर्याप्त है।

कानून की पढ़ाई ने सारिका दुबे को अधिकारों की समझ दी, लेकिन उनके संवेदनशील मन ने उन्हें उन लोगों तक पहुंचने का रास्ता दिखाया, जिन्हें न्याय, सहारे और सम्मान की सबसे अधिक जरूरत थी। चंदौली जिले के नियामताबाद विकासखंड के धूसखास गांव से निकलकर समाज सेवा और महिला अधिकारों के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने वाली सारिका दुबे की कहानी संघर्ष, संवेदना और दृढ़ इच्छाशक्ति की कहानी है।

सारिका का प्रारंभिक जीवन एक गांव के संयुक्त परिवार में बीता। उस समय गांव में शिक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे और एक लड़की के लिए आगे बढ़कर पढ़ाई करना आसान नहीं था। परिवार की जिम्मेदारियां, सामाजिक सोच और सीमित अवसर उनके सामने लगातार चुनौतियां खड़ी करते रहे। उन्होंने परिस्थितियों को अपनी राह की बाधा नहीं बनने दिया। संघर्ष और मेहनत के बल पर अपनी शिक्षा पूरी की और आगे बढ़ने का संकल्प बनाए रखा।

गांव के उस दौर को याद करते हुए सारिका मानती हैं कि एक लड़की का अपने पैरों पर खड़ा होकर बाहर निकलना अपने आप में बड़ी चुनौती था। उनके दादाजी काफी सख्त थे। अकेले बाहर जाना, देर तक घर से बाहर रहना और सामाजिक कार्यों के लिए समय देना सहज नहीं था। इसके लिए समाज के ताने भी सुनने को मिले। लेकिन सारिका ने इनको रुकावट नहीं बनने दिया।

समाज सेवा की प्रेरणा उन्हें अपने माता-पिता से मिली। बचपन से उन्होंने अपने माता-पिता को जरूरतमंद लोगों की मदद करते देखा। किसी के काम आना और किसी के जीवन में थोड़ी-सी भी सकारात्मकता लाना उन्हें हमेशा भीतर से संतोष देता रहा।

पेशे से अधिवक्ता सारिका ने अपने पेशे को केवल आजीविका का माध्यम नहीं बनने दिया। उनका मानना है कि कानून की वास्तविक सार्थकता तभी है, जब वह किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन में न्याय और सम्मान लेकर आए। उन्होंने विशेष रूप से उन महिलाओं का हाथ थामा, जो आर्थिक या सामाजिक परिस्थितियों के कारण अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठा पातीं। अब तक 160 से अधिक पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी हैं। आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को वह निशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराती हैं।

वर्ष 2021 में उन्होंने 'खुशी की उड़ान' संस्था की शुरुआत की। इसका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों को साथ जोड़कर सेवा के ऐसे प्रयास करना था, जिनका वास्तविक लाभ जरूरतमंदों तक पहुंच सके। संस्था के माध्यम से पूर्वांचल के कई जिलों में रक्तदान, स्वास्थ्य जागरूकता, महिला सशक्तीकरण, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, दिव्यांगजन सहायता और जरूरतमंद परिवारों की मदद जैसे कार्य किए जा रहे हैं।

रक्तदान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए इंग्लैंड में उन्हें 'वर्ल्ड रिकॉर्ड ऑफ एक्सीलेंस' सम्मान से नवाजा गया। उनकी संस्था को नेशनल सोशल इम्पैक्ट अवार्ड-2026 से सम्मानित किया गया।

सारिका के सेवा कार्यों का एक महत्वपूर्ण पक्ष युवाओं को समाजसेवा से जोड़ना है। वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के लगभग 250 विद्यार्थी उनकी संस्था से जुड़कर इंटर्नशिप कर रहे हैं। सामाजिक कार्य, कानूनी जागरूकता, कौशल विकास, नेतृत्व क्षमता और सामुदायिक विकास के व्यावहारिक अनुभव के साथ विद्यार्थियों को वृद्धाश्रम और कुष्ठ आश्रम जैसे स्थानों का भ्रमण भी कराया जाता है।

सारिका मानती हैं कि संवेदना समझाई नहीं जा सकती। जब युवा समाज के उस वर्ग के बीच पहुंचते हैं, जो अकेलेपन या अभाव से जूझ रहा है, तभी उनके भीतर सेवा और करुणा की भावना अपने आप आती है।

नीलू मिश्रा : 'उड़ान' अभी बाकी है

102 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पदक अपने नाम किया

एथलीट नीलू मिश्रा की कहानी उन महिलाओं के लिए विशेष संदेश देती है जो विवाह, मातृत्व, स्वास्थ्य या उम्र के बाद अपने सपनों को पीछे छोड़ देती हैं। नीलू ने साबित किया कि जीवन में वापसी के लिए उम्र या परिस्थितियाँ अंतिम निर्णय नहीं होतीं बल्कि निर्णय हमारा संकल्प करता है।

आज भी उनका सफर जारी है। 102 से अधिक पदकों के बाद भी उनके कदम रुके नहीं हैं, क्योंकि उनके लिए असली जीत केवल पदक जीतना नहीं, बल्कि हर उस महिला को यह विश्वास दिलाना है कि– "सपनों की कोई उम्र नहीं होती। यदि संकल्प जीवित है, तो जीवन में नई शुरुआत हमेशा संभव है।"

कुछ कहानियाँ जीत की नहीं, जिजीविषा की कहानी होती हैं। कुछ पदक केवल खेल प्रतियोगिता में हासिल नहीं होते, वे उन संघर्षों पर जीत के प्रतीक होते हैं जिन्हें दुनिया शायद देख भी नहीं पाती। उत्तर प्रदेश की अंतरराष्ट्रीय मास्टर एथलीट श्रीमती नीलू मिश्रा की कहानी ऐसी ही प्रेरक यात्रा है जहाँ बीमारी, बढ़ता वजन, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और वर्षों तक खेल से दूर रहना भी उनके संकल्प को रोक नहीं सका।

नीलू मिश्रा ने विवाह और मातृत्व के बाद लगभग 14 वर्षों के अंतराल के पश्चात खेल के मैदान में वापसी की। उस समय परिस्थितियाँ उनके पक्ष में नहीं थीं। किडनी की गंभीर समस्या, मोटापे से संघर्ष और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के बीच उन्हें सक्रिय खेलों में लौटने को लेकर निराश किया गया। यहाँ तक कि उनके सामने अपने स्वास्थ्य को लेकर भी बड़े प्रश्न खड़े किए गए। लेकिन नीलू ने परिस्थितियों को अपनी सीमा मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने स्वयं को फिर से तैयार किया और खेल के मैदान में ऐसी वापसी की जिसने संदेह को विश्वास में और असंभव को उपलब्धि में बदल दिया।

आज नीलू मिश्रा के नाम 102 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक दर्ज हैं। इनमें देश के लिए जीते गए स्वर्ण पदक उनके लिए विशेष गौरव का विषय हैं। उनका कहना है कि देश के लिए स्वर्ण जीतना ही उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा और जुनून है। उनकी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों में 2009 में फिनलैंड के लाहती में आयोजित वर्ल्ड मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में विश्व पदक हासिल करना उल्लेखनीय है। वे कई बार अंतरराष्ट्रीय एशियन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। महिला टीम की कप्तान के रूप में भी देश का नेतृत्व किया है। उनकी उपलब्धियों को विभिन्न सम्मानों ने भी पहचान दी है। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार का रानी लक्ष्मीबाई वीरता पुरस्कार, मलाला पुरस्कार तथा Marvelous Personality of India Award जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। वे Beauty Queen Champion—Asia & India का खिताब भी हासिल कर चुकी हैं।

नीलू मिश्रा के लिए खेल केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का माध्यम नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने और विशेषकर महिलाओं को प्रेरित करने का माध्यम भी है। वे सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं और विभिन्न खेल संगठनों में अध्यक्ष के रूप में अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रही हैं। महिला एवं बाल कल्याण से जुड़े कार्यों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही है। वे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान से जुड़ी हैं और महिलाओं एवं बालिकाओं के अधिकार तथा विकास से जुड़े संदेश को आगे बढ़ाती हैं। उन्होंने निर्वाचन आयोग के स्वीप (SVEEP) अभियान, वाराणसी में ब्रांड एंबेसडर के रूप में भी भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त नगर निगम वाराणसी और जिला पंचायत विभाग के स्वच्छता अभियान से जुड़कर स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता फैलाने में योगदान दिया।

बिजनौर निवासी **डॉ. मिताली आत्रेय** की कहानी हमें यह याद दिलाती है कि डॉक्टर होना केवल बीमारी का इलाज करना नहीं है।असली सेवा तब होती है, जब चिकित्सा के साथ संवेदना जुड़ती है और किसी जरूरतमंद के लिए इलाज आर्थिक बोझ नहीं, बल्कि सम्मान के साथ मिलने वाला अधिकार बन जाता है। उनकी यात्रा में पिता की स्मृति प्रेरणा बनी, चिकित्सा उनका माध्यम बनी और सेवा उनका संकल्प। 'सेवा का उद्देश्य केवल उपचार नहीं, बल्कि जरूरतमंद तक सम्मानपूर्वक चिकित्सा पहुंचाना है।' मिताली उन चिकित्सकों की प्रेरक पंक्ति में एक ऐसा नाम हैं, जिनके लिए सफलता केवल पेशेवर उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उन जीवनों से मापी जाती है जिनमें उन्होंने फिर से रोशनी जगाई।

दृष्टि से आगे, सेवा की रोशनी

किसी की जिंदगी में रोशनी लौटाना केवल एक चिकित्सकीय उपलब्धि नहीं, बल्कि मानवता की सबसे खूबसूरत सेवाओं में से एक है। डॉ. मिताली आत्रेय ने नेत्र चिकित्सा को केवल अपने पेशे के रूप में नहीं चुना, बल्कि इसे जरूरतमंदों के जीवन में उम्मीद और सम्मान लौटाने का माध्यम बनाया।

बिजनौर में जन्मीं डॉ. मिताली आत्रेय ने वर्ष 2014 में पं. बी.डी. शर्मा यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज, रोहतक से एमबीबीएस (MBBS) की शिक्षा पूरी की। इसके बाद वर्ष 2018 में उत्तर प्रदेश ग्रामीण आयुर्विज्ञान संस्थान एवं अनुसंधान, सैफई से एमएस (MS) (Ophthalmology) की विशेषज्ञता हासिल की। अपनी विशेषज्ञता को और मजबूत करने के लिए उन्होंने ऋषिकेश के निर्मल आश्रम आई इंस्टीट्यूट से Comprehensive Fellowship और Medical Retina Fellowship तथा पुणे से Phaco Fellowship पूरी की।

लेकिन डॉ. मिताली की कहानी केवल डिग्रियों और विशेषज्ञताओं तक सीमित नहीं है। इसके पीछे संस्कार, परिवार और सेवा की एक गहरी भावना है। अपने स्वर्गीय पिता पं. चंद्रकान्त आत्रेय की स्मृति को जीवंत रखने के संकल्प ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी। वर्ष 2018 में उन्होंने अपने पति डॉ. अवधेश वशिष्ठ के साथ मिलकर पं. चंद्रकान्त आत्रेय मेमोरियल मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल एवं ट्रॉमा सेंटर की स्थापना की। यह संस्थान उनके लिए सिर्फ एक अस्पताल नहीं, बल्कि पिता की स्मृति को जनसेवा में बदलने का प्रयास है।

वर्ष 2021 से डॉ. मिताली नेत्र सर्जन के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं। चिकित्सा के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद मरीजों की सहायता उनके कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। PM-JAY के अंतर्गत पिछले छह वर्षों से जरूरतमंद मरीजों को निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है और अब तक 2800 से अधिक निःशुल्क मोतियाबिंद सर्जरी की जा चुकी हैं। हर गुरुवार गरीब एवं जरूरतमंद मरीजों के लिए निःशुल्क ओपीडी (OPD) संचालित करना उनकी सेवा भावना को और स्पष्ट करता है।

डॉ. मिताली की प्रेरणा उनके परिवार और संस्कारों से भी गहराई से जुड़ी है। उनकी मां श्रीमती मीरा आत्रेय और स्वर्गीय पिता पं. चंद्रकान्त आत्रेय उनके जीवन की प्रमुख प्रेरणाओं में रहे हैं। माता-पिता से मिले संस्कार, अनुशासन और जीवन-मूल्यों ने उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की शक्ति दी। अपने संयुक्त परिवार और तीन बेटियों की जिम्मेदारियों के साथ चिकित्सा एवं जनसेवा को निरंतर आगे बढ़ाना उनके व्यक्तित्व के संतुलन को दर्शाता है।

उनकी सेवा-यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है। भविष्य के लिए उनका संकल्प और व्यापक है। ऐसे मरीजों तक चिकित्सा सुविधा पहुंचाना जो आर्थिक कारणों से उपचार से वंचित रह जाते हैं, वरिष्ठ नागरिकों के लिए रियायती नेत्र उपचार उपलब्ध कराना, 70 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए निःशुल्क ओपीडी की दिशा में काम करना और ग्रामीण क्षेत्रों तक स्वास्थ्य एवं नेत्र चिकित्सा शिविरों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उपचार पहुंचाना।

लोक चित्रकला को सजीव किया

गोरखपुर में जन्मी **डॉ. कुमुद सिंह** संस्कार भारती अवध प्रांत में लोक कला विद्या संयोजिका हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय कला मंच की सह संयोजिका रह चुकी हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में इनके कला–योगदान को देखते हुए शोधार्थियों ने अपने शोध में उनकी कृतियों को शामिल किया है। उन पर आलेख भी प्रस्तुत किए हैं। उनके कार्यों को देखते इन्हें उत्तर प्रदेश लोक एवं जनजाति संस्कृति संस्थान, लखनऊ में राज्यपाल द्वारा सदस्य मनोनीत किया गया है। एनसीईआरटी दिल्ली में बुक डेवलपमेंट कमेटी में कला– पुस्तक के लिए सदस्य मनोनीत हैं। एनसीजेडसीसी इलाहाबाद में अनुदान कमेटी में सदस्य हैं।

लोक कला के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाली डॉ. कुमुद सिंह का जन्म 10 जून 1964 को गोरखपुर में हुआ । अपनी मां द्वारा उकेरी गई परंपरागत चित्रों को देखते हुए पलीं बढ़ीं, धीरे-धीरे उन्हीं चित्रों में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। बचपन से ही पूर्वांचल के भोजपुरी लोक चित्रकला जैसे कोहबर लिखाई ,चौक पूरना इत्यादि को चित्रों में सृजित करते हुए अपनी रुचि को देखते हुए चित्रकला विषय में ही दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के ललित कला एवं संगीत विभाग से स्नातकोत्तर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। विभाग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। एमए करने के पश्चात इनका विवाह देवरिया के डॉ बीपी सिंह के साथ हुआ। वहां भी ग्रामीण परिवेश एवं सासू मां द्वारा कलात्मक चौक पूरना, लोकगीत गायन को देखते हुए रुचि में वृद्धि हुई। ससुराल में कलात्मक वातावरण प्राप्त होने पर 'पूर्वांचल के लोकोत्सवों में प्रयुक्त ग्रामीण चित्रण एवं कृतियां : एक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर इन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग से शोध कार्य किया। शोध कार्य करते हुए पूर्वांचल की लोक कला की विशेषताओं को जाना-समझा। परंपरागत अनेक कलाकारों से परिचय हुआ। लोक कला के क्षेत्र में ही कार्य करने प्रण किया। तब से लेकर आज तक गोरखपुर, देवरिया, फैजाबाद, वाराणसी, लखनऊ, दिल्ली के साथ-साथ फ्रांस, नेपाल आदि देशों में एकल एवं सामूहिक प्रदर्शनियों में प्रतिभाग किया।

राष्ट्रीय सेमिनार संगोष्ठी में कला विषय शोध प्रपत्र प्रस्तुतिकरण के साथ ही साथ बहुत सारे विद्यार्थियों को लोक कला के प्रति आकर्षित करते हुए उनको प्रशिक्षण भी दिया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा अयोध्या और कोरिया के सांस्कृतिक संबंध विषय पर इन्हें माइनर रिसर्च फैलोशिप 2011 में मिली। साकेत महाविद्यालय अयोध्या में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहते हुए, अध्यक्ष पद को संभालते हुए भोजपुरी और अवधी क्षेत्र के लोक कला पर विशेष कार्य किया। उन लोक चित्रों को संरक्षित एवं संवर्धित करने का कार्य किया। ललित कला अकादमी लखनऊ, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं में संयोजक के रूप में कुशलता पूर्वक कार्य किया। 'कला-भाव' नामक लोक कला आधारित पुस्तक का प्रकाशन 2015 में किया। 2026 में अयोध्या की नौ रचनाकार महिलाओं की कलाकृतियों के साथ 'सरयू कला प्रवाह' नामक पुस्तक का संपादन कार्य किया। नेपाल में अवधी कला प्रशिक्षण के रूप में आमंत्रित किया गया। आकाशवाणी दूरदर्शन से निरंतर लोक कला के क्षेत्र में लोक कला विषय वार्ताओं का प्रसारण हुआ। आदर्श माध्यमिक विद्यालय, जन भवन लखनऊ में भारतीय भाषा समर कैंप 2026 में प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया। मध्य प्रदेश जनजाति संग्रहालय में उत्तर प्रदेश के कोहबर चित्र परंपरा के

अंकन के लिए 22 से 24 जून 2026 तक आमंत्रित किया गया। इनकी कलाकृतियां राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ, जनजातिय संग्रहालय भोपाल, गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर, शिवाता फाउंडेशन नेपाल तथा अनेक स्थानों पर संग्रहित हैं। माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को पूर्वांचल की लोक कला से संबंधित दो चित्रों को भेंट करते हुए उनकी विशेषताओं पर वार्ता किया। अनेक विश्वविद्यालय एवं स्कूलों में बच्चों को पूर्वांचल की भोजपुरी लोक चित्रों में प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही हैं। अद्यतन विभिन्न किताबों में इनको चित्रों का प्रकाशन भी हुआ है। पद्मश्री डॉ विद्या विंदु सिंह जी की पुस्तक अवधी लोकगीत विरासत का आवरण चित्र आपके द्वारा निर्मित किया गया है। अनेक पुस्तकों में लोक चित्र आधारित लेख का प्रकाशन हुआ है। निरंतर आने वाली पीढ़ी को लोक चित्रों के बारे में, हमारे परंपरागत लोक कलाओं के बारे में प्रशिक्षित कर रही है। उन्हें जानकारी भी दे रही हैं कि ये लोक कलाएं हमारे लिए किस प्रकार से उपयोगी हैं, उनका विस्तार कर रहीं हैं। उनके कार्यों को देखते हुए इन्हें अनेक सम्मान से सम्मानित किया गया है।

लोक कला कल और आज डॉ. कुमुद सिंह के लोक चित्रों के संदर्भ में - शोधार्थी सत्येंद्र कुमार सिंह कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश में 2018 में लेख प्रस्तुत किया।

'जनकला का उभरता स्वरूप डॉ. कुमुद सिंह के चित्रों के विशेष सन्दर्भ में, अंतरराष्ट्रीय जनरल में शोधार्थी सत्येंद्र कुमार द्वारा प्रस्तुत और प्रकाशित किया गया।' कैमूर के भित्ति चित्र के फॉर्म और परंपरा इग्नू एमएएफसीएस प्रोजेक्ट वर्क डॉ. आशुतोष कुमार तिवारी ने डॉ. कुमुद सिंह के चित्रों को शामिल किया । शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय लखनऊ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश इत्यादि के शोधार्थी कार्य कर रहे हैं ।

डॉ. कुमुद सिंह के जीवन परिचय का प्रकाशन संत विवेक पुस्तक संपादक डॉ विद्या बिंदु सिंह तथा शहरनामा गोरखपुर नई पृष्ठ नए संदर्भ संपादक डॉ वेद प्रकाश पांडे जी की पुस्तक में प्रकाशित किया गया। ◘

हरियाली की सहेली सोनिका

उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा विभाग में शिक्षामित्र के रूप में कार्यरत सोनिका गुप्ता का जीवन पर्यावरण संरक्षण, समाज सेवा और पारिवारिक दायित्वों के सुंदर समन्वय की एक अनूठी मिसाल है। शाहजहांपुर जनपद के ग्राम रफियाबाद (कलान) में पांच अगस्त 1982 को जन्मी सोनिका गुप्ता के पिता शिवनारायण लाल गुप्ता और माता मीना गुप्ता हैं। उन्होंने फर्रुखाबाद से शिक्षाशास्त्र में परास्नातक (M.A.) की उपाधि प्राप्त की है। वर्तमान में वह ब्लॉक कलान के कम्पोजिट विद्यालय में शिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं।

वर्ष 2009 में बदायूं निवासी सुनील कुमार के साथ विवाह के बाद सोनिका गुप्ता के सेवा संकल्प को एक नई दिशा मिली। तीन बच्चों की माता के रूप में अपने पारिवारिक कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाते हुए, उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दी। कहने और सुनने में यह यात्रा जितनी सरल प्रतीत होती है, वास्तव में यह राह तमाम झंझावातों और चुनौतियों से भरी रही है। प्रतिदिन कार्यस्थल से घर तक 110 किलोमीटर का सफर, कमजोर आर्थिक स्थिति, घर-परिवार की जिम्मेदारियां और तीन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा - इन सब के बीच नन्हें पौधों को रोपकर उन्हें विशाल वृक्ष बनाना बेहद कठिन था। लेकिन सोनिका और उनके पति ने 'रामायण की गिलहरी' से प्रेरणा लेते हुए अपने इस हरित प्रयास को नाम दिया - 'एक गिलहरी' (The Natural Oxygen Generator)

मानवता की सेवा के प्रति अटूट निष्ठा रखते हुए सोनिका गुप्ता और उनके पति ने वर्ष 2016 में मरणोपरांत नेत्रदान का संकल्प लिया। केवल औपचारिक पौधारोपण से इतर, सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित पौधारोपण के उद्देश्य से उन्होंने 2018 में आजीवन पौधारोपण का संकल्प लिया।

अपनी बाइक और स्कूटी से प्रतिदिन के संघर्ष के बीच गांव-गांव और नगर-नगर घूमकर उन्होंने बदायूं, शाहजहांपुर और बरेली के विभिन्न हिस्सों में 30,000 से अधिक पौधे लगाए हैं, जिनमें से आधे से अधिक आज विशाल वृक्ष बन चुके हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान जब पर्यावरण का दोहन जारी था, तब अगस्त 2021 में अपने पति के जन्म दिवस पर उन्होंने राजकीय मेडिकल कॉलेज, बदायूं को मरणोपरांत देहदान करने का संकल्प लिया ताकि अंतिम संस्कार में लकड़ी का एक टुकड़ा भी खर्च न हो।

सोनिका गुप्ता का स्पष्ट मानना है कि जीवन के हर अवसर को प्रकृति से जोड़ा जाना चाहिए। वह लोगों को प्रेरित करती हैं कि जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ, विवाह समारोह, नव-दंपत्तियों की नई शुरुआत, गृह प्रवेश या पितरों की स्मृति जैसे हर खास पल पर पौधारोपण अवश्य करें। इसके साथ ही, वह सिंगल-यूज प्लास्टिक का पूरी तरह बहिष्कार कर कपड़े या जूट के थैलों के इस्तेमाल पर जोर देती हैं। उनका कहना है कि आज पौधारोपण मात्र एक 'फैशन' बनता जा रहा है और सतत विकास की बातें केवल वातानुकूलित कमरों तक सीमित रह गई हैं।

एक गृहिणी, मां और शिक्षामित्र की जिम्मेदारियों को निभाते हुए, 110 किमी का दैनिक सफर तय करने के बावजूद 'एक गिलहरी' बनकर जमीनी स्तर पर हरियाली फैलाने वाली सोनिका गुप्ता का जीवन यह संदेश देता है कि यदि इरादे मजबूत हों,तो छोटे छोटे दैनिक प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं।

सहारनपुर में पली-बढ़ीं प्रीति जांगड़ा की कहानी संघर्ष को संकल्प में बदलने की कहानी है। इनका बचपन नाना-नानी के घर बीता और पढ़ाई छठी कक्षा से शुरू हुई। परिवार में उच्च शिक्षा हासिल करने वाली पहली पीढ़ी की बेटी के रूप में उनके लिए आगे की पढ़ाई आसान नहीं थी। सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं के बावजूद उन्होंने अपने सपनों को जीवित रखा और टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान तक पहुंचीं। आज वे 'लाल सखी : द वुमंस वॉइस' के माध्यम से महिलाओं के स्वास्थ्य, मासिक धर्म स्वच्छता, शिक्षा और अधिकारों के लिए काम कर रही हैं। उनका 'धरती' अभियान कई राज्यों तक पहुंच चुका है।

साक्षात्कार /प्रीति जांगड़ा

संघर्ष को संकल्प में बदला

आपके जीवन का पहला बड़ा संघर्ष क्या था?

दूसरी बेटी होने के कारण मैं नाना-नानी के पास पली। बाद में जब भाई-बहनों की पढ़ाई में अंतर देखा तो सवाल उठे। वहीं से समझ आया कि बेटी होना किसी अवसर को कम नहीं कर सकता और अपने लिए बेहतर जीवन का सपना देखा।

कब लगा कि यह केवल आपकी कहानी नहीं है?

कमला भसीन को पढ़ते समय पहली बार 'पितृसत्ता' शब्द समझ आया। तब एहसास हुआ कि जिन परिस्थितियों को मैं अपना व्यक्तिगत दुर्भाग्य समझती थी, वे एक बड़ी सामाजिक सोच का हिस्सा हैं। यहीं से महिलाओं के मुद्दों पर काम करने की दिशा मिली।

उच्च शिक्षा तक पहुंचने का सफर कैसा रहा?

आसान नहीं था। परिवार में उच्च शिक्षा की परंपरा नहीं थी और मुझे कई सामाजिक-पारिवारिक बाधाओं का सामना करना पड़ा। मैंने अपने सपने को छोड़ा नहीं। टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान में प्रवेश मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ बना।

वहां पहुंचने के बाद भी चुनौतियां रहीं?

बिल्कुल। भाषा, वातावरण और सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण खुद को साबित करना पड़ा। मैंने सीखा कि अपनी पहचान को लेकर संकोच करने के बजाय उसे अपनी ताकत बनाना चाहिए।

नौकरी के अनुभव ने आपको क्या सिखाया?

यह सिखाया कि अन्याय को सामान्य मान लेना समाधान नहीं है। मैंने कार्यस्थल पर भेदभाव का विरोध किया और अपने अधिकार के लिए आवाज उठाई। शायद उसी अनुभव ने आगे चलकर दूसरी महिलाओं की आवाज बनने की ताकत दी।

'धरती' अभियान की सोच कैसे आई?

ग्रामीण महिलाओं के साथ काम करते हुए महसूस किया कि मासिक धर्म केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं, बल्कि गरीबी, गरिमा, शिक्षा और आत्मनिर्भरता से भी जुड़ा है। जब नौकरी में मेरे विचारों को बार-बार खारिज किया गया तो मैंने नौकरी छोड़कर अपनी बचत से 'लाल सखी' की शुरुआत की।

'धरती' की सबसे बड़ी उपलब्धि?

मेरे लिए सफलता तब है जब कोई महिला अपने स्वास्थ्य के बारे में निर्णय खुद लेने लगे। मध्य प्रदेश के खारपा गांव में हमने लगातार तीन वर्ष काम किया। महिलाओं ने कपड़े से मासिक धर्म कप तक का सफर तय किया। यही मेरे लिए वास्तविक बदलाव है।

आज आपकी संस्था किस मुकाम पर है?

हमारा काम अब कई राज्यों तक पहुंच चुका है। गुजरात में हमारे मॉडल को सरकार ने अपनाया है। लखनऊ में कार्यालय काम कर रहा है और जल्द ही गोरखपुर में भी विस्तार होने जा रहा है। लेकिन असली उपलब्धि वे महिलाएं हैं जो अपने समुदाय में बदलाव की आवाज बन रही हैं।

सफलता को आप कैसे परिभाषित करती हैं?

सफलता यह नहीं कि कितने लोग आपको जानते हैं। सफलता तब है जब किसी लड़की को अपने सपने के लिए संघर्ष की अंतिम सीमा तक न जाना पड़े और कोई महिला अपने शरीर, स्वास्थ्य और अधिकारों पर बात करने में शर्म महसूस न करे।

खुद के लिए समय कैसे निकालती हैं?

मुझे कविता पढ़ना-लिखना पसंद है और प्रकृति से गहरा लगाव है। पेड़-पौधों, खुले आसमान और शांत वातावरण के बीच मुझे नई ऊर्जा मिलती है।

आज की बेटियों और महिलाओं के लिए आपका संदेश?

महिला सशक्तीकरण केवल महिलाओं की लड़ाई नहीं है; लड़कों की परवरिश और सोच में बदलाव भी उतना ही जरूरी है। इसके लिए महिलाओं को मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से मजबूत होना होगा। इस राह में कभी सुविधा, कभी रिश्तों और कभी संसाधनों का त्याग करना पड़ सकता है, लेकिन एक महिला का साहस आने वाली पीढ़ियों की तस्वीर बदल सकता है। अपने लिए खड़ी होने वाली हर महिला, किसी दूसरी महिला के लिए रास्ता बनाती है।

AZZURRO SPACES
ARCHITECTURE ◆ INTERIOR ◆ TURNKEY

ELEVATE YOUR HOME

OUR SERVICES

CUSTOMIZED PLANNING PACKAGES
Consultancy only — 2D + 3D rendering

FULL-SERVICE EXECUTION
Planning + on-site material & team coordination

TURNKEY SOLUTIONS
Stress-free 'Ready-to-Live' completion

CONTACT US | +91 88007 30804

'सूरज समूह' से गरीबों के जीवन में आया सबेरा

बिजनौर जिले के गाँव धनौरा, नजीबाबाद की रहने वाली **विपिन देवी** की यात्रा साबित करती है कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक मजबूती का नाम नहीं, बल्कि अपने निर्णय लेने और दूसरों को आगे बढ़ाने की क्षमता का भी नाम है। स्वयं सहायता समूह से शुरू हुआ उनका सफर आज इलेक्ट्रिक स्कूटी के व्यवसाय तक पहुँच चुका है। उनका सरकार से भी आग्रह है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी बीसी सखी, बीमा सखी, बैंक सखी जैसी महिलाओं को इलेक्ट्रिक स्कूटी उपलब्ध कराने के लिए ऐसी योजनाएँ बनाई जाएँ, जिससे वे अपने काम को और बेहतर ढंग से आगे बढ़ा सकें।

समय कभी एक जैसा नहीं रहता, इसलिए हमें अपने हौसले को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए।" जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों से निकलकर न केवल अपने लिए रोजगार का रास्ता बनाया, बल्कि अनेक महिलाओं को भी आत्मनिर्भरता की राह दिखाई। ऐसा मानने वाली विपिनदेवी, पत्नी जयप्रकाश, की शादी वर्ष 2005 में छोटी उम्र में हो गई थी। वर्ष 2013 तक परिवार में चार बच्चे तीन बेटियाँ और एक बेटा हो गए। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी और स्थायी रोजगार का कोई साधन भी नहीं था। उनके पति मंडी में आढ़ती का काम करते थे, लेकिन वर्ष 2013 में आई बाढ़ के कारण वह रोजगार भी बंद हो गया। घर में बिजली, पानी और अन्य जरूरी सुविधाओं का अभाव था। विपिन देवी ने गर्मी, सर्दी और बारिश की कठिन परिस्थितियों के बीच अपने परिवार को संभाला और जीवन की चुनौतियों का सामना किया।

उनके जीवन में बदलाव का एक महत्वपूर्ण मोड़ वर्ष 2014 में आया, जब बिहार से आई एक आईसीआरपी दीदी ने गाँव धनौरा में महिलाओं को समूह से जोड़ने का काम शुरू किया। उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत चल रहे स्वयं सहायता समूह से विपिन देवी भी जुड़ीं। 26 जनवरी 2014 को 'सूरज समूह' का गठन हुआ। परिवार के कुछ लोगों ने उन्हें समूह से जुड़ने से रोकने की कोशिश की, लेकिन विपिनदेवी ने हार नहीं मानी। जब भी समूह की बैठक होती, वह उसमें जरूर जातीं।

विपिन देवी हाईस्कूल तक पढ़ी थीं और शादी से पहले उन्होंने ब्यूटी पार्लर का कुछ प्रशिक्षण लिया था। गाँव में सिलाई और ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण केंद्र शुरू हुआ तो उन्होंने उसमें सीखना शुरू किया। इस दौरान उन्हें लोगों के ताने भी सुनने पड़े। कहा गया कि जो काम शादी से पहले सीख लेना चाहिए था, उसे अब सीखने की जरूरत क्या है। लेकिन विपिन देवी ने लोगों की बातों को अपने रास्ते की बाधा नहीं बनने दिया।

समूह में खाता खुलने के बाद आरएफ फंड और सीआईएफ फंड के रूप में 1,10,000 रुपये आए। विपिन देवी ने उसमें से 10,000 रुपये का ऋण लिया। उन्होंने सिलाई के लिए टेबल खरीदी और ब्यूटी पार्लर, सिलाई तथा ज्यामेटिक का बैनर बनवाया। आसपास सिलाई का काम करने वाला कोई नहीं था, इसलिए धीरे-धीरे सिलाई का काम उनके पास आने लगा और ब्यूटी पार्लर में भी ग्राहक आने लगे। तीन महीने बाद उन्होंने समूह में अपने 10,000 रुपये जमा कर दिए।

इसके बाद समूह का सीसीएल कराया गया। दस दीदियों वाले इस समूह में कुछ महिलाएँ पशुपालन, कुछ किराना दुकान और एक महिला पार्लर का काम करती थीं। समूह के पास 15,000 रुपये आरएफ, 1,10,000 रुपये सीआईएफ और 50,000 रुपये सीसीएल की राशि उपलब्ध हुई, जिसे जरूरत के अनुसार समूह की महिलाओं में बांटा गया। विपिन देवी ने सीसीएल से 50,000 रुपये लेकर अपने ब्यूटी पार्लर और कॉस्मेटिक के काम को आगे बढ़ाया। साथ ही उन्होंने समूह के बाहर से भी कुछ कर्ज लिया। मेहनत रंग लाई और उनका काम धीरे-धीरे अच्छा चलने लगा।

उनकी मेहनत और जिम्मेदारी को देखते हुए समूह की महिलाओं ने उनका नाम वीओ-बीके के लिए दिया और वह ग्राम संगठन की बुककीपर बन गईं। उन्होंने छह ग्राम संगठनों के साथ काम किया। गाँव-गाँव जाकर जब उन्होंने महिलाओं की आर्थिक परिस्थितियाँ देखीं तो उन्हें अपना संघर्ष याद आने लगा। यहीं से उनके भीतर एक नई सोच पैदा हुई अगर मैं अपनी जिंदगी बदल सकती हूँ तो दूसरी महिलाओं को भी अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर मिलना चाहिए।

उन्होंने ग्राम संगठन के माध्यम से महिलाओं को अलग-अलग आजीविका गतिविधियों से जोड़ना शुरू किया। किसी को मुर्गी पालन से जोड़ा, किसी को बकरी पालन और पशुपालन से, तो किसी को

कपड़ों की फेरी, रेहड़ी-सब्जी की दुकान, दूध की डेयरी और किराना दुकान जैसे कामों से। ग्राम संगठन में आने वाले फंड का लाभ भी जरूरतमंद महिलाओं तक पहुँचाने का प्रयास किया। वर्ष 2018 से 2021 के बीच उनके जीवन ने एक और महत्वपूर्ण मोड़ लिया। सीएलएफ अकाउंटेंट की भर्ती निकली और समूह तथा ग्राम संगठन की महिलाओं के सहयोग से वर्ष 2021 में विपिन देवी सीएलएफ की लेखाकार नियुक्त हुईं। उस समय उन्होंने 45 पंचायतों और 90 गाँवों में काम किया। उनका प्रयास रहा कि हर गाँव में महिलाओं को छोटे-छोटे रोजगार के अवसरों से जोड़ा जाए। अपने सिलाई के काम के लिए उन्होंने तीन लड़कियों को भी साथ रखा और उन्हें सिलाई सिखाकर रोजगार से जोड़ा। वर्ष 2024 में सीएलएफ की नई भर्ती हुई और विपिन देवी फिर सीएलएफ लेखाकार बनीं। लेकिन उनके लिए घर बैठना संभव नहीं था। वर्षों तक महिलाओं के बीच काम करने के बाद उनके भीतर कुछ नया करने की ललक पैदा हो चुकी थी।

एक दिन मोबाइल पर YouTube देखते समय उनकी नजर इलेक्ट्रिक स्कूटी के एक विज्ञापन पर पड़ी। बस, वहीं से उनके मन में एक नया विचार जन्मा, क्यों न इलेक्ट्रिक स्कूटी का व्यवसाय शुरू किया जाए? उन्होंने पति से बात की, समूह और ग्राम संगठन की दीदियों से चर्चा की और धन की व्यवस्था के बारे में सोचना शुरू किया।

इस काम के लिए उन्होंने समूह से 2,00,000 रुपये का सीसीएल कराया। समूह और ग्राम संगठन के माध्यम से सीएलएफ से 10,00,000 रुपये का सीआईएफ ऋण मिला। जिले के अधिकारियों से बातचीत की, अपने रोजगार की योजना रखी और अपने भाई की मदद से 20 स्कूटी के पार्ट्स मंगवाकर काम की शुरुआत की। दुकान ली, जरूरी दस्तावेज तैयार करवाए और लगभग दो महीने की तैयारी के बाद 7 जून 2024 को इलेक्ट्रिक स्कूटी के शोरूम का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन में सीडीओ, डीसी एनआरएलएम, बीडीओ, एडी तथा सीएलएफ पदाधिकारी और समूह की महिलाएँ मौजूद थीं। लेकिन असली संघर्ष तो इसके बाद शुरू हुआ।

जब विपिन देवी इस व्यवसाय के लिए बाहर निकलीं तो कई लोगों ने उनका मजाक उड़ाया। कहा गया कि एक महिला इतना बड़ा काम कैसे करेगी? कई शोरूम से उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। कहीं सामान नहीं मिला, कहीं सही जानकारी नहीं मिली। कई बार वह घर लौटकर रोईं भी। कुछ दीदियाँ उनके साथ थीं तो कुछ उनके खिलाफ। लेकिन उन्होंने अपने सपने को टूटने नहीं दिया।

जून से अक्टूबर 2024 तक एक भी स्कूटी नहीं बिकी। दुकान का किराया, बिजली का बिल और दूसरे खर्च लगातार सामने थे। परिस्थितियाँ मुश्किल थीं, लेकिन विपिन देवी ने हार नहीं मानी। फिर नवंबर 2024 में दीपावली और धनतेरस के अवसर पर एक ही दिन में 5,00,000 रुपये की स्कूटी की बिक्री हुई। इसके बाद कारोबार धीरे-धीरे बढ़ता गया और उनकी आमदनी लगभग 50,000 से 60,000 रुपये तक पहुँचने लगी।

आज वही लोग, जो कभी उनका मजाक बनाते थे, उनकी सफलता का उदाहरण देते हैं। विपिन देवी ने केवल खुद को सफल नहीं बनाया, बल्कि अपने पति और दूसरी महिलाओं को भी आगे बढ़ने का अवसर दिया। उनके समूह की एक महिला आज स्टेशनरी का काम कर रही है, जहाँ बड़ी-बड़ी मशीनों से समूह के रजिस्टर तैयार किए जा रहे हैं। आज विपिन देवी 12वीं और बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी कर चुकी हैं। वह दूसरी महिलाओं से कहती हैं कि अपने काम को कभी छोटा न समझें और मुश्किल समय में हिम्मत न हारें, क्योंकि समय कभी एक जैसा नहीं रहता।

विपिन देवी मानती हैं कि अगर स्वयं सहायता समूह और सरकार की योजनाओं का साथ उन्हें नहीं मिला होता तो शायद उनका जीवन भी एक सामान्य ग्रामीण महिला की तरह घर-परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित रह जाता और उनके सपने कहीं पीछे छूट जाते। लेकिन उन्होंने सपनों को पीछे नहीं छोड़ा। उन्होंने उन्हें मेहनत, साहस और आत्मविश्वास से अपना रास्ता बनाया।

आज उनका संदेश बेहद सरल, लेकिन उतना ही प्रभावशाली है अपने काम को छोटा मत समझिए, हिम्मत मत हारिए। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन हों, समय बदलता जरूर है। जब आपको आगे बढ़ने का अवसर मिले, तो अकेले आगे मत बढ़िए, अपने साथ दूसरी महिलाओं के लिए भी रोजगार की एक नई किरण लेकर चलिए। विपिन देवी की कहानी केवल एक महिला की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि उस बदलाव की कहानी है, जहाँ एक महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़कर लाभार्थी से नेतृत्वकर्ता और फिर रोजगार देने वाली उद्यमी बन जाती है। यही आत्मनिर्भर भारत की असली तस्वीर है।

निहारिका ने गांव ही नहीं, मन का 'कचरा' भी निकाला

उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के किनारे बसा बसई मोहम्मदपुर गाँव कभी बंद नालियों, प्लास्टिक के ढेर और अस्वच्छ वातावरण की समस्याओं से घिरा हुआ था। गाँव की तस्वीर बदलना आसान नहीं था, लेकिन एक महिला ने ठान लिया कि बदलाव की शुरुआत यहीं से होगी। यह कहानी है पूर्व शिक्षिका और ग्राम प्रधान निहारिका वर्मा की, जिन्होंने अपने नेतृत्व और सामुदायिक भागीदारी से स्वच्छता को गाँव के जीवन का हिस्सा बना दिया। निहारिका ने जब ग्राम प्रधान का काम संभाला तो जो कचरा पहले समस्या था वही अब संशाधन और आय का माध्यम बनने लगा।

निहारिका वर्मा जब बसई मोहम्मदपुर की ग्राम प्रधान बनीं, तब उनके नेतृत्व को लेकर कई तरह की शंकाएँ थीं। लेकिन उन्होंने आलोचनाओं का जवाब शब्दों से नहीं, काम से देने का निर्णय लिया। उन्होंने गाँव की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक कचरा प्रबंधन को अपनी प्राथमिकता बनाया।

निहारिका ने कचरा प्रबंधन को केवल सफाई कर्मचारियों की जिम्मेदारी मानने के बजाय इसे हर परिवार की जिम्मेदारी बनाने का प्रयास किया। जागरूकता गीत बजाने वाले ई-रिक्शा के माध्यम से घर-घर कचरा संग्रहण शुरू हुआ। धीरे-धीरे लोगों को यह समझ आने लगा कि स्वच्छता कोई एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि रोजमर्रा की आदत है। गाँव के प्रमुख स्थानों पर कंक्रीट के कूड़ेदान लगाए गए और प्लास्टिक बैंक की स्थापना की गई। ग्रामीणों को प्लास्टिक कचरा जमा करने के बदले प्रोत्साहन और पुरस्कार दिए जाने लगे। कचरे को स्रोत पर ही अलग करना धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार बन गया।

जो कचरा कभी गाँव की समस्या था, वही अब संसाधन और आय का माध्यम बनने लगा। पुनर्चक्रण और उपयोगकर्ता शुल्क के माध्यम से गाँव ने आय अर्जित करना शुरू किया। स्वच्छता ने न केवल वातावरण बदला, बल्कि आर्थिक सोच का एक नया रास्ता भी दिखाया।

निहारिका का प्रयास केवल कचरा उठाने तक सीमित नहीं रहा। गाँव में जलभराव की समस्या से निपटने और यमुना को प्रदूषण से बचाने के लिए सोख गड्ढों और जल निकासी प्रणालियों का निर्माण कराया गया। गाँव में स्थापित रिसोर्स रिकवरी सेंटर केवल कचरा प्रबंधन की जगह नहीं रहा, बल्कि सामुदायिक शिक्षा का केंद्र बन गया। यहाँ ग्रामीणों ने सीखा कि जैविक कचरे से खाद कैसे बनाई जा सकती है, पुनर्चक्रण किस प्रकार उपयोगी है और अपशिष्ट का उचित प्रबंधन स्वास्थ्य तथा पर्यावरण दोनों के लिए क्यों आवश्यक है। निहारिका वर्मा की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद गाँव की साफ सड़कें या व्यवस्थित कचरा प्रबंधन नहीं, बल्कि लोगों की मानसिकता में आया परिवर्तन है।

ग्रामीण अब अपने आसपास की स्वच्छता को अपनी जिम्मेदारी मानने लगे। महिलाओं की भागीदारी बढ़ी और वे गाँव के स्वच्छता अभियानों में अधिक सक्रियता से जुड़ने लगीं। बसई मोहम्मदपुर का अनुभव देखकर आसपास के गाँवों ने भी इस मॉडल पर ध्यान देना शुरू किया। निहारिका वर्मा की कहानी DDWS-UNICEF के प्रकाशन 'Ripples of Change' में शामिल महिला परिवर्तनकर्ताओं की प्रेरक यात्राओं में से एक है। यह कहानी बताती है कि परिवर्तन के लिए हमेशा बड़े संसाधनों या विशाल योजनाओं की आवश्यकता नहीं होती। एक व्यक्ति का संकल्प, सही दिशा में उठाया गया पहला कदम और समुदाय की भागीदारी मिलकर असाधारण बदलाव ला सकते हैं। आज बसई मोहम्मदपुर केवल स्वच्छता की दिशा में आगे बढ़ता हुआ गाँव नहीं, बल्कि स्थानीय महिला नेतृत्व की शक्ति का उदाहरण है।

श्रीमती पूनम लाल, मैनेजिंग डायरेक्टर, मेट्रो हॉस्पिटल ग्रुप, वर्षों से निस्वार्थ भाव से समाज सेवा में लगी हुई हैं। वे बिना यश, प्रसिद्धि या प्रशंसा की कामना के समाज के वंचित वर्ग की सहायता करती हैं। उनका कहना है कि अपने जीवन में इतना सफल जरूर बनिए कि आप अपने सपने पूरे कर सकें, लेकिन इतने संवेदनशील भी रहिए कि किसी और के सपने टूटने न दें। लोग यह याद नहीं रखते कि आपके पास कितना था बस यह याद रखते हैं कि आपके होने से उनकी जिंदगी कितनी बेहतर हुई। **प्रेरणा विचार पत्रिका** के लिए उनसे की गई विशेष बातचीत के अंश प्रस्तुत हैं –

साक्षात्कार /पूनम लाल

सफलता के लिए दूसरे के सपने न टूटने दें

समाज सेवा की प्रेरणा कहां से मिली?

मुझे प्रेरणा किसी एक व्यक्ति से नहीं, बल्कि मुझे जिंदगी से मिली है। मैंने महसूस किया है कि भगवान ने अगर हमें कुछ करने की क्षमता दी है, तो उसका सबसे खूबसूरत इस्तेमाल किसी जरूरतमंद के जीवन में बदलाव लाने में है। मेरे लिए समाज सेवा कोई दिखावा या उपलब्धि नहीं है। यह मेरे जीवन का उद्देश्य है। किसी गरीब पिता की आंखों में अपनी बेटी की शादी की खुशी देखना या किसी जरूरतमंद मरीज को इलाज मिलने के बाद उसके चेहरे पर सुकून देखना – इससे बड़ी संतुष्टि मेरे लिए कुछ नहीं हो सकती। मैं हमेशा मानती हूं कि अगर आपकी सफलता सिर्फ आपकी है, तो वह अधूरी है। आपकी सफलता तब पूरी होती है जब उससे किसी और की जिंदगी बेहतर हो।

अपने हॉस्पिटल के बारे में कुछ बताइए ?

मेरे लिए अस्पताल सिर्फ ईंट-पत्थर की एक बिल्डिंग नहीं है बल्कि यह उम्मीद का घर है। हमारे अस्पताल के चेयरमैन, डॉ. पुरुषोत्तम लाल जी का एक बहुत ही खूबसूरत और मानवीय परिकल्पना है "अडाप्ट द पेसेंट" उनका मानना है कि जब कोई मरीज हमारे पास आता है और हम उसे अडाप्ट करते हैं, तो वह सिर्फ हमारा मरीज नहीं रहता, बल्कि हमारे परिवार का एक सदस्य बन जाता है। जिस तरह हम अपने परिवार के किसी सदस्य की बीमारी में उसकी हर छोटी-बड़ी जरूरत का ध्यान रखते हैं, उसी भावना, संवेदनशीलता और अपनापन के साथ हमें अपने मरीज की भी देखभाल करनी चाहिए।

यही हमारे अस्पताल की सोच है –

"A patient is not just a case a patient is a family-" (एक मरीज केवल मरीज नहीं परिवार भी होता है) जब कोई गरीब या जरूरतमंद मरीज हमारे पास आता है, तो हमारी कोशिश रहती है कि पैसों की कमी उसके इलाज के रास्ते में कभी बाधा न बने। क्योंकि हमारे लिए इलाज सिर्फ बीमारी को ठीक करना नहीं है।

इलाज का मतलब है – किसी इंसान को उम्मीद देना, उसका हाथ पकड़ना और उसे यह एहसास दिलाना कि 'आप अकेले नहीं हैं, हम आपके साथ हैं।' यही हमारे चेयरमैन सर का दृष्टिकोण है, यही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी भी है।

आपके जीवन का मूल मंत्र क्या है?

मेरे जीवन का मूल मंत्र बहुत सरल है –'बड़े सपने देखो, पूरी ईमानदारी से मेहनत करो और जितना ऊपर उठो, उतने ही ज्यादा लोगों को ऊपर उठाओ।' मैंने जिंदगी से एक बात सीखी है– मुश्किलें आपको रोकने नहीं आतीं, आपको मजबूत बनाने आती हैं।

मैं परिस्थितियों की शिकायत करने में विश्वास नहीं रखती। जो मिला, उसके लिए आभारी रहिए; जो नहीं मिला, उसके लिए मेहनत कीजिए; और जो मिल गया, उसमें से कुछ दूसरों के साथ बांटिए। जिंदगी की असली ऊंचाई आप पद से नहीं, बल्कि इस बात से तय होती है कि आपकी वजह से कितने लोगों की जिंदगी में रोशनी आई।

आज की पीढ़ी के लिए क्या संदेश है?

मैं आज की युवा पीढ़ी से सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगी कि बड़ा सोचिए, साथ ही दिल भी बड़ा रखिए। आज आपके पास टेक्नोलॉजी है, अथाह ज्ञान है, अनेक अवसर हैं। दुनिया आपके हाथ में है। लेकिन इस पूरी दौड़ में अपने संस्कार, अपने माता-पिता और अपनी इंसानियत को पीछे मत छोड़िए। हार से मत डरिए। हार अंत नहीं है, वह आपकी अगली सफलता की सीढ़ी है।

अपने कौशल को लगातार अपग्रेड करिए, मेहनत करिए, खुद पर विश्वास रखिए और किसी से अपनी तुलना मत कीजिए। आपका मुकाबला सिर्फ कल वाले आपसे होना चाहिए।

पुरुष प्रधान व्यवसाय में झंडा गाड़ा

श्रीमती पूजा तिवारी की उद्यमिता–यात्रा संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक का सफर है। उन्होंने शुरुआत ऑटोमोबाइल क्षेत्र से की। एक ऐसे क्षेत्र में, जिसे लंबे समय तक मुख्यतः पुरुष–प्रधान व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में देखा जाता रहा है, उन्होंने अपने व्यावसायिक सफर की शुरुआत करके यह सिद्ध किया कि अवसर मिलने पर महिला किसी भी क्षेत्र में अपनी पहचान और नेतृत्व स्थापित कर सकती है।

उनकी यात्रा केवल एक व्यवसाय शुरू करने की कहानी नहीं है; यह सीखने, संघर्ष करने, अनुभव प्राप्त करने, नए अवसरों को पहचानने और निरंतर आगे बढ़ने की कहानी है।

पूजा तिवारी की प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर, नानकपुरा, साकेत में हुई। बाल्यावस्था में मिलने वाली शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व की आधारभूमि तैयार करती है। पूजा जी ने अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाते हुए समाजशास्त्र एवं अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर शिक्षा (M.A.) तथा B.Ed. जैसी शैक्षणिक योग्यताएँ प्राप्त कीं। समाजशास्त्र ने उन्हें समाज, परिवार, सामाजिक संरचनाओं और बदलते सामाजिक संबंधों को समझने की दृष्टि दी, जबकि अंग्रेजी साहित्य ने विचारों, संवेदनाओं और अभिव्यक्ति के व्यापक संसार से जोड़ा। B-Ed- की शिक्षा ने शिक्षा और शिक्षण की भूमिका को समझने का अवसर प्रदान किया।

इन विभिन्न क्षेत्रों का संगम उनके सामाजिक दृष्टिकोण में दिखाई देता है। वे समझती हैं कि महिला को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं है कि उसे आगे बढ़ना चाहिए। उसके सामने यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि वह किस दिशा में आगे बढ़े, अपने ज्ञान का उपयोग कैसे करे और अपनी क्षमता को परिवार तथा समाज के लिए कैसे उपयोगी बनाए। यही कारण है कि महिला शिक्षा उनके लिए व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है।

ऑटोमोबाइल क्षेत्र से प्रारंभ हुई यह यात्रा आज विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुकी है। अलग–अलग व्यवसायिक क्षेत्रों में कार्य करते हुए पूजा जी ने उद्यमिता को केवल व्यक्तिगत आर्थिक उपलब्धि का साधन नहीं माना, बल्कि इसे महिलाओं के लिए आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का जीवंत उदाहरण बनाने का प्रयास किया है।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का संदेश केवल शब्दों में नहीं देतीं। वे स्वयं अपने जीवन और कार्य के माध्यम से उस विचार को चरितार्थ करके दिखाने का प्रयास करती हैं।

'कहना नहीं, करके दिखाना': महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में अनेक बार बड़े–बड़े विचार और भाषण सुनने को मिलते हैं, लेकिन पूजा जी का विश्वास है कि किसी विचार की वास्तविक शक्ति तब दिखाई देती है जब उसे जीवन में उतारा जाए।

इसीलिए उनका संदेश है- "महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए केवल प्रेरित मत कीजिए, उन्हें यह विश्वास भी दीजिए कि वे स्वयं यह कर सकती हैं।"

उनका अपना व्यावसायिक सफर इसी विश्वास का उदाहरण है। उन्होंने यह दिखाया कि एक महिला परिवार की जिम्मेदारियों के साथ–साथ व्यवसाय का नेतृत्व भी कर सकती है, नए क्षेत्रों में प्रवेश कर सकती है, निर्णय ले सकती है, जोखिम उठा सकती है और अपने अनुभव से दूसरी महिलाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकती है। इस दृष्टि से पूजा जी का जीवन स्वयं एक प्रेरक संदेश बन जाता है। वे महिलाओं के बीच सामाजिक जागरूकता और आत्मनिर्भरता की भावना को केवल मौखिक रूप से व्यक्त नहीं करतीं, बल्कि अपने व्यवहार, कार्यशैली और उद्यमी जीवन के माध्यम से उसे प्रमाणित करने का प्रयास करती हैं।

अनुभव से व्यापक दृष्टि : ऑटोमोबाइल क्षेत्र से आरंभ हुई उनकी व्यावसायिक यात्रा समय के साथ अनेक क्षेत्रों तक पहुँची। विभिन्न क्षेत्रों में काम करने से उन्हें व्यवसाय, समाज, लोगों की आवश्यकताओं और बदलते बाजार को समझने का व्यापक अनुभव प्राप्त हुआ। आज वे Kanak Kalash Group dh Managing Director के रूप में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही हैं। समूह की परियोजनाओं में Kumbh Ganga Retreat विशेष रूप से आध्यात्मिक पर्यटन, तीर्थ–आतिथ्य और सनातन मूल्यों से जुड़े दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी उद्यमिता यात्रा केवल व्यवसाय के विस्तार की यात्रा नहीं है, बल्कि यह इस विचार की भी यात्रा है कि व्यवसाय को सामाजिक और सांस्कृतिक उद्देश्य से जोड़ा जा सकता है।

महिला सशक्तीकरण का जीवंत उदाहरण : पूजा जी के लिए महिला सशक्तीकरण का अर्थ केवल महिलाओं को यह कहना नहीं है कि "आप आगे बढ़ सकती हैं।" उनका प्रयास है कि महिलाएँ स्वयं यह महसूस करें। उनका कहना है कि

"यदि पूजा अपने जीवन में अलग-अलग क्षेत्रों में आगे बढ़ सकती है तो मैं भी अपने सामर्थ्य के अनुसार आगे बढ़ सकती हूँ।" वे महिलाओं को शिक्षा, कौशल, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करती हैं। साथ ही यह संदेश देती हैं कि परिवार और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी महिला अपने लिए एक सशक्त पहचान बना सकती है। उनकी दृष्टि में महिला को चुनना नहीं चाहिए कि वह "परिवार या करियर" में से किसे चुने। सही शिक्षा, सहयोग, समझदारी और समय-प्रबंधन के साथ वह परिवार और अपने व्यावसायिक जीवन दोनों को सार्थक दिशा दे सकती है।

वैश्विक उद्यमिता की ओर - श्रीमती पूजा तिवारी की उद्यमिता यात्रा केवल भारत तक सीमित नहीं रही। अपने व्यावसायिक अनुभव और सीखने की निरंतर जिज्ञासा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अफ्रीका जैसे भौगोलिक, सामाजिक और व्यावसायिक रूप से चुनौतीपूर्ण महाद्वीप तक जाकर वहाँ के व्यावसायिक वातावरण को समझने का प्रयास किया। अफ्रीका की यात्रा उनके लिए केवल विदेश यात्रा नहीं थी। यह उनके लिए एक नई दुनिया को समझने, नए अवसरों की पहचान करने और वैश्विक व्यापार की वास्तविकताओं को नजदीक से देखने की यात्रा थी।

उन्होंने वहां माइनिंग तथा Export-Import के क्षेत्र की संभावनाओं, व्यापारिक प्रक्रियाओं और इस क्षेत्र से जुड़े अवसरों को समझने का प्रयास किया। एक महिला उद्यमी के लिए किसी नए और चुनौतीपूर्ण अंतरराष्ट्रीय बाजार में जाकर उसके व्यापारिक वातावरण को समझना अपने आप में साहस, जिज्ञासा और सीखने की अदम्य इच्छा का परिचायक है। यही "नई जगह से डरना नहीं, उसे समझना है" यही उनकी कार्यशैली का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

नई परिस्थितियों से सीखने की क्षमता : एक उद्यमी के लिए बाजार हमेशा बदलता रहता है। जो व्यक्ति केवल अपने परिचित क्षेत्र तक सीमित रहता है, उसके अवसर भी सीमित हो सकते हैं। लेकिन जो व्यक्ति नई परिस्थितियों को समझने का साहस करता है, उसके सामने नए रास्ते खुलते हैं। पूजा ने अफ्रीका जाकर यही दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने वहाँ की व्यापारिक संभावनाओं को समझने का प्रयास किया और Mining तथा Export-Import क्षेत्र में अपनी उपस्थिति स्थापित करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं।

उनका लक्ष्य केवल किसी नए बाजार में प्रवेश करना नहीं, बल्कि स्थायी और विश्वसनीय व्यावसायिक संबंधों का निर्माण करना है।

पूजा तिवारी की उद्यमिता यात्रा केवल भारत तक सीमित नहीं रही। अपने व्यावसायिक अनुभव और सीखने की निरंतर जिज्ञासा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अफ्रीका जैसे भौगोलिक, सामाजिक और व्यावसायिक रूप से चुनौतीपूर्ण महाद्वीप तक जाकर वहाँ के व्यावसायिक वातावरण को समझने का प्रयास किया।

महिला उद्यमिता की मिसाल : पूजा जी की यह यात्रा महिला सशक्तीकरण की उनकी विचारधारा को भी नई दिशा देती है। वे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का संदेश देती हैं, लेकिन स्वयं अपने जीवन में भी उस संदेश को लागू करती हैं। ऑटोमोबाइल क्षेत्र से शुरू हुई उनकी व्यावसायिक यात्रा, विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार, Kanak Kalash Group में नेतृत्वकारी भूमिका, आध्यात्मिक पर्यटन और सनातन मूल्यों से जुड़े Kumbh Ganga Retreat जैसे प्रकल्पों से जुड़ाव और अब अफ्रीका में Mining तथा Export-Import जैसे अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों को समझने का प्रयास ।यह पूरा सफर बताता है कि उनके लिए उद्यमिता एक निरंतर सीखने वाली यात्रा है। यह यात्रा उन महिलाओं के लिए प्रेरणादायी संदेश देती है जो अपने जीवन में कुछ नया करना चाहती हैं लेकिन नई चुनौतियों से डरती हैं।

पूजा जी का अनुभव कहता है कि "जहाँ अवसर दिखाई दे, वहाँ सीखने का साहस रखिए; जहाँ रास्ता कठिन हो, वहाँ तैयारी और धैर्य के साथ आगे बढ़िए।"

पूजा जी की यात्रा का संदेश स्पष्ट है- "सपने केवल अपने शहर या देश की सीमाओं तक सीमित नहीं होने चाहिए। सीखने की इच्छा और मेहनत हो तो दुनिया के किसी भी हिस्से में नए अवसर तलाशे जा सकते हैं।" यही उनकी उद्यमिता की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे मंजिल की प्रतीक्षा नहीं करतीं; नए रास्तों की खोज करती हैं।

सेवा और व्यवसाय : पूजा जी के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह है कि उन्होंने सेवा और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। कुंभ 2025 प्रयागराज के अवसर पर भी उन्होंने तीर्थयात्रियों और साधु-संतों से जुड़े सेवा-परिवेश को निकट से अनुभव किया। सेवा और व्यवसाय को एक साथ लेकर चलने का प्रयास किया। उनके लिए व्यवसाय केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है। यदि व्यवसाय के माध्यम से लोगों को सुविधा, सेवा, सम्मान और बेहतर अनुभव प्रदान किया जा सके तो व्यवसाय भी सामाजिक उत्तरदायित्व का माध्यम बन सकता है। यही दृष्टिकोण उनके व्यक्तित्व को केवल एक उद्यमी महिला से आगे ले जाकर एक सामाजिक रूप से संवेदनशील उद्यमी के रूप में स्थापित करता है।

"युगानुकूल माँ" की परिकल्पना : पूजा तिवारी की विचारधारा का सबसे भावनात्मक और महत्वपूर्ण पक्ष है-युगानुकूल माँ की कल्पना। वे मानती हैं कि 21वीं सदी की माँ को समय की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को शिक्षित और सक्षम बनाना होगा। आज की माँ को अपने बच्चे की केवल किताबों की शिक्षा नहीं देनी है। उसे डिजिटल दुनिया, सोशल मीडिया, तकनीक, बदलते सामाजिक व्यवहार, मानसिक स्वास्थ्य, कॅरियर विकल्प और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को भी समझना होगा। इसके साथ-साथ उसे अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति, परिवार, बड़ों के सम्मान, कर्तव्य, सत्य, सेवा, संवेदना और नैतिकता से भी जोड़ना होगा।

पूजा जी के अनुसार नई भारतीय माँ आधुनिक हो, लेकिन अपनी जड़ों से जुड़ी हो। शिक्षित हो, लेकिन विनम्र हो। आत्मनिर्भर हो, लेकिन परिवार के प्रति संवेदनशील हो। साहसी हो, लेकिन मर्यादा को समझती हो। निर्णयक्षम हो, लेकिन संवाद में विश्वास रखती हो। तकनीक-सक्षम हो, लेकिन संस्कृति से विमुख न हो। यही उनके विचारों में 21वीं सदी की "मदर इंडिया" का स्वरूप है।

उद्यमिता और सामाजिक चेतना : पूजा जी के जीवन में उद्यमिता और सामाजिक सेवा अलग-अलग रास्ते नहीं हैं। वे दोनों को एक-दूसरे का पूरक मानती हैं। एक उद्यमी महिला केवल अपने लिए अवसर पैदा नहीं करती। यदि वह आगे बढ़ते हुए अन्य महिलाओं को भी प्रेरित करे, उन्हें रोजगार, कौशल या आत्मनिर्भरता के अवसर दे, तो उसका व्यवसाय सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। पूजा जी का अपना अनुभव उन्हें महिलाओं की वास्तविक चुनौतियों को समझने में सहायता करता है। वे जानती हैं कि महिला के लिए आगे बढ़ने की राह हमेशा आसान नहीं होती। उसे परिवार, समाज, जिम्मेदारियों और स्वयं की आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाना पड़ता है।

उनका संदेश केवल प्रेरक शब्दों तक सीमित नहीं है। वह महिलाओं को शिक्षा, आत्मविश्वास, कौशल और अवसर के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनकी विचारधारा का सार : 'नारी को शिक्षित कीजिए, वह स्वयं आगे बढ़ेगी। उसे आत्मनिर्भर बनाइए, वह परिवार को संभालेगी। उसे निर्णयक्षम बनाइए, वह भविष्य को दिशा देगी। उसे संस्कार दीजिए वह आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करेगी और उसे अवसर दीजिए, वह समाज के निर्माण में अपनी पूरी शक्ति लगा देगी।'

यही वह दृष्टि है जिसके माध्यम से श्रीमती पूजा तिवारी महिला शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक चेतना, भारतीय संस्कृति और मजबूत पारिवारिक व्यवस्था को एक साथ जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। उनकी यात्रा का सबसे सुंदर संदेश यही है कि "एक सशक्त महिला केवल अपना जीवन नहीं बदलती; वह अपने परिवार की दिशा, अपनी अगली पीढ़ी की सोच और अंततः समाज के भविष्य को बदलने की क्षमता रखती है।" ◘

बाल संस्कार शाला की शिल्पी

बस्ती की कल्याणी गौड़ ने अपना जीवन शिक्षा, संस्कार और समाजसेवा को समर्पित किया है। पी.जी. तथा शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने 1967 से 2007 तक कन्या इंटर कॉलेज में सहायक अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएं दीं। सेवानिवृत्ति के बाद भी उनका शिक्षा के प्रति समर्पण कम नहीं हुआ। उन्होंने दो वर्षों तक विद्यालय में निःशुल्क सेवा दी। इसके बाद उन्होंने अपने घर पर बाल-संस्कारशाला शुरू की, जहां गली-मोहल्ले के छोटे बच्चों को मूलभूत शिक्षा के साथ महापुरुषों की जीवनियां पढ़ाई जाती हैं, ताकि वे अच्छे संस्कारों के साथ जीवन में आगे बढ़ सकें। वर्ष 2013 से वे ओझला स्थित बस्ती में महिलाओं को शिक्षित करने का कार्य भी करती रहीं। कोरोना काल के बाद यह कार्यक्रम भले ही बंद हो गया, लेकिन आज भी उनकी कोशिश रहती है कि किसी शिक्षित लड़की के माध्यम से यह कार्य निरंतर चलता रहे।

कल्याणी गौड़ आज भी कन्या इंटर कॉलेज के मेधावी छात्राओं को महापुरुषों की जीवनियां भेंट कर उन्हें प्रोत्साहित करती हैं। वर्तमान में वे गायत्री परिवार से जुड़ी हैं, घर-घर यज्ञ तथा विभिन्न संस्कार निःशुल्क संपन्न कराने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

आज के समाज को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि बाल संस्कारशाला आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस दृष्टि से कल्याणी गौड़ का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। गंगा सफाई, पौधरोपण और अन्य सामाजिक कार्यों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रहती है। शिक्षा से लेकर संस्कार और पर्यावरण संरक्षण तक, कल्याणी गौड़ का जीवन समाज के प्रति समर्पण और निस्वार्थ सेवा की प्रेरणादायी मिसाल है।

SECURE
INNOVATIVE
सुरक्षा के साथ एक
सुरक्षित कल
सिक्योर इनोवेटिव दुनिया भार में महत्वपूर्ण अवस्तरचना,
और संवेदतशील परिसवों के लिए अतरात्ध्यूनिक HVM
कीवल मिटीगेशन) और प्रवेश नियंशन समाधन प्रदान
हवाई अड्डा
सैन्य क्षेत्र
सरकारी निर्माण
औद्योगिक प्लांट
स्मार्ट सिटी
अस्पताल
खेल परिसर
व्यावसायिक इमारतें
हर महत्वपूर्ण परिस्तर के लिए विश्वसनीय सुरक्षा समाधन
क्रैश-रेटेड रोड ब्लॉकर
उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों के लिए मजबूत सुरक्षा अवरोध
क्रैश-रेटेड बोलार्ड्स
उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों के लिए प्रमाणित वाहन सुरक्षा
क्रैश-रेटेड बूम बैरियर
उच्च सुरक्षा वाले क्षेत्रों के लिए मजबूत वाहन प्रवेश नियंत्रण
टायर किलर
अनधिकृत वाहन प्रवेश की प्रभावी रोकथाम
ट्राइपॉड टर्नस्टाइल्स
सुरक्षित और नियंत्रित पैदल प्रवेश
गेट्स
मजबूत, सुरक्षित और नियंत्रित प्रवेश व्यवस्था
सिक्योर इनोवेटिव सॉल्यूशंस एलएलपी
+91 76004 23206
info@secure-india.com
www.secure-india.com
हमारे समाधान देखने के लिए QR स्कैन करें
भारत की सुरक्षा हमारी प्रतिबद्धता

साक्षात्कार /प्रियंका गोस्वामी

अपने सपने पर विश्वास रखिए जरूर साकार होगा

मेरठ की प्रियंका गोस्वामी ने 2022 बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में 10000 मीटर रेस वॉक में रजत पदक जीतकर इतिहास रच दिया। बस कंडक्टर की बेटी से राष्ट्रमंडल पदक बिजेता बनने तक उनका सफर कठिन परिश्रम, धैय और आत्मविश्वास की मिसाल है। प्रियंका गोस्वामी का मानना है कि एक लड़की के लिए खेल में आगे बढ़ना अपने आप में एक चुनौती हो सकता है, खासकर जब सुविधाएँ सीमित हों और आपको लगातार घर से दूर रहकर ट्रेनिंग करनी पड़े। लेकिन मेरे लिए परिवार और मेरे आसपास के लोगों का विश्वास बहुत महत्वपूर्ण रहा।

खेल जगत में 'रेस वॉकिंग' जैसे कठिन खेल को चुनने का फैसला क्यों किया?

सच कहूँ तो मैंने शुरुआत में रेस वॉकिंग को सोच-समझकर अपना लक्ष्य बनाकर नहीं चुना था। मेरा सफर जिम्नास्टिक से शुरू हुआ, फिर मैं एथलेटिक्स में आई और उस समय मेरा सपना बस एक अच्छा एथलीट बनना था। एक डिस्ट्रिक्ट प्रतियोगिता में मैंने रेस वॉकिंग में हिस्सा लिया और वहीं से मुझे लगा कि शायद यह वह खेल है जिसमें मैं अपना बेहतर दे सकती हूँ।

शुरुआत में मुझे भी लगता था कि रेस वॉकिंग मतलब बस तेज चलना है, लेकिन जब मैंने इसे गंभीरता से सीखा तो समझ आया कि यह बहुत तकनीकी और कठिन खेल है। इसमें शरीर, दिमाग, तकनीक और धैर्य चारों का एक साथ इस्तेमाल होता है। धीरे-धीरे मुझे इस खेल से प्यार हो गया। आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो लगता है कि शायद रेस वॉकिंग ने ही मुझे चुना था। मैंने सिर्फ उसे स्वीकार किया।

एक महिला एथलीट के रूप में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

हर खिलाड़ी की यात्रा आसान नहीं होती। मेरी यात्रा भी बिल्कुल सीधी नहीं रही। जब आप किसी ऐसे खेल में जाते हैं जिसके बारे में लोगों को ज्यादा जानकारी ही नहीं है, तो सबसे पहले आपको अपने आसपास के लोगों को यह समझाना पड़ता है कि आप कर क्या रही हैं और क्यों कर रही हैं? रेस वॉकिंग को लेकर तो आज भी कई लोगों को लगता है कि इसमें आखिर खास क्या है- बस चलना ही तो है। लेकिन एक खिलाड़ी जानता है कि इसके पीछे कितनी मेहनत, अनुशासन और त्याग होता है।

रेस के दौरान गति और नियमों के बीच संतुलन कैसे बनाए रखती हैं?

यह रेस वॉकिंग की सबसे बड़ी चुनौती है। आपको तेज भी चलना है, लेकिन अपनी तकनीक को बिल्कुल नियंत्रित भी रखना है। एक पैर का जमीन से संपर्क बना रहना चाहिए और घुटना भी नियम के अनुसार सीधा रहना चाहिए। मेरे लिए यह सिर्फ रेस के दिन की चीज नहीं है। इसके लिए रोज ट्रेनिंग में तकनीक पर काम करना पड़ता है। कई बार आपको लगता है कि आप बहुत तेज जा सकती हैं, लेकिन अगर उस समय तकनीक बिगड़ रही है तो आपको खुद को नियंत्रित करना पड़ता है।

रेस में जज लगातार आपकी तकनीक पर नजर रखते हैं, इसलिए सिर्फ फिटनेस अच्छी होना काफी नहीं है। आपको अपनी बॉडी को इस तरह ट्रेन करना पड़ता है कि थकान के आखिरी किलोमीटरों में भी तकनीक न बिगड़े। मैं हमेशा कोशिश करती हूँ कि स्पीड और तकनीक के बीच एक संतुलन बना रहे। रेस जीतने के लिए सिर्फ तेज चलना जरूरी नहीं है, बल्कि कानूनी तरीके से तेज चलना जरूरी है।

लम्बी रेस के लिए आपका दैनिक ट्रेनिंग रुटीन और डाइट प्लान कैसा रहता है?

लंबी दूरी की रेस के लिए ट्रेनिंग सिर्फ पैरों की नहीं होती, बल्कि पूरे शरीर और दिमाग की तैयारी होती है। मेरी ट्रेनिंग में लंबे race-walk sessions, speed work, endurance और climbs जैसी चीजें शामिल रहती हैं। पहले भी मेरी ट्रेनिंग का एक हिस्सा सुबह का heavy race-walk workout और शाम को technique पर काम करने का रहा है। जरूरत के अनुसार running, swimming और strength work भी शामिल किए जाते हैं। 35 किलोमीटर जैसे लंबे इवेंट में mental preparation और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। मैं meditation और अपने मन को नियंत्रित करने पर भी ध्यान देती हूँ। हर किलोमीटर को अलग-अलग तरीके से लेना बहुत जरूरी है, क्योंकि अगर आप शुरू में ही पूरी रेस के बारे में सोचने लगें तो मानसिक दबाव बढ़ जाता है।

डाइट की बात करूँ तो मैं इसे बहुत simple और disciplined रखने में विश्वास करती हूँ। पर्याप्त carbohydrates, protein, fruits, vegetables और hydration ये सब ट्रेनिंग और recovery के लिए जरूरी हैं। डाइट हमेशा training load और competition phase के हिसाब से बदलती है, इसलिए मैं अपने coach और support team की सलाह को मानती हूँ। मेरे लिए डाइट का मतलब कम खाना नहीं, बल्कि सही समय पर सही nutrition लेना है।

रेस के अंतिम क्षण थकावट से कैसे निपटती हैं?

अंतिम किलोमीटरों में शरीर तो हर खिलाड़ी का जवाब देने लगता है। उस समय फर्क शरीर से ज्यादा दिमाग करता है। मैं खुद से कहती हूँ बस अगला किलोमीटर। पूरी रेस के बारे में नहीं सोचती। फिर अगला किलोमीटर, फिर अगला। कभी-कभी आपको अपने लक्ष्य, अपने परिवार, अपनी मेहनत और उन सभी लोगों की याद आती है जिन्होंने आप पर विश्वास किया है। तब लगता है कि इतनी दूर आकर रुकना नहीं है।

मेरे लिए finish line सिर्फ एक लाइन नहीं है। वह उन घंटों, महीनों और वर्षों की मेहनत का परिणाम होती है जो मैंने उसके पीछे लगाए हैं। इसलिए जब शरीर कहता है कि अब नहीं हो रहा, तब मन कहता है कि थोड़ा और। बस थोड़ा और।

अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय मंच पर कौन-सा पल दिल के सबसे करीब है?

मेरे लिए ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करना अपने आप में बहुत बड़ा सपना और गर्व की बात है। खासकर टोक्यो ओलंपिक मेरे दिल के बहुत करीब है, क्योंकि वह मेरा पहला ओलंपिक था। जब मैंने शुरुआत की थी तब मुझे यह तक नहीं पता था कि ओलंपिक क्या होता है, और कुछ वर्षों बाद उसी मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए बहुत भावुक पल था।

लेकिन Commonwealth Games

2022 का silver medal भी मेरे कॅरियर का बेहद खास पल है। बर्मिंघम में 10,000 मीटर की प्रतियोगिता में पदक जीतना मेरे लिए इसलिए भी खास था क्योंकि यह मेरे लिए एक बड़ा international breakthro नहीं था। मैं उस प्रतियोगिता में silver medal जीतने वाली पहली भारतीय महिला race walker बनी। और जब podium पर भारत का तिरंगा आपके सामने होता है, तो उस समय जो feeling होती है, उसे शब्दों में पूरी तरह बताना मुश्किल है।

रेस वॉकिंग को पहचान दिलाने के लिए क्या बदलाव जरूरी हैं?

सबसे पहले हमें लोगों को यह समझाना होगा कि रेस वॉकिंग सिर्फ तेज चलना नहीं है। यह एक बहुत technical और physically demanding sport है।

आज भी कई लोग जब race walking देखते हैं तो उनके मन में पहला सवाल यही आता है कि 'ये ऐसे क्यों चल रहे हैं?' मुझे लगता है कि जागरूकता की सबसे ज्यादा जरूरत है। मैंने खुद कई बार लोगों को समझाया है कि इसमें technique के कितने strict rules होते हैं और एक छोटी-सी technical गलती भी आपको अपात्रता तक पहुँचा सकती है। इसके लिए स्कूल और कॉलेज में एथलेटिक्स की अलग-अलग disciplines के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए। अच्छे coaches, proper tracks, sports science, recovery facilities और ज्यादा international exposure मिलना चाहिए। सबसे जरूरी है कि जब हमारे race walkers अच्छा प्रदर्शन करें तो उन्हें media coverage और public recognition भी मिले। मैं चाहती हूँ कि जिस तरह लोगों के लिए 'भारत का runner' सुनना सामान्य बात है, उसी तरह 'भारत का race walker' सुनकर भी लोगों को गर्व महसूस हो।

युवा लड़कियों को आप क्या सलाह देना चाहेंगी ?

मैं लड़कियों से सिर्फ इतना कहना चाहूँगी कि अगर आपके मन में कोई सपना है, तो सिर्फ इसलिए उसे मत छोड़िए कि वह रास्ता मुश्किल है या वह खेल बहुत popular नहीं है। जब मैंने शुरुआत की थी, तब मैंने भी नहीं सोचा था कि एक दिन मैं ओलंपिक तक पहुँचूँगी। लेकिन एक-एक कदम करके रास्ता बनता गया। शुरुआत में आपको शायद बहुत लोग समझेंगे नहीं। लोग सवाल करेंगे, कभी आपकी मेहनत पर भी शक करेंगे। लेकिन आपको अपने काम पर ध्यान देना है। आपका प्रदर्शन ही आपकी सबसे बड़ी पहचान बनेगा। एक बात बहुत जरूरी है विफलता से डरना मत। हर प्रतिस्पर्धा में पदक नहीं मिलेगा, हर race perfect नहीं होगी। लेकिन हर race आपको कुछ न कुछ सिखाकर जाएगी।

मैं चाहती हूँ कि आज की लड़कियाँ अपने लिए बड़े सपने देखें। चाहे खेल कोई भी हो Athletics, race walking, wrestling, boxing या कोई दूसरा sport अगर आपको उसमें खुशी मिलती है और आप मेहनत करने के लिए तैयार हैं, तो जरूर आगे बढ़िए। सपना बड़ा रखिए, शुरुआत छोटी रखिए और मेहनत लगातार रखिए। एक दिन वही छोटे-छोटे कदम बहुत दूर ले जाएंगे

सोनभद्र की **संजू कुशवाहा** सदर ब्लॉक की ग्राम पंचायत सजौर के मजरा मझिगांव चौबे की रहने वाली हैं। 41 वर्षीय संजू ने मिलेट्स को अपनी मेहनत और हुनर का आधार बनाया और धीरे-धीरे उसे एक ऐसे छोटे उद्यम में बदल दिया, जिसने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के साथ-साथ गांव की दूसरी महिलाओं के लिए भी रोजगार का दरवाजा खोल दिया। संजू वर्ष 2020 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ीं। स्वयं सहायता समूह से जुड़ना उनके लिए महज एक औपचारिक शुरुआत नहीं थी। मिशन के प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि गांव में उपलब्ध संसाधनों और अपने हुनर के सहारे भी आर्थिक आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव रखी जा सकती है।

संजू की शुरुआत छोटी लेकिन हौसला बड़ा

मेहनती और संकल्पबध संजू कुशवाह ने खाद्य प्रसंस्करण का प्रशिक्षण लिया। मिलेट्स के प्रति बढ़ती रुचि और उसके पौष्टिक महत्व को समझते हुए उनके मन में विचार आया कि, क्यों न इसे सरल रूप से इस्तेमाल करने के बजाय उससे ऐसे उत्पाद तैयार किए जाएं, जिन्हें आज की बदलती पसंद के अनुरूप बाजार में आसानी से जगह मिल सके। विचार था, लेकिन उसे हकीकत में बदलने के लिए पूंजी की जरूरत थी। दिसंबर 2024 में संजू ने 20 हजार रुपये का ऋण लिया और मिलेट्स से कुकीज, बिस्किट और नमकीन बनाने का काम शुरू कर दिया।

किसी भी नए काम की शुरुआत अपने साथ कई सवाल लेकर आती है। उत्पाद तैयार हो जाएगा, लेकिन खरीदेगा कौन? बाजार तक कैसे पहुंचेगा? ग्राहक स्वाद और गुणवत्ता को स्वीकार करेंगे या नहीं? संजू के सामने भी यही चुनौतियां थीं। शुरुआती दिनों में उत्पादन और विपणन को लेकर कठिनाइयां आईं। लेकिन उन्होंने जल्दबाजी में सफलता तलाशने के बजाय अपने उत्पाद की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी। स्वाद, स्वच्छता और बेहतर गुणवत्ता पर लगातार काम किया। धीरे-धीरे लोगों तक उनके उत्पाद पहुंचे और फिर वही उत्पाद उनकी पहचान बनने लगे।

स्थानीय बाजार में मांग बढ़ने लगी। ग्राहकों का भरोसा मजबूत हुआ और ऑर्डर मिलने का सिलसिला शुरू हो गया। एक छोटे से प्रयास ने अब एक बड़े कारोबार का रूप लेना शुरू कर दिया था।

संजू की कहानी की सबसे खास बात सिर्फ यह नहीं है कि उन्होंने अपनी आय बढ़ाई। बदलाव तब आया, जब उनकी सफलता ने दूसरी महिलाओं को भी अपने साथ जोड़ना शुरू किया। आज उनके स्वयं सहायता समूह से आठ महिलाएं जुड़ी हुई हैं। उत्पादन के काम में उनकी सक्रिय भागीदारी है और वे औसतन 10 हजार रुपये प्रतिमाह तक की आय अर्जित कर रही हैं। यानी संजू का उद्यम अब सिर्फ उनका अपना रोजगार नहीं रहा। वह कई परिवारों की आमदनी का जरिया बन गया है।

संजू की असली उपलब्धि यह है कि उन्होंने दूसरी महिलाओं के लिए भी एक द्वार खोल दिया है। कल तक जो महिलाएं रोजगार के अवसर तलाश रही थीं, आज वे उत्पादन का हिस्सा हैं। कल तक जिन हाथों में घरेलू जिम्मेदारियों का भार था, आज वे आत्मनिर्भर हैं। उनकी कहानी बताती है कि बदलाव एक छोटे से गांव की एक छोटी सी रसोई से भी आ सकता है।

संजू स्वयं सभी खर्चों के बाद 20 हजार रुपये से अधिक प्रतिमाह कमा रही हैं। इस आय ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को नया आधार दिया है। बच्चों की पढ़ाई बेहतर ढंग से हो रही है और घर की जरूरतों को पूरा करने में पहले की अपेक्षा अधिक सहजता आई है।

गांव की पगडंडियों पर चलती महिलाओं की जिंदगी अक्सर बहुत आकर्षक दिखाई देती है। किन्तु यह सच नहीं होता। घर-परिवार की जिम्मेदारियां और रोजमर्रा के संघर्ष के बीच उनके सपने कई बार मन के किसी कोने में दबे रह जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उन्हीं परिस्थितियों के बीच अपने लिए एक नई राह तलाश लेते हैं।

सोनभद्र की संजू कुशवाहा की कहानी कुछ ऐसी ही है। सदर ब्लॉक की ग्राम पंचायत सजौर के मजरा मझिगांव चौबे की रहने वाली 41 वर्षीय संजू ने मिलेट्स की खेती को आधार बनाया और उसे एक ऐसे छोटे उद्यम में बदल दिया, जिसने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के साथ-साथ गांव की दूसरी महिलाओं के लिए भी रोजगार का दरवाजा खोल दिया। संजू वर्ष 2020 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ीं। इस मिशन के प्रशिक्षण

कार्यक्रमों ने उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि गांव में उपलब्ध संसाधनों के सहारे भी आर्थिक आत्मनिर्भरता की नींव रखी जा सकती है। उन्होंने खाद्य प्रसंस्करण का प्रशिक्षण लिया। मिलेट्स के पौष्टिक महत्व को समझते हुए उन्होंने उससे ऐसे उत्पाद तैयार करने का सोचा, जिन्हें आज की बदलती पसंद के अनुरूप बाजार में आसानी से जगह मिल सके। लेकिन इस विचार को हकीकत में बदलने के लिए पूंजी की जरूरत थी।

दिसंबर 2024 में संजू ने 20 हजार रुपये का ऋण लिया और मिलेट्स से कुकीज, बिस्किट और नमकीन बनाने का काम शुरू कर दिया। अब संजू के सामने कई चुनौतियां थीं। उत्पाद तो तैयार हो जाएगा, लेकिन उसे खरीदेगा कौन? बाजार तक कैसे पहुंचेगा? ग्राहक उत्पाद को पसंद करेगा या नहीं? आरम्भ में उत्पादन और विपणन को लेकर कठिनाइयां आईं। लेकिन उन्होंने स्वाद, स्वच्छता और बेहतर गुणवत्ता पर लगातार काम किया। धीरे-धीरे उनके उत्पाद उनकी पहचान बनने लगे। स्थानीय बाजार में उनकी मांग बढ़ने लगी। उनको ऑर्डर मिलने का सिलसिला शुरू हो गया। एक छोटे से प्रयास ने अब एक बड़ा कारोबार का रूप लेना शुरू कर दिया था।

अपनी सफलता के साथ ही संजू ने दूसरी महिलाओं को भी अपने साथ जोड़ना शुरू किया। आज उनके स्वयं सहायता समूह से आठ महिलाएं जुड़ी हुई हैं। उत्पादन के काम में उनकी सक्रिय भागीदारी है और वे औसतन 10 हजार रुपये प्रतिमाह तक की आय अर्जित कर रही हैं। संजू का उद्यम अब सिर्फ उनका अपना रोजगार नहीं रहा। वह कई परिवारों की आमदनी का जरिया बन गया है। संजू स्वयं सभी खर्चों के बाद 20 हजार रुपये से अधिक प्रतिमाह कमा रही हैं।

संजू का यह व्यवसाय आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थानीय उद्यम का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। उनका अगला लक्ष्य आधुनिक मशीनें लगाकर उत्पादन क्षमता बढ़ाना और मिलेट्स से तैयार उत्पादों को बड़े बाजार तक पहुंचाना है। ◘

आत्मनिर्भरता की मिसाल

नंदिनी मिश्रा की कहानी केवल समाजसेवा की नहीं, बल्कि संवेदना, साहस और समाज के हाशिए पर खड़ी महिलाओं को सम्मानपूर्ण जीवन दिलाने के संकल्प की कहानी है। 25 वर्ष पूर्व, जब उनके सामने सुरक्षित कॅरियर और सुविधाजनक जीवन का विकल्प था, उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश के उन सुदूर क्षेत्रों में काम करने का मार्ग चुना, जहाँ महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलना, अपनी बात कहना और अपने जीवन के निर्णय लेना भी आसान नहीं था।

मिर्जापुर, सोनभद्र, जौनपुर और प्रयागराज जैसे जिलों के ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में उन्होंने उन महिलाओं के बीच काम शुरु किया जो आर्थिक अभाव के साथ सामाजिक रूढ़ियों, शोषण और कुप्रथाओं से भी जूझ रही थीं। नंदिनी जी ने बदलाव के लिए किसी बड़े मंच से नहीं, बल्कि संवाद, संवेदना और निरंतर जमीनी प्रयासों से शुरुआत की। उन्होंने महिलाओं में यह विश्वास जगाया कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल घर की चारदीवारी से बाहर निकलना नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार भी है।

अपने संस्थान 'महिला प्रबोधिनी फाउंडेशन' के माध्यम से वे अब तक लगभग 1.5 लाख महिलाओं और 50 हजार बेटियों के जीवन को प्रभावित कर चुकी हैं। उनके प्रयास विधवाओं, एकल माताओं, आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं और शिक्षा से वंचित होने की कगार पर खड़ी बेटियों तक पहुँचे हैं। उनका उद्देश्य केवल कौशल विकास या आजीविका उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि महिलाओं को गरिमा, पहचान और आत्मविश्वास प्रदान करना रहा है।

सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व के ये संस्कार उन्हें परिवार से मिले। उनके पिता, स्वर्गीय श्री रमाकांत मिश्रा, एक सम्मानित आईएएस अधिकारी थे, जिनसे उन्होंने समाज के प्रति संवेदनशीलता और कर्तव्यबोध सीखा। उनके पति श्री बिभूति कुमार मिश्रा भी इस सामाजिक यात्रा में निरंतर सहयोगी और सक्रिय सहयात्री रहे हैं।

जमीनी कार्यों के साथ नंदिनी जी संस्थागत स्तर पर भी महिला सुरक्षा और अधिकारों के लिए सक्रिय हैं। वे यौन उत्पीड़न की रोकथाम (POSH) समिति की जोनल चेयरपर्सन तथा दहेज निषेध बोर्ड की सदस्य हैं। उनकी सेवाओं के लिए अमर उजाला के 'अपराजिता' अभियान में उन्हें तीन बार सम्मानित किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सहित अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों द्वारा भी उनके सामाजिक योगदान की सराहना की गई है।

फिर भी उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान कोई पुरस्कार नहीं, बल्कि वह महिला है जो कभी घूँघट और सामाजिक संकोच के पीछे मौन थी और आज आत्मविश्वास से अपने अधिकारों की बात करती है, समूह का नेतृत्व करती है या अपनी बेटी को आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

नंदिनी मिश्रा जी की यात्रा बताती है कि सामाजिक परिवर्तन हमेशा बड़े मंचों से नहीं आता; कभी-कभी उसकी शुरुआत किसी गाँव के छोटे-से आँगन में हुए संवाद और किसी निराश हाथ को विश्वास से थाम लेने से होती है। उनकी यात्रा उन हजारों महिलाओं की नई पहचान, आत्मसम्मान और आशा की यात्रा है, जिनके जीवन में उन्होंने परिवर्तन की ज्योति जगाई है।

न्याय और संवाद की सशक्त पहचान

प्रख्यात अधिवक्ता ईशा मित्तल न्यायालय में प्रभावी पैरवी के साथ–साथ विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान में भी विश्वास रखती हैं। वह इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ स्थित मध्यस्थता एवं सुलह केंद्र में मध्यस्थ (Mediator High Court) हैं। उन्हें सर्वोच्च न्यायालय की मध्यस्थता एवं सुलह परियोजना समिति द्वारा प्रशिक्षित किया गया है भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश द्वारा प्रमाणित मध्यस्थ होने का गौरव प्राप्त है। मध्यस्थ के रूप में वह लगभग 760 मामलों का समाधान करा चुकी हैं। यह उपलब्धि उनकी संवाद क्षमता, धैर्य और मानवीय दृष्टिकोण को विशेष रूप से रेखांकित करती है।

विगत 18 वर्षों से अधिवक्ता के रूप में सक्रिय ईशा मित्तल ने निरंतर परिश्रम, विधिक दक्षता और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता से अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। लगभग दो दशकों की उनकी विधिक यात्रा विभिन्न संवैधानिक, प्रशासनिक एवं जनहित से जुड़े महत्त्वपूर्ण मामलों में प्रभावी पैरवी और व्यापक अनुभव से परिपूर्ण रही है।

कानून के क्षेत्र में सफलता केवल न्यायालय में प्रभावी तर्क प्रस्तुत करने से नहीं मिलती, बल्कि इसके लिए विषय की गहरी समझ, निरंतर परिश्रम, सामाजिक संवेदनशीलता और न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता आवश्यक होती है। इन सभी गुणों को अपने व्यक्तित्व और कार्यशैली में समाहित करने वाली अधिवक्ता ईशा मित्तल आज विधि जगत में एक प्रतिष्ठित एवं प्रेरक नाम हैं। वर्तमान में वह उत्तर प्रदेश सरकार की अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता के रूप में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ में कार्यरत हैं।

ईशा मित्तल सन 2023 से अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता के पद का दायित्व संभाल रही हैं। इससे पूर्व सन 2018 से सन 2023 तक उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार के स्थायी अधिवक्ता के रूप में सेवाएं प्रदान कीं। अपने विधिक जीवन में उन्होंने लगभग 8,500 मामलों में राज्य सरकार की ओर से प्रभावी पैरवी की है। इनमें जनहित याचिकाएं, नीतिगत विषय, सेवा संबंधी विवाद, सरकार का पक्ष रखते हुए उच्च न्यायालय में विशेष अपीलें, भूमि अधिग्रहण जैसे अनेक महत्वपूर्ण मामले सम्मिलित हैं।

उनकी विधिक दक्षता का प्रमाण इस तथ्य से भी मिलता है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश की लखनऊ खंडपीठ में सिटिंग के दौरान उन्हें अनेक महत्वपूर्ण मामलों में राज्य सरकार का पक्ष प्रस्तुत करने का दायित्व सौंपा गया। वह राज्य सरकार से जुड़े गंभीर एवं नीतिगत मामलों में उत्तर प्रदेश के अपर महाधिवक्ता को भी नियमित रूप से सहयोग प्रदान करती हैं। विभिन्न सरकारी विभागों को उच्च न्यायालय एवं अधिकरणों के निर्णयों पर विधिक अभिमत देना भी उनके दायित्वों का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

ईशा मित्तल ने उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद, उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उत्तर प्रदेश लघु उद्योग निगम, उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड तथा 'सांची (प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना)' जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं के स्थायी अधिवक्ता के रूप में भी कार्य किया है। इसके अतिरिक्त वह उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण तथा उत्तर प्रदेश मेडिकल सप्लाइज कॉरपोरेशन लिमिटेड की भी पैनल अधिवक्ता के रूप में संबद्ध हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका प्रदर्शन प्रारंभ से ही उत्कृष्ट रहा। उन्होंने तीन वर्षीय एलएलबी पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही रेडियो एवं टेलीविजन पत्रकारिता के स्नातकोत्तर डिप्लोमा में भी वह प्रथम स्थान पर रहीं। विधि और पत्रकारिता का यह विशिष्ट समन्वय उनके व्यक्तित्व को व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। उनके विधिक आलेख अनेक प्रतिष्ठित विधि पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

ईशा मित्तल ने केवल न्यायालय तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि जनसंचार माध्यमों के माध्यम से विधिक एवं सामाजिक जागरूकता के प्रसार में भी सक्रिय भूमिका निभाई है। वह विभिन्न समाचार चैनलों की परिचर्चाओं में कानूनी–सामाजिक विषयों तथा समसामयिक मुद्दों पर अपने विचार रख चुकी हैं। महिला सशक्तीकरण से

संबंधित उनके विचार अनेक समाचार-पत्रों में भी प्रमुखता से प्रकाशित हुए हैं।

अपनी पढाई के समय में उनकी रचनात्मक प्रतिभा का विस्तार फिल्म निर्माण और संपादन तक भी है। लाल किले के ऐतिहासिक 'मीना बाजार' पर निर्मित उनकी डॉक्यूमेंट्री को सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्वच्छता अभियान पर उनकी बनायी फिल्म को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा केंद्र सरकार की वेबसाइट पर सराहा गया। उत्तर प्रदेश में महिलाओं की प्रगति पर आधारित वृत्तचित्र में उन्होंने रचनात्मक सहयोग दिया।

वह नियमित रक्तदान के माध्यम से मानवीय सेवा का दायित्व भी निभाती हैं। कला के क्षेत्र में भी उनकी उपलब्धि उल्लेखनीय है। उन्होंने छह वर्षीय कथक शास्त्रीय नृत्य पाठ्यक्रम पूर्ण किया है। एक ओर न्यायालय में कानून की बारीकियों पर उनकी सुदृढ़ पकड़ है, तो दूसरी ओर साहित्य, पत्रकारिता, संपादन, फिल्म निर्माण और शास्त्रीय नृत्य के प्रति उनकी रुचि उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को प्रकट करती है।

10 वर्ष से सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन की सदस्य तथा अवध बार एसोसिएशन की आजीवन सदस्य ईशा मित्तल का जीवन इस बात का उदाहरण है कि पेशेवर उत्कृष्टता और सामाजिक संवेदनशीलता एक-दूसरे की पूरक हो सकती हैं। न्यायालय में राज्य के हितों की प्रभावी रक्षा, मध्यस्थता के माध्यम से विवादों का समाधान, महिला सशक्तीकरण की पक्षधरता और रचनात्मक माध्यमों से सामाजिक चेतना का प्रसार-इन सभी क्षेत्रों में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

ईशा मित्तल की उपलब्धियों की यह यात्रा केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प, अनुशासन और सेवा-भाव से निर्मित एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व की पहचान है। उन्होंने सिद्ध किया है कि जब विधिक प्रतिभा के साथ संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व जुड़ जाते हैं, तब सफलता केवल पद अथवा प्रतिष्ठा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज में सार्थक परिवर्तन का माध्यम बन जाती है।

कमजोर बच्चों के जीवन में शिक्षा का उजियारा

'शिक्षा दान महादान' के ध्येय वाक्य को अपने जीवन में साकार करते हुए अलीगढ़ की श्रीमती निरुपमा सिंह आज वंचित और जरूरतमंद परिवारों के लगभग 700 बच्चों के जीवन में शिक्षा का उजाला भर रही हैं।

निरुपमा सिंह का उद्देश्य केवल बच्चों को पढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें संस्कारित, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाना है।अपनी मां और दादी से मिले सेवा एवं संस्कार के भाव से प्रेरित होकर निरुपमा जी ने वर्ष 2019 में इस पुनीत कार्य की शुरुआत की। घर के पास एक पार्क में महज चार बच्चों से शुरू हुआ यह प्रयास आज चार-पांच वंचित बस्तियों के सैकड़ों बच्चों तक पहुंच चुका है। 'जय हिन्द शिक्षण संस्थान एवं कल्याण समिति' के माध्यम से रामघाट रोड, क्वार्सी चौराहे के निकट संचालित यह संस्थान अब शिक्षा और बेहतर भविष्य की उम्मीद का केंद्र बन गया है।

यहां आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को न्यूनतम शुल्क पर छठी कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। साथ ही खेलकूद, सांस्कृतिक और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर भी दिए जाते हैं ताकि गरीबी किसी बच्चे की प्रतिभा और सपनों के आड़े न आए।संस्थान के प्रतिभाशाली बच्चों को आगे की शिक्षा के लिए 'नेह नीड़ फाउंडेशन', ब्रजघाट में अवसर मिलता रहा है। सामाजिक संस्थाओं और शुभचिंतकों के सहयोग से बच्चों को पुस्तकें, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म, बैग तथा अन्य शैक्षणिक सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है।

निरुपमा जी शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं मानतीं। वे बच्चों में श्रम के सम्मान, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करती हैं तथा उन्हें अपने परिवार के संघर्ष को समझने और भविष्य में अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनका संस्थान आज लगभग 10-12 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार भी दे रहा है। चार बच्चों से शुरू होकर 700 बच्चों तक पहुंची यह यात्रा केवल संख्या की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन बच्चों में सपने देखने और उन्हें साकार करने का विश्वास जगाने की कहानी है। निरुपमा जी ने सिद्ध किया है कि समाज में बदलाव के लिए बड़े संसाधनों से अधिक आवश्यक है संवेदनशील हृदय, दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयास। उनका यह प्रयास वास्तव में 'शिक्षा दान महादान' की भावना को चरितार्थ करता है।

पेड़ों की छांव में गढ़ रही नई पीढ़ी

कक्षा से प्रकृति तक, नवाचार से संस्कार तक, एक शिक्षिका ने विद्यालय को बनाया सीखने की जीवंत प्रयोगशाला। शिक्षा केवल किताबों के पन्नों पर लिखे शब्दों को पढ़ लेना नहीं है। शिक्षा तब सार्थक होती है, जब वह बच्चे को अपने आसपास की दुनिया को समझने, सवाल पूछने और उसे बेहतर बनाने की प्रेरणा दे। आजमगढ़ की अर्चना सिंह इसी सोच को अपनी शिक्षण यात्रा का आधार बनाकर विद्यालय को महज पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि सीखने और जीवन को समझने की एक जीवंत प्रयोगशाला में बदल रही हैं।

बीएचयू से पढ़ाई पूरी करने के बाद अर्चना सिंह ने आजमगढ़ के कंपोजिट विद्यालय देवारातु चारा में शिक्षण कार्य शुरू किया। समय के साथ उनका जुड़ाव बच्चों और विद्यालय से इतना गहरा हुआ कि उन्होंने पाठ्यक्रम की सीमाओं से आगे बढ़कर शिक्षा के नए आयाम तलाशने शुरू किए। प्रकृति संरक्षण के प्रति उनके निरंतर प्रयासों ने उन्हें जिले में एक अलग पहचान दी और बच्चे उन्हें प्यार से 'नेचर टीचर' कहने लगे।

अर्चना के विद्यालय में जब उन्होंने काम शुरू किया, तब परिसर में वृक्षों की संख्या महज 10 थी। आज वहां 126 पेड़ खड़े हैं। यह आंकड़ा केवल पेड़ों की संख्या नहीं, बल्कि एक शिक्षक की सोच और बच्चों की भागीदारी से आए बदलाव की कहानी है। विशेष अवसरों और बच्चों के जन्मदिन पर अर्चना उन्हें उपहार में पौधे देती हैं। बच्चे उन पौधों को घर या आसपास लगाकर उनकी देखभाल करते हैं। इस पहल के माध्यम से विद्यालय की चारदीवारी से बाहर भी हरियाली का संदेश पहुंचा है। अब तक 150 से 200 पौधे विद्यालय परिसर के बाहर लगाए जा चुके हैं।

उनके लिए पर्यावरण संरक्षण कोई अतिरिक्त विषय नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा है। अतिरिक्त कक्षाओं में बच्चों को पक्षियों के लिए बर्ड हाउस और दाना-पानी की व्यवस्था करना, हैंडपंप के पानी को नालियों के जरिए पौधों तक पहुंचाकर जल संरक्षण करना और स्थानीय संसाधनों से उपयोगी वस्तुएं तैयार करना सिखाया जाता है। पलाश के पत्तों से दोने, कागज के बैग, दीपावली पर मिट्टी के दीये और होली पर फूलों व सब्जियों से प्राकृतिक रंग तैयार कराने जैसी गतिविधियां बच्चों को प्रकृति के करीब ले जाती हैं। यहां शिक्षा किताबों से निकलकर उनके हाथों और अनुभवों तक पहुंचती है।

अर्चना का मानना है कि स्वस्थ शरीर और रचनात्मक मन के बिना शिक्षा अधूरी है। वर्ष 2025 की राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में विजेता रहने के अपने अनुभव को वह विद्यार्थियों के साथ साझा करती हैं। प्रत्येक माह के दो शनिवार योग गतिविधियां आयोजित होती हैं, जहां शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर योगासन और स्वस्थ जीवनशैली का अभ्यास करते हैं। भारतीय लोक और पारंपरिक कलाओं को भी पीएमएल है। अर्चना के मार्गदर्शन में कई विद्यार्थी ब्लॉक और जिला स्तर की दौड़, खो-खो और कबड्डी प्रतियोगिताओं में विजेता रहे हैं।

अर्चना ने यह भी समझा कि आज के बच्चों को सीखने के लिए आधुनिक साधनों से जोड़ना जरूरी है। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने खर्च पर लैपटॉप, स्पीकर, कॉलर माइक और वीआर बॉक्स की व्यवस्था की। इन उपकरणों की मदद से विद्यार्थी विषयों को केवल सुनते या पढ़ते नहीं, बल्कि उन्हें थ्री-डी अनुभव के माध्यम से देखकर और समझकर सीखते हैं। यही वह बदलाव है, जिसने विद्यालय की तस्वीर बदलने के साथ अभिभावकों की सोच भी बदली है। बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश ने विद्यालय की शैक्षिक, पर्यावरणीय, योग, चित्रकला, आईसीटी और नवाचार संबंधी गतिविधियों की समय-समय पर सराहना की है। विभाग के आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर विद्यालय की 70 से अधिक पोस्ट साझा होना इसकी व्यापक पहचान को दर्शाता है।

अर्चना सिंह की कहानी किसी एक शिक्षिका की उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। यह उस सोच की कहानी है, जो मानती है कि सरकारी विद्यालयों में भी सपनों को आकार देने की पूरी क्षमता है। जरूरत सिर्फ उन्हें सही दिशा देने की है। आज स्थिति यह है कि अभिभावक निजी विद्यालयों की अपेक्षा इस विद्यालय में अपने बच्चों का प्रवेश कराना अधिक पसंद कर रहे हैं। यह बदलाव किसी विज्ञापन का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों की मेहनत, नवाचार और विश्वास का परिणाम है। अर्चना ने साबित किया है कि एक शिक्षक अगर केवल पाठ नहीं पढ़ाए, बल्कि बच्चों में जिज्ञासा, प्रकृति के प्रति संवेदना, स्वस्थ जीवन की आदत, कला की समझ और तकनीक से सीखने का आत्मविश्वास पैदा करे तो विद्यालय की चारदीवारी के भीतर से समाज में बड़ा बदलाव जन्म ले सकता है शायद इसी को शिक्षा का वास्तविक अर्थ कहा जा सकता है। जहां किताबें ज्ञान देती हैं, प्रकृति संवेदना सिखाती है और शिक्षक बच्चों को अपने बेहतर भविष्य की राह खुद तलाशना सिखाता है।

मिट्टी से पहचान, मेहनत से मंजिल

बलिया की पद्मावती की यात्रा में मिट्टी वही है, चाक वही है और हुनर भी वही है, बदला है तो सिर्फ उसे देखने का नजरिया। आज उनके हाथों से आकार लेता हर दीया सिर्फ मिट्टी का उत्पाद नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता की रोशनी का प्रतीक है। हर कुल्हड़ उनकी मेहनत की कहानी कहता है और हर मिट्टी का गमला उस विश्वास की गवाही देता है कि यदि अवसर और हौसला साथ हो तो परंपरा भी आधुनिक उद्यमिता की मजबूत नींव बन सकती है। पद्मावती ने मिट्टी को सिर्फ आकार नहीं दिया, उन्होंने उसी मिट्टी में अपने सपनों को गढ़कर उन्हें रोजगार और आत्मनिर्भरता की पहचान दी है।

मिट्टी को आकार देना आसान नहीं होता। उसके लिए हाथों में हुनर के साथ धैर्य भी चाहिए और उस हुनर को बाजार तक पहुंचाने के लिए हौसले की भी जरूरत होती है। बलिया की पद्मावती देवी ने मिट्टी के इसी हुनर को अपनी ताकत बनाया और धीरे-धीरे एक ऐसा मुकाम हासिल किया, जहां कभी परिवार की गुजर-बसर के लिए मिट्टी के दीये और कुल्हड़ बनाने वाली गृहिणी आज करीब 40 लोगों के लिए रोजगार का आधार बन चुकी हैं।

विशुनपुरा (मानिकपुर) की रहने वाली पद्मावती देवी का जीवन लंबे समय तक मिट्टी और चाक के इर्द-गिर्द ही बीता। पति राजकुमार प्रजापति के साथ मिलकर वह दीये, कुल्हड़ और घरेलू उपयोग की मिट्टी की वस्तुएं तैयार करती थीं। मेहनत बहुत थी, साधन सीमित। कारोबार में संभावनाएं थीं, मगर पूंजी के अभाव में वह अपनी सीमाओं को पार नहीं कर पा रही थी।

पद्मावती के सामने सवाल यह था कि, पारंपरिक हुनर को किस तरह आगे बढ़ाया जाए। जवाब उन्हें सरकारी सहायता के रूप में मिला।

छोटे अवसर से बनी पहचान : वर्ष 2020–21 में पद्मावती ने जिला ग्रामोद्योग कार्यालय से संपर्क किया। उन्होंने मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना के तहत ऋण प्राप्त किया। आर्थिक सहायता मिलने के बाद उनके वर्षों पुराने हुनर को विस्तार देने का अवसर मिला। उन्होंने पारंपरिक तरीके के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ा। उत्पादन बढ़ाने के लिए मशीनें लगाईं और बदलती बाजार-मांग को समझते हुए मिट्टी से बनने वाले उत्पादों में विविधता लाने पर जोर दिया।

जो काम कभी सीमित मात्रा में हाथों और चाक की मदद से होता था, वह अब आधुनिक मशीनों की सहायता से बड़े स्तर पर होने लगा है। वर्तमान में उनके उद्यम में 15 मशीनें संचालित हैं। इन मशीनों से दीये, कुल्हड़, गमले और विभिन्न प्रकार के सजावटी मिट्टी के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। यह बदलाव केवल उत्पादन में नहीं बल्कि इसके साथ पद्मावती के उद्यम का दायरा भी लगातार बढ़ता गया।

स्थानीय हुनर जिलों तक पहुंचा : आज पद्मावती के बनाए उत्पाद केवल बलिया के बाजार तक सीमित नहीं हैं। उनकी पहुंच देवरिया, मऊ और आसपास के जिलों तक हो चुकी है। मिट्टी के पारंपरिक उत्पादों में आधुनिक डिजाइन और बाजार की जरूरतों के अनुरूप बदलाव ने उनके काम को नई पहचान दी है। हाल ही में आयोजित स्वदेशी मेला 2025–26 में पद्मावती ने अपने उत्पादों का स्टॉल लगाया। उनके बनाए मिट्टी के उत्पादों ने लोगों का ध्यान खींचा। जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने भी उनके प्रयास की सराहना की। मेले में उन्हें कई नए ऑर्डर मिले, जो इस बात का संकेत हैं कि स्थानीय स्तर पर तैयार उत्पादों के लिए बाजार में संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

एक चाक से संवरी जिंदगी : पद्मावती की सफलता की सबसे बड़ी खूबसूरती केवल उनके कारोबार के विस्तार में नहीं, बल्कि उससे जुड़े लोगों की संख्या में है। आज उनके उद्यम से करीब 40 लोगों को रोजगार मिला है। कभी परिवार चलाने के लिए पति के साथ मिट्टी के बर्तन बनाने वाली पद्मावती अब खुद एक उद्यम का संचालन कर रही हैं। उनकी मेहनत ने न सिर्फ उनके परिवार को बेहतर जीवन की ओर बढ़ाया, बल्कि दूसरे परिवारों के लिए भी आय का जरिया बनाया है। उनका मानना है कि पारंपरिक कारीगरों के पास हुनर की कमी नहीं होती, कमी होती है तो अक्सर सही मार्गदर्शन, पूंजी और बाजार तक पहुंच की। यदि उन्हें समय पर सहयोग मिल जाए तो यही पारंपरिक काम एक मजबूत व्यवसाय का रूप ले सकता है।

पद्मावती देवी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि किसी हुनर को छोटा समझने की जरूरत नहीं। जरूरत सिर्फ उसे समय के साथ नया रूप देने की है। उन्होंने मिट्टी के पारंपरिक काम को आधुनिक मशीनों, बाजार की समझ और उद्यमशील सोच के साथ जोड़ा और एक छोटे घरेलू काम को रोजगार देने वाले उद्यम में बदल दिया।

कत्थक कलाकार **रुचि बलूनी** मूलतः मेरठ की रहने वाली है। उनका कहना है कि समाज सेवा की प्रेरणा मुझे अल्पायु में मेरठ से दिल्ली की यात्रा के दौरान मिली। जब मैं कत्थक केंद्र, दिल्ली में ऑडिशन देने पहुँची। मुझे लगता था कि मुझे सब आता है। लेकिन वहाँ अन्य कलाकारों के घुंघरू की पहली 'धा' सुनते ही मुझे एहसास हुआ कि समुद्र के सामने मैं तैरना भी नहीं जानती। मेरठ के कलाकार आजीविका के लिए दिल्ली पलायन कर जाते थे। तब मैंने प्रण किया कि जो झिझक मैंने महसूस की, वह मेरठ के किसी अन्य छात्र को न झेलनी पड़े। यही मेरा संकल्प बना कि मैं अपने शहर में ही रहकर कलाकारों को आगे बढ़ाऊँगी।

साक्षात्कार /रुचि बलूनी

कत्थक साधना और समाज सेवा

इस यात्रा में आपके परिवार और उनके संस्कारों का क्या योगदान रहा?

मेरे परिवार ने इस यात्रा में मेरा बहुत साथ दिया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) के दौर में कला को पेशा बनाने पर सवाल उठते ही हैं कि बड़ी उम्र में आजीविका कैसे चलेगी? लेकिन मेरे समर्पण को देखकर उन्होंने मेरा साथ दिया। जब मैं सुबह 4 बजे रियाज करती, तब मेरा परिवार ढाल बनकर खड़ा रहता। परिवार ने मुझे धैर्य और मेहनत सिखाई, क्योंकि कलाकार का जीवन तपने से ही निखरता है।

कत्थक की ओर आपका पहला कदम कैसे बढ़ा?

संगीत और नृत्य के प्रति रुचि मुझे बचपन से थी। मेरी माँ सितार वादक थीं पर सीख नहीं पाईं; उनकी वही अधूरी इच्छा मेरे भीतर प्रकट हुई। दूरदर्शन पर 'क्लासिकल डांसर्स ऑफ इंडिया' कार्यक्रम देखकर मंच पर जाने की तीव्र अभिलाषा जागी। इस शास्त्रीय नृत्य से मिलने वाले सुकून और मानसिक शांति ने मुझे इसे जीवन का ध्येय बनाने की प्रेरणा दी।

कत्थक में 'ताल-लय' और 'भाव-अभिनय' के बीच संतुलन साधना कितना चुनौतीपूर्ण है?

कत्थक के अलग-अलग घरानों की अपनी विशेषता है। लखनऊ घराना नजाकत और भावपूर्ण अभिनय के लिए जाना जाता है, तो जयपुर घराना कठिन लयकारी और भक्ति रस के लिए। मैंने लखनऊ से बुनियादी और जयपुर से उन्नत प्रशिक्षण लिया है। मैं बच्चों को पहले कई वर्षों तक केवल लय-ताल की मजबूत नींव देती हूँ। भाव और अभिनय तो परिपक्वता का विषय है, जो अनुभव के साथ खुद चरित्र में उतरता है।

दो दशकों की यात्रा में आपके मुख्य अनुभव और उपलब्धियाँ क्या रही हैं?

इन दो दशकों में मैंने लगभग 10,000 बच्चों को नृत्य सिखाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया है। मेरठ, जो पहले केवल कृषि के लिए जाना जाता था, आज कत्थक और संस्कृति के लिए जाना जाता है। इस सफर ने मुझे सिखाया कि कला के प्रति ईमानदारी हो, तो जगह बदलने की ज़रूरत नहीं है। यदि आप शिद्दत से काम करेंगे, तो आपकी कला खुद बोलेगी।

गुरु जी की किस सीख से आपको सबसे ज्यादा संबल मिला?

दूसरे बच्चे के जन्म के बाद वापसी के समय मेरे गुरु जी ने एक अमूल्य सीख दी। उन्होंने समझाया कि ईश्वर ने हर किसी के जीवन का क्रम अलग तय किया है; किसी के जीवन में पहले शिक्षक बनना लिखा होता है, तो किसी के कलाकार। इसलिए दूसरों से तुलना करके निराश नहीं होना चाहिए। बल्कि पूरी ईमानदारी से निरंतर प्रयास जारी रखना चाहिए।

पारंपरिक कत्थक में आज के नए प्रयोगों पर आपका क्या दृष्टिकोण है?

कला बहते हुए पानी की तरह है, ठहरा हुआ पानी तो गंदा हो जाता है। अगर हमारे पूर्वज नए प्रयोग न करते, तो कला लुप्त हो जाती। आज कत्थक के माध्यम से हम नारी के भावों, देशभक्ति और सामाजिक मुद्दों को भी मंच पर प्रस्तुत कर सकते हैं। नए प्रयोगों से आज की युवा पीढ़ी को कठिन अभ्यास और शॉर्टकट्स के बीच का अंतर समझने का अवसर मिलता है।

पश्चिमी नृत्य पसंद करने वाली युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

आज के रील के युग में युवाओं में धैर्य की बहुत कमी है। मेरा संदेश है कि हमेशा अपने दिल की सुनें। जिस विषय में आपकी अंतरात्मा की रुचि होगी, उसमें आप अपना शत-प्रतिशत दे सकेंगे। खुद पर और अपने कर्म पर विश्वास रखें।

- प्रेरणा टीम

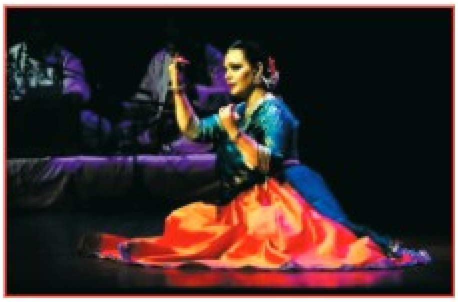

कचरे से संवरा कारोबार

कचरा अक्सर हमारे लिए बेकार होता है, लेकिन सही नजरिया हो तो वही कचरा खेतों के लिए खाद और परिवारों के लिए आय का जरिया बन सकता है। गाजीपुर के गोपालपुर गांव के दाड़ीबाड़ी मौजा में दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने इसी सोच को अपनी मेहनत से साकार किया है। समूह की अध्यक्ष रीना देवी के नेतृत्व में महिलाएं गोबर, सूखी पत्तियों और रसोई के जैविक कचरे से वर्मी कंपोस्ट तैयार कर रही हैं। उनका यह प्रयास न केवल खेती को प्राकृतिक पोषण दे रहा है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता की एक नई कहानी भी लिख रहा है।

रीना देवी के अनुसार कृषि में रासायनिक उर्वरकों पर बढ़ती निर्भरता और समय-समय पर यूरिया तथा डीएपी की उपलब्धता को लेकर आने वाली परेशानियों के बीच जैविक खाद की उपयोगिता लगातार बढ़ रही है। रीना देवी और उनके समूह की महिलाओं ने इसी संभावना को पहचाना, उनका मानना है कि गांव में आसानी से उपलब्ध गोबर, खर-पतवार, सूखी पत्तियां, फलों के छिलके और रसोई से निकलने वाला जैविक कचरा अगर सही तरीके से उपयोग किया जाए तो वह बेकार नहीं रहता। केंचुओं की मदद से यही जैविक सामग्री कुछ ही समय में खेतों के लिए उपयोगी खाद में बदल जाती है।

वर्मी कंपोस्ट पूरी तरह प्राकृतिक जैविक उर्वरक है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम सहित कई आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह मिट्टी की जलधारण क्षमता और वायु संचार को बेहतर बनाने में मदद करता है और पौधों की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है।

वर्मी कंपोस्ट तैयार करने की प्रक्रिया जितनी सहज दिखाई देती है, उसके पीछे उतनी ही सावधानी और धैर्य की जरूरत होती है। ग्रामीण महिलाएं अपने घरों में पाले जाने वाले पशुओं का गोबर फेंकने के बजाय उसे कंपोस्ट टैंक तक पहुंचाती हैं। इसके साथ खर-पतवार और अन्य जैविक सामग्री भी मिलाई जाती है। इसके बाद शुरू होता है केंचुओं का काम। ये केंचुए जैविक पदार्थ को धीरे-धीरे विघटित करते हैं और करीब 60 दिनों में उसे उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद में बदल देते हैं। इस प्रक्रिया में बेकार समझी जाने वाली सामग्री खेतों के लिए मूल्यवान संसाधन बन जाती है। यही वजह है कि, समूह की पहल को गांव में 'कचरे से कंचन' बनाने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

दुर्गा स्वयं सहायता समूह में करीब दो दर्जन महिलाएं जुड़ी हुई हैं। वर्मी कंपोस्ट तैयार करने के कार्य में रेखा देवी, पूजा, रीना, रंजू देवी और सोनी सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। समूह एक बार में करीब पांच क्विंटल वर्मी कंपोस्ट तैयार करता है। तैयार खाद को बाजार में अच्छी कीमत पर बेचा जाता है इससे महिलाओं को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। यह काम उनके लिए केवल रोजगार नहीं, बल्कि अपने हुनर और सामूहिक प्रयास के बल पर आर्थिक पहचान बनाने का माध्यम बन रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें बड़े निवेश की अपेक्षा स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल अधिक है। गांव में उपलब्ध गोबर और जैविक कचरा ही इस उद्यम की मूल पूंजी है।

रीना देवी और उनके साथ काम कर रही महिलाओं की पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण बनाती है। यदि गांवों में जैविक कचरे का व्यवस्थित उपयोग किया जाए, तो इससे एक ओर स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सकता है, वहीं दूसरी ओर किसानों को प्राकृतिक खाद और महिलाओं को रोजगार मिल सकता है।

रीना देवी की कहानी इसलिए भी खास है क्योंकि उन्होंने किसी बड़ी फैक्ट्री से शुरुआत नहीं की। उन्होंने अपने आसपास मौजूद संसाधनों को पहचाना और उन्हें अवसर में बदल दिया। आज जिस गोबर और जैविक कचरे को लोग बेकार समझकर छोड़ देते हैं, वही दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए रोजगार, सम्मान और आत्मनिर्भरता का आधार बन रहा है।

किसी भी बड़े बदलाव की शुरुआत हमेशा बड़े साधनों से नहीं होती। कई बार एक छोटा–सा हुनर, कुछ सीखने की ललक और परिस्थितियों से आगे बढ़ने का संकल्प ही बदलाव की पहली सीढ़ी बन जाता है। मिर्जापुर की रिचा गुप्ता की कहानी इसी विश्वास को सच साबित करती है। वर्ष 2021 में महज चार महिलाओं के साथ शुरू हुआ टेडी बियर बनाने का छोटा–सा प्रयास आज करीब 50 महिलाओं के रोजगार और आत्मनिर्भरता का माध्यम बन चुका है। चार महिलाओं से शुरू हुआ यह सफर आज 50 महिलाओं तक पहुंच गया है, सही दिशा में उठाया गया छोटा कदम भी समय के साथ बड़ा बदलाव ला सकता है। उनके हाथों में तैयार होता हर टेडी बियर मानो यही संदेश देता है। रिचा का कहना है कि आत्मनिर्भरता का सपना बड़ा हो सकता है, लेकिन उसकी शुरुआत एक छोटे से हुनर से होती है।

सुई-धागे से सपनों को लगे पंख

रिचा गुप्ता के सामने भी जिंदगी ने आसान रास्ते नहीं रखे थे। पारिवारिक परिस्थितियों के बीच उन्होंने खुद के पैरों पर खड़े होने का संकल्प लिया। शुरुआत ब्यूटी पार्लर के काम से हुई, लेकिन उनकी सीखने की इच्छा उन्हें एक नए क्षेत्र तक ले गई। उन्होंने टेडी बियर निर्माण का काम सीखने का निर्णय लिया और धीरे-धीरे डिजाइन, कटिंग, सिलाई और फिनिशिंग की बारीकियों में दक्षता हासिल की।

जब हुनर पर भरोसा मजबूत हुआ तो रिचा ने इसे अपने तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने आसपास की महिलाओं को इस काम से जोड़ना शुरू किया और उन्हें टेडी बियर बनाने का प्रशिक्षण दिया। शुरुआत में संख्या छोटी थी, लेकिन धीरे-धीरे महिलाओं का विश्वास बढ़ता गया। आज यही छोटा प्रयास करीब 50 महिलाओं तक पहुंच चुका है। खास बात यह है कि इनमें से कई महिलाएं अपने घर से ही काम कर रही हैं। घरेलू जिम्मेदारियों के बीच उन्हें रोजगार के लिए घर से दूर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। उनके हाथों का हुनर ही उनकी आमदनी का जरिया बन गया है।

यह बदलाव केवल आर्थिक नहीं है। अपने काम से मिलने वाली आय ने महिलाओं के भीतर आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत किया है।

रिचा और उनसे जुड़ी महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे टेडी बियर अब सिर्फ स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं हैं। इनके उत्पाद वाराणसी, प्रयागराज, सोनभद्र, चुनार और विंध्याचल जैसे बाजारों तक पहुंच रहे हैं। इसके साथ ही समूह ने पारंपरिक बाजार की सीमाओं से आगे बढ़कर ऑनलाइन कारोबार की संभावनाओं को भी अपनाया है। सजावटी तोरण द्वार जैसे उत्पाद मीशो और फ्लिपकार्ट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अपनी पहचान बना रहे हैं। यह कदम ग्रामीण और छोटे शहरों की महिला उद्यमिता के लिए खास मायने रखता है। बाजार अब केवल दुकान तक सीमित नहीं है; डिजिटल माध्यमों ने घर बैठे उत्पादों को दूर-दराज के ग्राहकों तक पहुंचाने का रास्ता खोल दिया है।

इस पहल से जुड़ी महिलाओं को औसतन पांच से छह हजार रुपये प्रतिमाह की आय हो रही है। किसी के लिए यह बच्चों की फीस का सहारा है तो किसी के लिए घर के राशन और रोजमर्रा के खर्च में मदद। कुछ महिलाओं के लिए यह आय उनके छोटे-छोटे सपनों को पूरा करने का माध्यम भी बन रही है। रिचा की पहल की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि उन्होंने रोजगार को केवल अपने लिए नहीं देखा। उन्होंने जो सीखा, उसे दूसरी महिलाओं तक पहुंचाया और एक ऐसी श्रृंखला तैयार की, जिसमें एक महिला का हुनर दूसरी महिला के लिए अवसर बन गया।

टेडी बियर देखने में भले ही बच्चों के लिए खिलौना हो लेकिन रिचा और उनसे जुड़ी महिलाओं के लिए यह उससे कहीं अधिक है। यह उनके आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और बेहतर भविष्य का प्रतीक बन चुका है। चार महिलाओं से शुरू हुआ यह सफर आज 50 महिलाओं तक पहुंच गया है, सही दिशा में उठाया गया छोटा कदम भी समय के साथ बड़ा बदलाव ला सकता है। मीरजापुर की रिचा गुप्ता ने साबित किया है कि हुनर को अवसर मिले तो वह सिर्फ एक व्यक्ति की जिंदगी नहीं बदलता, बल्कि कई परिवारों के भविष्य को संवार सकता है। उनके हाथों में तैयार होता हर टेडी बियर मानो यही संदेश देता है। आत्मनिर्भरता का सपना बड़ा हो सकता है, लेकिन उसकी शुरुआत अक्सर एक छोटे से हुनर से होती है।

रीता : नारी-शक्ति का स्वाभिमान

ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी किस तरह बदलाव की नई कहानी लिख सकती है, इसका उदाहरण सहारनपुर की ग्राम पंचायत थरौली की ग्राम प्रधान रीता चौधरी के नेतृत्व में देखने को मिलता है। रीता चौधरी राजनीतिशास्त्र और शिक्षाशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त हैं। वे थरौली गांव के इतिहास में पहली पोस्ट ग्रेजुएट महिला ग्राम प्रधान हैं। उनके नेतृत्व में गांव को आधुनिक, सुरक्षित, स्वच्छ एवं आदर्श ग्राम बनाने की दिशा में अनेक अभिनव पहल की गई हैं। रीता चौधरी की यह यात्रा केवल एक महिला ग्राम प्रधान की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि नारी शक्ति, ग्रामीण नेतृत्व और परिवर्तन की कहानी है।

रीता चौधरी के नेतृत्व में थरौली को सहारनपुर जनपद की प्रथम ISO 9001:2015 प्रमाणित ग्राम प्रधान के रूप में विकसित किया गया है। पंचायत में आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था के साथ ग्रामीणों की सुरक्षा और बेहतर जनसुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है।

गांव में लगभग 30 हाईटेक IP CCTV कैमरे, आधुनिक कंट्रोल रूम तथा करीब 275 स्ट्रीट लाइट लगाई गई हैं। स्मार्ट स्पीकर के माध्यम से सार्वजनिक घोषणाओं और महत्वपूर्ण सूचनाओं को ग्रामीणों तक पहुंचाने की व्यवस्था भी की गई है।

गांव में स्मार्ट स्कूल और आधुनिक लाइब्रेरी विकसित की गई है ताकि ग्रामीण बच्चों एवं युवाओं को बेहतर शिक्षा और अध्ययन का वातावरण मिल सके। स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए गांव में ओपेन जिम की सुविधा भी विकसित की गई है। इससे युवाओं और ग्रामीणों को गांव में ही नियमित व्यायाम एवं फिटनेस के लिए सुविधा मिल रही है। यह पहल स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के साथ-साथ खेल प्रतिभाओं को तैयार करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

थरौली की सबसे उल्लेखनीय पहलों में उत्तर प्रदेश का प्रथम वाटर स्पोर्ट्स सेंटर शामिल है। यहां बच्चों और युवाओं के लिए Kayaking, Canoeing, Dragon Boat और Paddle Sports जैसी गतिविधियों की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसका उद्देश्य ग्रामीण प्रतिभाओं को प्रशिक्षण एवं अवसर प्रदान करना है ताकि थरौली के युवा जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर गांव, प्रदेश और देश का नाम रोशन कर सकें।

थरौली में जल संरक्षण को विकास का महत्वपूर्ण आधार बनाया गया है। वर्षा जल संचयन, भूजल रिचार्ज तथा लगभग सात तालाबों के विकास के साथ योगी लेक को जल संरक्षण और पर्यावरण से जोड़ने का प्रयास किया गया है। स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए पंचायत में लगभग 20 बायोगैस प्लांट स्थापित किए गए हैं। वहीं लगभग 120 इलेक्ट्रिक स्कूटी की उपलब्धता/व्यवस्था के माध्यम से हरित एवं स्वच्छ परिवहन को बढ़ावा देने की पहल की गई है। ऑर्गेनिक उद्यान, वर्मी कम्पोस्ट और पर्यावरण-अनुकूल गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया गया है।

रीता चौधरी ने अपने पति संदीप चौधरी को ऑर्गेनिक फल-खेती के लिए प्रेरित किया। उनके खेत में उच्च-मूल्य वाली मियाजैकी आम की खेती की पहल की गई। संदीप चौधरी के अनुसार, उन्होंने भारत में चार मियाजैकी आम ₹ 2.11 लाख में बेचकर इस क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। यह पहल किसानों को पारंपरिक खेती के साथ उच्च-मूल्य वाली बागवानी, जैविक खेती और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

देशभक्ति और युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को लगभग 1000 मीटर लंबे तिरंगे के साथ भव्य तिरंगा यात्रा आयोजित की जाती है। इसमें गांव के युवा बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। यह आयोजन राष्ट्रीय एकता, भाईचारे और देशभक्ति की भावना को मजबूत करने का माध्यम बन चुका है। सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में गांव में बेटी के जन्म का सामूहिक उत्सव मनाने जैसी पहल की गई है। इसका उद्देश्य बेटियों के जन्म को खुशी और सम्मान से जोड़ना तथा समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करना है। थरौली के विकास मॉडल और यहां किए गए नवाचारों को देखने के लिए तुर्की, ओमान और ब्राजील से भी प्रतिनिधि एवं आगंतुक आ चुके हैं। इससे गांव में किए जा रहे आधुनिक एवं अभिनव प्रयासों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने की बात सामने आती है।

ग्राम पंचायत थरौली को लगातार दो बार मुख्यमंत्री पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की जानकारी है। इसके अतिरिक्त पंचायत को विभिन्न मंचों पर 29 से अधिक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। ये सम्मान पंचायत द्वारा किए गए विकास कार्यों और नवाचारों को प्रोत्साहन देने वाली उपलब्धियों के रूप में देखे जा सकते हैं। रीता चौधरी के नेतृत्व में थरौली की विकास यात्रा यह संदेश देती है कि शिक्षित महिला नेतृत्व, नवीन सोच, जनभागीदारी और निरंतर प्रयासों के माध्यम से एक पिछड़े गांव को भी आधुनिक एवं आदर्श ग्राम में बदला जा सकता है।

मुन्नी देवी : रंगमंच की साधिका

मुन्नी देवी के निर्देशन में अनेक प्रेरणादायी, शिक्षाप्रद और सामाजिक सरोकारों से जुड़े नाटकों का मंचन हुआ है। इनमें 'तुम सम पुरुष न मो सम नारी', 'इच्छा पूर्ति', 'तोते राजा की कहानी' आदि प्रमुख हैं। संस्कृत रंगमंच के क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त 'जइयो कहाँ ए हुजूर', 'जूता आविष्कार', 'लाहौल विला कूवत', 'पति चाहिए', 'पंचलाईट', 'चंद्रमुखी', 'एक राग दो स्वर' और 'एक बच्चे की डायरी' जैसे नाटकों का भी उन्होंने निर्देशन किया है। उनके रंगमंचीय कार्यों में मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक संदेश और मानवीय संवेदनाओं को विशेष स्थान मिलता है।

रंगमंच के क्षेत्र में उनकी सक्रियता का एक उल्लेखनीय उदाहरण वर्ष 2017 में देखने को मिला। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से ए.पी. सेन गर्ल्स मेमोरियल इंटर कॉलेज, चारबाग, लखनऊ में उनके द्वारा 'प्रस्तुति परख नाट्य कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला के समापन अवसर पर मुन्नी देवी के निर्देशन में नाटक 'पछतावा' का सफल मंचन 19 सितंबर 2017 को विद्यालय परिसर में किया गया। उन्होंने कार्यशालाओं और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों में रंगमंच के प्रति रुचि विकसित करने का भी प्रयास किया।

उनकी प्रतिभा और योगदान को विभिन्न अवसरों पर सम्मानित किया गया है। उन्हें 'आदर्श दंपति सम्मान-2015', 'विशिष्ट निर्देशिका सम्मान-2023' तथा 'सत्यमेव जयते ट्रस्ट, लखनऊ' द्वारा वर्ष 2024 में सम्मान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त विभिन्न जिलों में आयोजित नुमाइशों, महोत्सवों और मेलों में नाट्य मंचन एवं रंगमंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए भी उन्हें जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया है।

हिंदी रगमंच के साथ-साथ उन्होंने संस्कृत रंगमंच के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् के सहयोग से उन्होंने 'मध्यमव्यायोग', 'राष्ट्रं भवति सर्वस्वं', 'शंकराचार्य वैभवम्', 'परिज्ञानम्' और 'अधुना अलम् अति भाषणेन' जैसे संस्कृत नाटकों का निर्देशन किया है। रंगमंच के साथ साथ संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार और अध्यापन में भी मुन्नी देवी जी ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनका मानना है कि संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, ज्ञान और परंपरा की समृद्ध विरासत है। इस विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए वे निरंतर प्रयासरत हैं।

मुन्नी देवी बालक और बालिकाओं दोनों को संस्कृत भाषा के संभाषण के लिए कार्यशालाएं कराती हैं। उन्हें संस्कृत भाषा बोलने के लिए प्रेरित करतीं हैं। वे गुरुकुलों में भी संस्कृत का शिक्षण करती हैं और विद्यार्थियों को भाषा के ज्ञान के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से जोड़ने का प्रयास करती हैं। समय-समय पर वे उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् द्वारा आयोजित संस्कृत भाषा प्रशिक्षण एवं संस्कृत संभाषण कार्यक्रमों में भी सक्रिय सहभागिता करती हैं।

सरकार द्वारा संचालित इन कार्यक्रमों का उद्देश्य संस्कृत को केवल पुस्तकों और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर उसे व्यवहार और संवाद की भाषा बनाना है। मुन्नी देवी इसी उद्देश्य को अपने शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से आगे बढ़ा रही हैं।

मुन्नी देवी की विशेषता यह है कि उन्होंने भाषा, रंगमंच, शिक्षा और संस्कार - इन सभी को एक-दूसरे से जोड़ा है। एक ओर वे संस्कृत के अध्यापन और संभाषण के माध्यम से बालक-बालिकाओं को भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ रही हैं, दूसरी ओर रंगमंच के माध्यम से समाज में सकारात्मक संदेश और जीवन-मूल्यों का संचार कर रही हैं। लगभग ढाई दशकों की उनकी रंगमंचीय साधना और संस्कृत भाषा के प्रति समर्पण उन्हें उन कर्मठ महिलाओं की श्रेणी में खड़ा करता है, जो अपनी संस्कृति और कला की विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। मुन्नी देवी का कार्य वास्तव में भाषा, कला, शिक्षा और सामाजिक चेतना का सुंदर संगम है। ◘

रंगमंच केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने, संवेदनशील बनाने और जीवन-मूल्यों को स्थापित करने का प्रभावी साधन भी है। इसी विचार को आत्मसात करते हुए श्रीमती मुन्नी देवी पिछले लगभग 25 वर्षों से रंगमंच के क्षेत्र में सक्रिय हैं। अभिनय, निर्देशन और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने रंगमंच को सामाजिक चेतना और शिक्षा से जोड़ने का निरंतर प्रयास किया है। हिंदी साहित्य में लखनऊ विश्वविद्यालय से परास्नातक मुन्नी देवी की नाट्य संस्था 'अनादि' भी इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रही है।

YOUR DATA
YOUR LOCATION
YOUR BUSINESS.
YOUR COUNTRY.
SECURE
RESILIENT
SOVEREIGN
INDIA
20 TECH ORGANISATIONS
ACTUALLY CONTROL YOUR DATA
Your Control can disappear any moment.
Data Sovereignty begins with-
Ability to Recover.
iBART™
MeshDefend™
Recoverability
Resilience
DPDP Act
Sovereignty
100% Make in India.
For organisations that cannot afford to lose control.
No Obligation Cyber Recoverability (CR) Rating Call
Reach us now.
ITS Technology Solution Private Limited
Sector 19, Noida, 201301, UP, India.
info@itsimple.in | +91 9220127676 | www.itsimple.in
itSimple
बैकअप सरल है
"NATIONAL SOVEREIGNTY: MEANS DATA BELONGS TO THOSE WHO GENERATE IT."
- Narendra Modi

साक्षात्कार /रश्मि आर्या

संघर्ष को संकल्प में बदला

रश्मि आर्या कहती है कि मेरे लिए समाज सेवा कोई अलग से किया जाने वाला कार्य नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक उद्देश्य है। पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण बचपन से ही मेरे मन में यह भावना रही कि मनुष्य का जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी होना चाहिए। भारतीय संस्कृति और वैदिक विचारधारा ने मेरे भीतर सेवा, त्याग, करुणा और परोपकार के संस्कारों को मजबूत किया। वह दोहराती हैं कि मेरे लिए समाज सेवा कोई उपलब्धि नहीं, बल्कि ईश्वर द्वारा दिया गया एक अवसर है। जब तक जीवन है, मेरा प्रयास रहेगा कि शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य और सेवा को माध्यम बनाया।

आपको समाज सेवा की प्रेरणा कहाँ से मिली?

रश्मि आर्या कहती हैं कि समाज में जब मैंने अभावग्रस्त, असहाय और विशेष रूप से बालिकाओं की स्थिति को देखा तो मन में यह विचार और दृढ़ हुआ कि यदि हम सक्षम हैं तो हमें किसी के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आगे आना चाहिए। इसी भावना ने मुझे समाज सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ाया। मेरे लिए सेवा का अर्थ केवल किसी को आर्थिक सहायता देना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को शिक्षा, संस्कार, आत्मनिर्भरता और सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर देना है।

परिवार के संस्कारों ने आपकी इस यात्रा को किस प्रकार दिशा दी?

परिवार से मिले संस्कारों ने मेरे जीवन की दिशा निर्धारित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बचपन से ही हमें सादगी, अनुशासन, परिश्रम, सत्य, करुणा और दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझने की शिक्षा मिली। मेरे जीवन में यह भावना रही कि यदि ईश्वर ने हमें कुछ सामर्थ्य दी है तो उसका उपयोग केवल व्यक्तिगत सुख-सुविधा के लिए नहीं, बल्कि समाज के हित में होना चाहिए। यही संस्कार आगे चलकर मेरे जीवन का संकल्प बन गए। मैं मानती हूँ कि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहली पाठशाला उसका परिवार होता है। परिवार से मिले संस्कार ही कठिन परिस्थितियों में हमें सही निर्णय लेने और अपने उद्देश्य पर टिके रहने की शक्ति देते हैं।

आपकी समाजसेवा यात्रा में किन प्रमुख क्षेत्रों और वर्गों के लिए आपने कार्य किया है?

मेरी समाजसेवा यात्रा का सबसे प्रमुख केंद्र बालिका शिक्षा और महिला सशक्तिकरण रहा है। मेरा विशेष प्रयास रहा है कि बालिकाओं को केवल किताबी शिक्षा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, वैदिक ज्ञान, संस्कार, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता से भी जोड़ा जाए। इसी उद्देश्य से श्रीमद् दयानंद उत्कर्ष आर्ट कन्या गुरुकुल के माध्यम से बालिकाओं के लिए शिक्षा और संस्कार का कार्य किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि एक शिक्षित और संस्कारित बेटी केवल अपना जीवन नहीं बदलती, बल्कि पूरे परिवार और आने वाली पीढ़ियों को दिशा देती है। इसके साथ ही समाज के जरूरतमंद वर्गों, निर्धनों, वृद्धों और असहाय लोगों की सहायता, महिला जागरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, पौधारोपण और भारतीय संस्कृति एवं वैदिक परंपराओं के संरक्षण के क्षेत्र में भी निरंतर कार्य करने का प्रयास रहा है।

आज मेरा एक बड़ा संकल्प गुरुकुल एवं आयुर्वेदिक चिकित्सालय के माध्यम से शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों में समाज को सेवा प्रदान करना है। मेरा उद्देश्य ऐसी व्यवस्था विकसित करना है जहाँ जरूरतमंद व्यक्ति को शिक्षा, संस्कार और स्वास्थ्य की सुविधाएँ सम्मानपूर्वक मिल सकें तथा वृद्धों, निर्धनों और असहाय लोगों को भी उचित देखभाल और सहयोग प्राप्त हो।

इस सेवा-यात्रा में ऐसा कौन-सा अनुभव रहा जिसने आपको प्रभावित किया?

मेरे जीवन का सबसे बड़ा अनुभव यह रहा है कि समाज में बहुत से लोग साधनहीन हो सकते हैं, लेकिन उनमें प्रतिभा, क्षमता और आगे बढ़ने की अद्भुत इच्छा होती है। विशेष रूप से जब मैंने बालिकाओं को सीमित परिस्थितियों से निकलकर

शिक्षा प्राप्त करते, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते और अपने पैरों पर खड़े होते देखा, तो मुझे महसूस हुआ कि सही दिशा और अवसर मिल जाए तो एक छोटी-सी सहायता भी किसी के पूरे जीवन को बदल सकती है। मेरे लिए गुरुकुल की प्रत्येक बालिका की प्रगति एक प्रेरणा है। जब कोई बच्ची अपने सपनों के बारे में आत्मविश्वास से बात करती है और अपने भविष्य को लेकर बड़े लक्ष्य निर्धारित करती है, तो लगता है कि हमारी सेवा सार्थक हो रही है। इस यात्रा ने मुझे एक बात बहुत गहराई से सिखाई है कि सेवा में सबसे महत्वपूर्ण दान केवल धन का नहीं, बल्कि समय, संवेदना, विश्वास और अवसर का होता है। किसी व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा कर देना, उसे जीवन भर सहायता देने से कहीं बड़ी सेवा है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए आपके जीवन और समाज सेवा की यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण संदेश क्या है?

आज की युवा पीढ़ी के पास ज्ञान, तकनीक और अवसर पहले की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। मेरा युवाओं से यही कहना है कि अपनी प्रतिभा और ऊर्जा का उपयोग केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए न करें, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी लगाएँ। बड़ा बनने से पहले अच्छा इंसान बनना आवश्यक है। अपने माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करें, भारतीय संस्कृति और अपनी जड़ों से जुड़े रहें तथा शिक्षा को केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम न मानकर अपने व्यक्तित्व और समाज के निर्माण का साधन बनाएँ। युवाओं से मेरा विशेष आग्रह है कि वे कम से कम अपने जीवन में किसी एक व्यक्ति, एक बच्चे, एक बालिका, एक जरूरतमंद परिवार, किसी वृद्ध या किसी सामाजिक कार्य से अवश्य जुड़ें। यदि देश का प्रत्येक युवा यह संकल्प ले कि वह अपने सामर्थ्य के अनुसार समाज को कुछ देगा, तो भारत का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो सकता है।

मेरा जीवन-संदेश भी यही है-"सेवा को जीवन का उद्देश्य बनाइए, संस्कारों को जीवन का आधार बनाइए और राष्ट्रहित को अपने कर्मों की दिशा बनाइए।" ◘

लगन ने कामिनी को निखारा

लखनऊ के निकट स्थित कोरियानी गांव की गलियों में आज जिस महिला सशक्तिकरण की मिसाल की चर्चा होती है, उसकी शुरुआत एक साधारण गृहिणी के छोटे से सपने और बड़े साहस से हुई थी। यह कहानी है 'कामिनी वर्मा' की, जिन्होंने न केवल अपनी जिंदगी बदली, बल्कि हजारों महिलाओं के जीवन में भी नई रोशनी भर दी।

कामिनी की शादी एक सामान्य किसान परिवार में हुई थी। परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी। आय का एकमात्र साधन पति की थोड़ी-सी खेती थी, जिससे किसी तरह घर का खर्च चल पाता था। कामिनी के सामने सबसे बड़ी चिंता अपनी 'पाँच बेटियों' के भविष्य की थी। उन्होंने अपनी आंखों के सामने गरीबी और संघर्ष को देखा था और वे नहीं चाहती थीं कि उनकी बेटियां भी अशिक्षा और अभाव के उसी चक्र में फंसें। एक मां का संकल्प ही उनके लिए सबसे बड़ी प्रेरणा बना। कामिनी ने तय किया कि

चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न हो, वे अपनी पाँचों बेटियों को पढ़ाएंगी और एक बेहतर जीवन देंगी।

आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए उन्होंने छोटे-छोटे काम शुरू किए। गांव के दर्जियों के पास जाकर कपड़ों में बटन लगाने और काज बनाने का काम किया। उस समय उन्हें एक कपड़े पर मात्र एक रुपये मिलते थे। इसके साथ ही उन्होंने 'साड़ी के डिब्बे बनाना सीखा और प्रतिदिन लगभग 1000 डिब्बे तैयार करने लगीं।' दिनभर की मेहनत के बाद उनके हाथ में लगभग '20 रुपये प्रतिदिन' आते थे। राशि भले ही छोटी थी, लेकिन उनके सपनों की उड़ान बहुत बड़ी थी। इन्हीं पैसों से उन्होंने अपनी पाँचों बेटियों की पढ़ाई का खर्च उठाना शुरू किया और धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ती गईं।

कामिनी की लगन और मेहनत ने आसपास की महिलाओं को भी प्रेरित करना शुरू कर दिया। उन्होंने देखा कि गांव की अनेक महिलाएं प्रतिभाशाली हैं, लेकिन अवसर और उचित मार्गदर्शन के अभाव में अपनी क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पा रही हैं। यहीं से कामिनी ने केवल अपने परिवार तक सीमित रहने के बजाय पूरे समाज के लिए कार्य करने का निर्णय लिया।

उन्होंने महिलाओं को संगठित करना शुरू किया और उन्हें स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups) से जोड़ना आरंभ किया। समय के साथ उनकी यह पहल एक बड़े अभियान में बदल गई। आज कामिनी वर्मा लगभग '3000 महिलाओं के विशाल क्लस्टर' का संचालन कर रही हैं।

उनका कार्य केवल महिलाओं को जोड़ने तक सीमित नहीं है। वे प्रत्येक महिला की रुचि, क्षमता और परिस्थितियों को समझकर उन्हें उपयुक्त व्यवसाय चुनने में मदद करती हैं। किसी को सिलाई-कढ़ाई, किसी को खाद्य प्रसंस्करण, किसी को हस्तशिल्प, किसी को अन्य स्वरोजगार गतिविधियों से जोड़ती हैं। कामिनी ने सरकारी विभागों और विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं (NGOs) के साथ समन्वय स्थापित कर महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करवाए। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि महिलाएं केवल उत्पाद बनाना ही न सीखें, बल्कि उन्हें अपने उत्पादों की बिक्री के लिए उचित अवसर भी मिलें। वे महिलाओं को मेलों, हाट बाजारों और मंडियों तक लेकर जाती हैं, जहां वे अपने उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय कर सकें। इससे महिलाओं की आय बढ़ी, आत्मविश्वास मजबूत हुआ और वे अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में सक्षम हुईं। आज कोरियानी गांव महिला सशक्तिकरण का एक सफल मॉडल बन चुका है। यह गांव एक ऐसे क्लस्टर के रूप में पहचाना जाता है, जिसे देखने और समझने के लिए विभिन्न संस्थाएं और लोग आते हैं। लखनऊ क्षेत्र में यह क्लस्टर महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सामुदायिक विकास का एक प्रेरणास्रोत बन गया है।

उजड़ गया संसार, पर नहीं टूटा हौसला

निरंतर संघर्ष किया, 22 प्रांतों की 1300 बालिकाओं को मिल रही शिक्षा और संस्कार

चार अगस्त 1977 को जौनपुर में जन्मी गुंजन नंदा की जीवन–यात्रा संघर्ष, साहस, आत्मनिर्भरता और सेवा की प्रेरक कहानी है। सामान्य परिवार में जन्मी गुंजन ने बहुत कम उम्र में जीवन की कठोर वास्तविकताओं को देखा। जब वह मात्र आठ वर्ष की थीं, तभी हृदयाघात के कारण उनके पिता का निधन हो गया। पिता का स्नेह, संरक्षण और मार्गदर्शन अचानक उनसे छिन गया। ऐसे कठिन समय में उनके चाचा और भाइयों ने उन्हें संभाला तथा उनकी पढ़ाई और परवरिश को आगे बढ़ाया।

उनकी जीवन–यात्रा बताती है कि परिस्थितियाँ जीवन की दिशा बदल सकती हैं, लेकिन मंजिल तय नहीं कर सकतीं।

रास्ते कितने भी कठिन हों, यदि हौसला जीवित हो तो मंजिल तक पहुँचा जा सकता है।" हाई स्कूल की पढ़ाई के बाद अक्टूबर 1993 में उनका विवाह एक संपन्न परिवार में हुआ। अगस्त 1994 में उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया। मातृत्व की यह खुशी उनके जीवन की सबसे सुंदर अनुभूतियों में से एक थी, लेकिन बेटी अभी केवल दस महीने की थी कि उसके पिता का असमय निधन हो गया।

बहुत छोटी उम्र में पति को खो देना उनके लिए जीवन का दूसरा बड़ा आघात था। एक ओर छोटी बच्ची की जिम्मेदारी थी और दूसरी ओर स्वयं को संभालने की चुनौती। उन्होंने ससुराल में रहने का निर्णय लिया, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें अपने ही घर में परायेपन का अनुभव होने लगा। भावनात्मक और मानसिक संघर्ष इतना बढ़ गया कि लगभग डेढ़ वर्ष बाद वे पूरी तरह टूट गईं और जीवन समाप्त करने का प्रयास तक किया। उपचार के बाद उनके भाइयों ने उन्हें वापस जौनपुर ले जाने का निर्णय लिया।

इस वापसी के साथ उन्हें अपनी बेटी को उसकी पढ़ाई और परवरिश के लिए वहीं छोड़ना पड़ा। एक माँ के लिए अपनी बच्ची से दूर होना उनके जीवन का सबसे गहरा दर्द था। बाद में बेटी से मिलने का रास्ता भी पूरी तरह बंद हो गया। इसी पीड़ा ने उनके भीतर एक संकल्प जन्म दिया कि "मैं अपने जीवन को इस तरह सँवारूँगी कि एक दिन मेरी बेटी को मेरे संघर्ष पर गर्व हो।"

शिक्षा से स्वावलंबन की ओर : भाइयों ने उनका इंटरमीडिएट का फॉर्म भरवाया और उन्होंने दोबारा पढ़ाई शुरू की। आगे पढ़ने की इच्छा के साथ उन्होंने यह निर्णय लिया कि पढ़ाई का खर्च अपने स्वाभिमान के साथ स्वयं उठाएँगी। माँ के सुझाव पर उन्होंने सिलाई सीखना शुरू किया और लगभग चार महीने में अच्छे कपड़े सिलने लगीं। छोटी-छोटी आमदनी ने उनके भीतर यह विश्वास पैदा किया कि वे अपने जीवन को स्वयं संभाल सकती हैं।

सिलाई के साथ उन्होंने बी.ए. में प्रवेश लिया, ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया और विद्यालय में नौकरी भी की। इसी दौरान उन्होंने कंप्यूटर शिक्षा भी प्राप्त की। विद्यालय में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्य करते हुए उनके मन में विचार आया कि बच्चों को अकादमिक शिक्षा के साथ कंप्यूटर शिक्षा भी मिलनी चाहिए। उन्होंने बिना घर में बताए अपनी बचत के लगभग 50,000 रुपये से एक कंप्यूटर खरीदा और विद्यालय में रखवा दिया। बच्चों को कंप्यूटर सिखाना शुरू किया।

जब बड़े भाई को इसकी जानकारी हुई तो घर में नाराजगी हुई, लेकिन गुंजन को संतोष था कि उन्होंने बच्चों के भविष्य के लिए एक सार्थक पहल की है। इस घटना ने उनके भीतर यह विश्वास और मजबूत किया कि सही उद्देश्य के लिए छोटे-से-छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं।

उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की और वर्ष 2000 में एम.ए. में प्रवेश लिया। उनके लिए शिक्षा केवल डिग्री नहीं, बल्कि आत्मविश्वास वापस पाने का रास्ता थी।

बन को मिला दूसरा अवसर : परिवार में दूसरी शादी की बात चली तो उन्होंने कई बार मना किया। पिछले अनुभवों की पीड़ा और भविष्य की आशंकाएँ उनके मन में थीं। जौनपुर जैसे शहर में एक युवा विधवा के लिए अपने दम पर जीवन आगे

बढ़ाना कठिन था। वाराणसी से रिश्ता आया और उन्होंने इसे जीवन का दूसरा अवसर मानकर फरवरी 2001 में दूसरा विवाह स्वीकार किया। वाराणसी, अर्थात काशी, उनके जीवन में नई शुरुआत का द्वार बनी। उन्होंने जेटकिंग, पेंटासॉफ्ट और हैप्पी होम जैसी संस्थाओं में काम किया तथा बाद में यूरेका फोर्ब्स लिमिटेड में सीआरआर के रूप में कार्य किया। लगभग तीन वर्षों बाद उन्होंने इसकी सर्विस फ्रेंचाइजी ले ली। व्यवसाय आगे बढ़ा, आर्थिक स्थिति मजबूत हुई और उन्होंने अपना नया घर लिया। इसी बीच पुत्र का जन्म हुआ।

वर्ष 2008 : एक और परीक्षा : वर्ष 2008 में बीमारी के कारण उनके पति का निधन हो गया। पाँच वर्ष के बेटे की जिम्मेदारी अब उनके कंधों पर थी। लेकिन इस बार वे वह गुंजन नहीं थीं जो परिस्थितियों के सामने टूट गई थीं। पहले के संघर्षों ने उन्हें भीतर से मजबूत कर दिया था।

उन्होंने यूरेका फोर्ब्स का सर्विस सेंटर संभालना जारी रखा। साथ ही एक पार्लर शुरू किया, जहाँ सेवाओं के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता था। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत बुटीक के क्षेत्र में कार्य शुरू किया। माँ की चुनरियों पर गोटा लगाने से शुरू हुआ काम धीरे-धीरे थोक स्तर तक पहुँचा और ग्रामीण महिलाओं को भी रोजगार तथा व्यापार का अवसर मिलने लगा। यहीं उनके व्यवसाय की सोच बदली। व्यवसाय अब केवल उनकी आय का साधन नहीं रहा, बल्कि दूसरी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का माध्यम भी बन गया।

बेटे की शिक्षा:सबसे बड़ी उपलब्धि : बेटे की शिक्षा हमेशा उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता रही। उनके बेटे ने द आर्यन इंटरनेशनल स्कूल, वाराणसी से हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की शिक्षा पूरी की, VIT वेल्लोर से बी.टेक. किया और वर्तमान में TCS में कार्यरत है। बेटे को आत्मनिर्भर देखकर उन्हें लगता है कि उनके वर्षों के संघर्ष व्यर्थ नहीं गए।

पत्रकारिता और सामाजिक सेवा : शिक्षा और लेखन के प्रति रुचि ने उन्हें पत्रकारिता की ओर भी प्रेरित किया। उन्होंने बी.ए. और एम.ए. पत्रकारिता से किया। आज वे समाचार-पत्रों और पुस्तिकाओं में लेखन के साथ पुस्तक लेखन से भी जुड़ी हैं। प्रिंट मीडिया में 'एक संदेश' और 'जगप्रकाश हिंदी दैनिक' में ब्यूरो चीफ तथा जिला संवाददाता के रूप में कार्य कर रही हैं। उनके लिए पत्रकारिता समाज की समस्याओं, लोगों की आवाज और सकारात्मक बदलाव को सामने लाने का माध्यम है।

काशी यूनिवर्सल फाउंडेशन की अध्यक्ष के रूप में वे सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी हैं। संस्था VWSPL, नगर निगम वाराणसी से अधिकृत होकर वेस्ट मैनेजमेंट और सेग्रीगेशन के क्षेत्र में कार्य करती हैं। विभिन्न वार्डों में IEC गतिविधियों के माध्यम से लोगों को कचरा प्रबंधन, कचरे के पृथक्करण और स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाता है।

बेटी से समाज की बेटियों तक : बेटी से बिछड़ने का दर्द आज भी उनके भीतर है, लेकिन उन्होंने उस पीड़ा को कमजोरी नहीं बनने दिया। आज समाज की हर बेटी में उन्हें अपनी बेटी की झलक दिखाई देती है। यही भावना उन्हें बेटियों की सुरक्षा, सम्मान, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के विषयों से जोड़ती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार परिवार से जुड़ने के बाद समाज और राष्ट्र के प्रति उनकी दृष्टि और व्यापक हुई। उन्होंने अनुभव किया कि राष्ट्र निर्माण बड़े मंचों से ही नहीं, बल्कि जागरूक परिवारों, संस्कारित समाज और जिम्मेदार नागरिकों से होता है। इसमें महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास और महिलाओं से संवाद ने उनके अनुभवों को और व्यापक किया। उन्होंने महसूस किया कि परिस्थितियाँ भले अलग हों, लेकिन महिलाओं में आगे बढ़ने की आकांक्षा, परिवार के लिए बेहतर करने की इच्छा और समाज के प्रति योगदान की भावना समान है। आज उनका प्रयास केवल स्वयं आगे बढ़ने का नहीं, बल्कि दूसरी महिलाओं को भी आगे बढ़ाने का है। उनका विश्वास है – "परिवार हमारी पहली जिम्मेदारी है, लेकिन हमारी क्षमताओं की अंतिम सीमा नहीं।"

उनकी जीवन-यात्रा बताती है कि परिस्थितियाँ जीवन की दिशा बदल सकती हैं, लेकिन मंजिल तय नहीं कर सकतीं। पिता की कमी ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया, पति को खोने ने जिम्मेदारी उठाना सिखाया, बेटी से दूरी ने त्याग और धैर्य का अर्थ समझाया, आर्थिक संघर्ष ने मेहनत का मूल्य बताया, शिक्षा ने आत्मविश्वास दिया, व्यवसाय ने स्वावलंबन और सामाजिक कार्य ने सेवा का अर्थ समझाया।

बेटी, तू मेरा नाम कर दे...

एक वादा, जो आज भी जारी है : मीनू खरे

लखनऊ निवासी डॉ. मीनू खरे की कहानी केवल एक सफल महिला की कहानी नहीं है। यह एक माँ के विश्वास की कहानी है। एक पिता के सपने की कहानी है। एक बेटी के संकल्प की कहानी है। उस वादे की कहानी है जो पिता के चले जाने के बाद भी बेटी के भीतर जीवित रहा कि 'बेटी, तू मेरा नाम कर दे'। मीनू ने शायद पिता का सिर्फ नाम ही नहीं किया, उन्होंने उस नाम को अपनी मेहनत, अपनी संवेदना और अपनी उपलब्धियों के आकाश में लिख दिया। उस आकाश में एक संदेश आज भी चमक रहा है। "बेटियाँ किसी से कम नहीं होतीं। उन्हें बस विश्वास की जरूरत होती है। फिर वे इतिहास लिखती हैं।''

हर प्रेरणादायक कहानी की शुरुआत किसी बड़े मंच से नहीं होती। कई बार उसकी पहली पंक्ति किसी छोटे-से घर की चौखट पर लिखी जाती है। किसी माँ के विश्वास में जन्म लेती है और किसी बेटी की आँखों में पलते उस सपने से आकार लेती है, जिसे दुनिया शायद कभी देख ही नहीं पाती।

यह कहानी भी ऐसे ही एक छोटे से घर से शुरू होती है- लखनऊ के चौक की तंग गलियों में बसे एक निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार से। नरेंद्र बहादुर खरे और सुमन खरे का परिवार। जेब में सीमित पैसे थे, परिवार की अपनी आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ थीं, लेकिन इस दंपति के विचार छोटे नहीं थे। सपने तो उससे भी बड़े थे। उनकी दो बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी मीनू और छोटी रश्मि।

लगभग 6 दशक पूर्व उस दौर की कल्पना कीजिए, जब बेटा परिवार की अनिवार्यता माना जाता था। उस समय दो बेटियों के बाद परिवार को सीमित कर देना केवल एक निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक सोच के विरुद्ध खड़ा होना था। लेकिन खरे दंपति ने तय कर लिया था कि "ये दोनों, हमारे लिए दो बेटियाँ नहीं, हमारे दो बच्चे हैं।"

अभावों से भरे उस छोटे-से घर में मीनू और रश्मि सचमुच राजकुमारियों की तरह पलीं। लेकिन यह राजसी जीवन धन से नहीं, माँ-बाप के त्याग से बना था। घर में साधन सीमित थे, मगर बेटियों की पढ़ाई और सुविधाओं में कोई कमी नहीं आने दी। माँ का एक ही कहना था- "तुम दोनों बस पढ़ाई करो।" हर अच्छी किताब के पीछे पिता की मेहनत थी। हर सुविधा के पीछे माँ का त्याग था। हर सपने के पीछे माता-पिता की उम्मीद थी। शायद यही वजह थी कि मीनू ने बहुत छोटी उम्र में समझ लिया था कि उन्हें केवल अपना भविष्य नहीं बनाना है। उन्हें अपने माता-पिता के सपनों का भविष्य बनना है।

एक बेटी की उड़ान : मीनू ने पढ़ाई जारी रखी। आईटी कॉलेज के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में एमएससी की। लेकिन ज्ञान की यह यात्रा केवल विज्ञान तक सीमित नहीं रही। संगीत उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा था। भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय से उन्होंने गायन में संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त की। माँ के मार्गदर्शन से आकाशवाणी की ग्रेडेड लोकगायिका बन गईं। मीनू में अच्छे लेखन की भी प्रतिभा थी।

विज्ञान, संगीत और अभिव्यक्ति। तीनों का यह अद्‌भुत संगम उन्हें एक ऐसी दुनिया की ओर ले जा रहा था, जिसकी शायद उन्होंने स्वयं भी कल्पना नहीं की थी। मीनू जिस आकाशवाणी लखनऊ केंद्र पर लोक संगीत कलाकार के रूप में जाती थीं, किसे पता था कि एक दिन वही लड़की आकाशवाणी के उसी संस्थान में कार्यक्रम अधिशासी, सहायक निदेशक, उपनिदेशक और कार्यक्रम निदेशक बनकर बैठेगी! यूपीएससी के माध्यम से उनका चयन हुआ और पहली नियुक्ति मिली आकाशवाणी वाराणसी में।

घर से दूर पहला शहर। पहली नौकरी। नया दायित्व। नया पेशा और प्रसारण की एक ऐसी दुनिया, जिसमें हर दिन एक नई चुनौती सामने होती थी। मीनू ने आकाशवाणी को केवल नौकरी की तरह नहीं लिया। उन्होंने आकाशवाणी को अपना विश्वविद्यालय बना लिया। हर कार्यक्रम एक पाठ था। हर मुलाकात एक नया अनुभव। हर चुनौती एक नई सीख।

एक दिन पिता चले गए : वाराणसी के बाद उनका स्थानांतरण लखनऊ हुआ। पिता बेहद खुश थे। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। लखनऊ आए अभी केवल छह महीने हुए थे कि एक सड़क दुर्घटना में नरेंद्र बहादुर खरे का निधन हो गया। मीनू के लिए यह केवल पिता की मृत्यु नहीं थी। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी भावनात्मक चोट थी। अंतिम विदाई के समय पिता के पैर छूते हुए, कभी कहे गए पिता के कुछ शब्द जैसे उनके भीतर हमेशा के लिए ठहर गए- "बेटी, तू मेरा नाम कर दे।"

बस यही एक वाक्य मीनू के जीवन का संकल्प बन गया। अब यह केवल पिता की इच्छा नहीं थी। यह बेटी का वचन था। पिता चले गए थे, लेकिन

उनका सपना बेटी के भीतर जीवित था।

पहली पुष्पांजलि : मीनू ने परिवार की जिम्मेदारियों और अपने पेशेवर जीवन को साथ लेकर आगे बढ़ना जारी रखा। आकाशवाणी की पत्रकार और कार्यक्रम निर्माता के रूप में उन्होंने ऐसे विषयों को आवाज दी, जिनका समाज से सीधा संबंध था। बख्शी-तालाब की रामलीला पर बनाई गई उनकी डॉक्यूमेंट्री, जहाँ मुस्लिम कलाकार राम, सीता और रामलीला के अन्य पात्रों की भूमिका निभाते हैं, ने सामाजिक सद्भाव की एक अद्भुत तस्वीर सामने रखी। इस कार्य के लिए उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों आकाशवाणी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

पुरस्कार हाथ में था। मंच सामने था। तालियाँ बज रही थीं। लेकिन मीनू की आँखों के सामने शायद कोई और ही चेहरा था। उन्हें लगा- "आज मैंने पापा को पहली पुष्पांजलि दी है।" उसके बाद यह यात्रा रुकने वाली नहीं थी। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 15 से अधिक सम्मान उनके नाम से जुड़े। लेकिन हर पुरस्कार उनके लिए मंजिल नहीं था। हर पुरस्कार मानो उस अधूरे वाक्य की अगली पंक्ति थी- "बेटी, तू मेरा नाम कर दे"।

रेडियो से जनसेवा तक : मीनू खरे ने रेडियो को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं माना। उन्होंने उसे जनसेवा का माध्यम बनाया। हजारों नई प्रतिभाओं को मंच दिया। युवाओं को जोड़ा। लोक कलाकारों को अवसर दिए। ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम किए। स्वास्थ्य जागरूकता, अंधविश्वास उन्मूलन, सामाजिक सद्भाव, जेंडर संवेदनशीलता और व्यवहार परिवर्तन जैसे विषय उनके प्रसारण का हिस्सा बने।

विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। लोक गायन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुईं। वे खेल प्रसारणों से जुड़ीं। बैडमिंटन, टेबल टेनिस और क्रिकेट की राष्ट्रीय स्तर की रेडियो कमेंटेटर बनीं। साउथ एशियन गेम्स, एशियन गेम्स, ओलंपिक्स खेलों तक की कमेंट्री की और नाम कमाया। आकाशवाणी ने उनके भीतर छिपे लेखक को भी सामने लाया। हाइकु, लघुकथा, कहानी, लेख और व्यंग्य के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई। संगीत था। विज्ञान था। साहित्य था। पत्रकारिता थी। और इन सबके केंद्र में था समाज के लिए कुछ करने का भाव।

फिर पानी ने पुकारा... तीन दशकों से अधिक समय तक आकाशवाणी के माध्यम से हिंदी रेडियो पत्रकारिता से जुड़ी मीनू खरे ने अपने काम का केंद्र जल संरक्षण को बनाया। आकाशवाणी लखनऊ में कार्यक्रम प्रमुख के रूप में उन्होंने जल संरक्षण और सस्टेनेबिलिटी पर 36 दिनों तक लगातार प्रसारण किया। श्रृंखला का नाम था- "बूंदों की न टूटे लड़ी"। यह केवल एक रेडियो श्रृंखला नहीं थी। यह जल के प्रति समाज की संवेदना जगाने का अभियान था। रेडियो तरंगों के माध्यम से बनी इस मानवीय श्रृंखला ने एक एशियन रिकॉर्ड बनाया। इसी सोच से जन्म हुआ- "पानी की कहानी", एक ऐसा डिजिटल मीडिया अभियान, जिसका उद्देश्य केवल जल संरक्षण की जानकारी देना नहीं, बल्कि लोगों के भीतर जल के प्रति संवेदनशीलता, सम्मान और जिम्मेदारी पैदा करना है। देशभर के जल योद्धा इस अभियान से जुड़े। मीनू उनसे संवाद करती हैं। उनकी कहानियाँ लोगों तक पहुँचाती हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि एक कहानी किसी आदेश से ज्यादा प्रभावशाली हो सकती है।

सबसे बड़ा पुरस्कार : आज लोग उन्हें सफल महिला कहते हैं। कोई उन्हें पत्रकार कहता है। कोई प्रसारणकर्ता। कोई लेखिका। कोई लोकगायिका। कोई जल संरक्षण की कार्यकर्ता। लेकिन मीनू खरे की कहानी को अगर एक वाक्य में समेटना हो, तो शायद वह यह होगी कि एक बेटी ने अपने पिता से किया वादा निभाया। जिस पिता की जेब छोटी थी, उन्होंने बेटी के सपनों को कभी छोटा नहीं होने दिया। जिस माँ ने कहा था कि 'तुम बस पढ़ाई करो', उस माँ की तपस्या को बेटी ने अपनी उपलब्धियों में बदल दिया।

जिस पिता ने कहा था- "बेटी, तू मेरा नाम कर दे।" उस बेटी ने उस वाक्य को अपने जीवन का ध्येय बना लिया। बेटी सीमा नहीं होती। वह विस्तार होती है। वह घर की चौखट से निकलकर दुनिया तक जाती है। वह माँ के विश्वास को उपलब्धि में बदल सकती है। वह पिता के सपनों को पंख दे सकती है। अगर उसे अवसर मिले, विश्वास मिले और उड़ने के लिए खुला आकाश मिले तो वह सचमुच आसमान पर अपने पिता का नाम लिख सकती है। ◻

ब्रज की लोकधुनों को साधा

लोकगीतों और लोक-साहित्य की सृजक, संवाहक एवं संरक्षक

मैनपुरी की धरती जन्मी रागिनी चतुर्वेदी को साहित्य और समाज के प्रति संवेदनशीलता संस्कारों में मिली। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य और राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया तथा संगीत प्रभाकर की शिक्षा प्राप्त की। साहित्य और संगीत का यह अद्भुत संगम आगे चलकर उनके जीवन की विशिष्ट पहचान बना। उनके लिए लोकगीत केवल गाने की विधा नहीं, बल्कि लोकजीवन की धड़कनों को सुनने और उन्हें शब्द एवं स्वर देने का माध्यम हैं। उन्होंने ब्रज की मिट्टी में रचे-बसे गीतों, संस्कारों, ऋतु-परंपराओं और लोकगाथाओं को न केवल स्वर दिया, बल्कि उन्हें लेखन के माध्यम से सुरक्षित भी किया। यही कारण है कि उनका कार्य एक गायिका के कार्यक्षेत्र से आगे बढ़कर एक लोक-सांस्कृतिक संरक्षक का रूप ले लेता है।

लोक-संस्कृति किसी समाज की आत्मा होती है और लोकगीत उस आत्मा की सहज, सरस और संवेदनशील अभिव्यक्ति। पीढ़ियों से जनमानस में गूँजते लोकगीत केवल गीत नहीं होते, वे हमारी स्मृतियों, संस्कारों, रिश्तों, ऋतुओं, उत्सवों और जीवन-दर्शन के जीवंत दस्तावेज होते हैं। बदलते समय में जब लोक परंपराएँ धीरे-धीरे विस्मृति के अंधेरे में जाने लगती हैं, तब कुछ साधक अपनी पूरी निष्ठा से इस सांस्कृतिक विरासत को संजोने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का दायित्व निभाते हैं। रागिनी चतुर्वेदी ऐसी ही एक समर्पित साधिका हैं, जिन्होंने अपना जीवन ब्रज की लोकधुनों, लोकगीतों और लोक-साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन को समर्पित किया है।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की बी-हाई श्रेणी की स्थापित गायिका के रूप में उन्होंने ब्रज के लोकगीतों और लोकगाथाओं को व्यापक श्रोता वर्ग तक पहुँचाया। उनकी आवाज में ब्रज की मिठास, लोकजीवन की सहजता और भावनाओं की आत्मीयता सुनाई देती है।

उनकी साहित्यिक यात्रा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। 'ब्रज के संस्कार गीत', 'ब्रज के लोकगीत', 'ब्रज की लोकगाथाएँ', 'स्वर जाने-पहचाने' जैसी कृतियाँ उनके दीर्घकालिक सांस्कृतिक सरोकारों का प्रमाण हैं। उन्होंने लोकगीतों को केवल संग्रहित नहीं किया, बल्कि उनके पीछे छिपे लोकजीवन, भावबोध और सांस्कृतिक संदर्भों को समझने का प्रयास किया। उनकी लेखनी में लोक के प्रति आत्मीयता और शोध-दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

उनका विशेष कार्य ब्रज की लोकगाथाओं के संरक्षण से जुड़ा है। वर्ष 2019 से 2021 तक ब्व्ज की सीनियर फेलोशिप प्राप्त हुई, जिसका शोध-विषय था - "ब्रज की लोक गाथाएँ आज के परिप्रेक्ष्य में।" यह उनके लोक-साहित्य के प्रति गंभीर अध्ययन और प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। रागिनी चतुर्वेदी की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वे जानती हैं कि यदि लोक की आवाज को दर्ज नहीं किया गया, तो आने वाले समय में हमारी सांस्कृतिक स्मृति का एक बड़ा हिस्सा मौन हो सकता है।

उनके साहित्यिक एवं सांस्कृतिक योगदान को अनेक सम्मानों से भी प्रतिष्ठा मिली है। 'ब्रज के संस्कार गीत' के लिए उन्हें 2005 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का रामनरेश त्रिपाठी सम्मान प्राप्त हुआ। 'ब्रज के लोकगीत और मौसम गीत' के लिए 2019 में पुनः रामनरेश त्रिपाठी सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त पद्म गौरव सम्मान, काव्य साधना सम्मान, यशस्वी सम्मान, सीमा स्मृति सम्मान, शारदा सम्मान, शिशु वल्लभ अलंकरण, ब्रज कोकिला सम्मान तथा अन्य अनेक सम्मानों ने उनके सांस्कृतिक अवदान को रेखांकित किया है।

उनकी पुस्तक 'मौन मन की दराज में' उनके व्यक्तित्व के एक और आत्मीय पक्ष से परिचित कराती है। लोकगीतों को स्वर देना, लोकगाथाओं को लिखित रूप देना और उनके सांस्कृतिक संदर्भों को समझना - ये सभी कार्य वस्तुतः अपनी जड़ों को बचाने का कार्य हैं। आज जब आधुनिकता की तेज़ गति में हमारी अनेक पारंपरिक ध्वनियाँ पीछे छूट रही हैं, रागिनी चतुर्वेदी जैसी साधिकाएँ हमें यह याद दिलाती हैं कि विकास के साथ अपनी सांस्कृतिक स्मृति को बचाए रखना भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने ब्रज की लोकधुनों को केवल गाया नहीं, उन्हें सुना, समझा, संजोया और शब्दों में सुरक्षित किया है।

रागिनी चतुर्वेदी इसलिए केवल ब्रज की सुप्रसिद्ध गायिका और लेखिका नहीं हैं; वे ब्रज की लोक-स्मृति की सजग प्रहरी हैं - एक ऐसी साधिका, जिसके स्वर में लोक बोलता है, जिसकी लेखनी में लोकजीवन साँस लेता है और जिसकी साधना में हमारी सांस्कृतिक विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित होती जाती है।

कुछ व्यक्तित्व अपने जीवन से केवल सफलता की कहानी नहीं लिखते, बल्कि एक ऐसा विचार खड़ा करते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों की दिशा बदल देता है। आचार्या **डॉ. सुमेधा** जी का जीवन इसी संकल्प और साधना की कहानी है। उत्तर प्रदेश के अमरोहा जनपद के ग्राम चोटीपुरा के एक साधारण कृषक परिवार में जन्मी 'डॉ. सुमेधा' ने बाल्यावस्था में ही समाज में महिलाओं और बालिकाओं के साथ होने वाले भेदभाव को महसूस किया। उसी अनुभव ने उनके भीतर यह संकल्प जगाया कि बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए, जो उन्हें विदुषी होने के साथ-साथ आत्मनिर्भर, साहसी और संस्कारवान भी बनाए।

साक्षात्कार /डॉ. सुमेधा

संकल्प और साधना की कहानी

कन्या गुरुकुल, नरेला से शास्त्री, व्याकरणाचार्य, वेदाचार्य एवं इतिहासाचार्य की शिक्षा प्राप्त करने के बाद डॉ. सुमेधा ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से संस्कृत में एम.ए. तथा 'वैदिक अथर्व देवता' विषय पर पी-एच.डी. की। चार दशकों से अधिक समय से संस्कृत, वेद, वेदांग, दर्शन, उपनिषद्, निरुक्त और वैदिक एवं संस्कृत साहित्य का अध्यापन करते हुए उन्होंने बालिका शिक्षा को अपने जीवन का ध्येय बनाया।

आज उनके संरक्षण में देश के 22 प्रान्तों की लगभग 1300 बालिकाएँ आवासीय व्यवस्था में शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर रही हैं। लगभग 100 अत्यंत निर्धन परिवारों की बालिकाओं को आवास, भोजन और शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

बालिका शिक्षा को लेकर इतना गहरा संकल्प कब और कैसे पैदा हुआ?

इसकी शुरुआत मेरे बचपन से हुई। लगभग बारह वर्ष की आयु में ही मैंने परिवार और समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को बहुत करीब से देखा। जब अपनी बड़ी बहन को दरवाजे के पीछे बैठकर खाना खाते हुए देखा तो मेरे मन में प्रश्न उठा कि बेटियों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों? इसी तरह जब बालिकाओं से कहा जाता था 'यह भैया का बस्ता है, इसे मत छेड़ना', तो ये बातें मेरे बाल मन पर गहरा प्रभाव डालती थीं। शायद वही छोटी-सी चिंगारी आगे चलकर मेरे जीवन का संकल्प बनी। मैंने निश्चय किया कि बालिकाओं को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वे केवल पढ़ी-लिखी न हों, बल्कि अपने अधिकारों को समझें, आत्मनिर्भर बनें और जीवन की कठिन परिस्थितियों का साहस के साथ सामना कर सकें।

अविवाहित रहकर बालिका शिक्षा के लिए जीवन समर्पित करने का निर्णय क्यों लिया?

गुरुकुलीय आदर्शों के अनुसार शिक्षा पूर्ण करने के बाद लगभग दस वर्ष पश्चात जब मैं घर लौटी तो परिवार की ओर से विवाह का प्रस्ताव आया। मैंने परिवार से कहा कि मेरे विवाह में जितना खर्च होगा, उतनी राशि बालिकाओं की शिक्षा के लिए गुरुकुल की स्थापना में लगा दीजिए। मेरे पिता श्री हरगोविंद सिंह जी ने मेरे निर्णय को स्वीकार किया। उन्होंने विवाह में होने वाले खर्च की राशि गुरुकुल के लिए लगा दी और दस बीघा भूमि भी प्रदान की। मेरे लिए यह केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं था, बल्कि मेरे जीवन के उद्देश्य को पूर्ण करने का माध्यम था।

गुरुकुल की शुरुआत के समय सबसे बड़ी चुनौती क्या थी?

शुरुआत बिल्कुल आसान नहीं थी। ग्रामीण क्षेत्र में बिना चारदीवारी का संस्कृत गुरुकुल अभिभावकों को सुरक्षित नहीं लगता था। ऊँची-ऊँची ईखों के बीच स्थित गुरुकुल में अपनी बेटियों को भेजने से वे स्वाभाविक रूप से चिंतित होते थे। परिणामस्वरूप प्रारंभ में केवल छह बालिकाओं ने प्रवेश लिया। इसके अतिरिक्त बिजली, सड़क, यातायात और स्वास्थ्य जैसी आधारभूत सुविधाओं का भी अभाव था। लेकिन जब उद्देश्य स्पष्ट हो तो कठिनाइयाँ रास्ता रोक सकती हैं, संकल्प को नहीं। हमने धीरे-धीरे लोगों का विश्वास जीता और गुरुकुल आगे बढ़ता गया।

आपने ग्रामीण परिवेश में बालिका शिक्षा के लिए जो कार्य किया है, वह अपने आप में एक मिसाल है। 'श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय' की स्थापना के पीछे आपकी मूल प्रेरणा क्या थी और आज इसकी उपलब्धियों को आप किस रूप में देखती हैं? बालिकाओं को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाना मेरे जीवन का मूल संकल्प रहा है। इसी उद्देश्य से 6 मार्च 1988 को अमरोहा जनपद के चोटीपुरा ग्राम में 'श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय' की स्थापना की। मेरा उद्देश्य था कि बालिकाओं को संस्कृत के माध्यम से वैदिक संस्कारों से युक्त प्राथमिक से उच्च शिक्षा मिले और वे अपने जीवन में स्वावलंबी बनें। आज यह संस्थान भारतीय संस्कृति और संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्धन का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। लगभग 1300

बालिकाएँ यहाँ शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर रही हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं को निःशुल्क भोजन, आवास और शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। यहाँ वेद, गीता, रामायण, दर्शन, व्याकरण और अमरकोष जैसे शास्त्रीय ग्रंथ सामान्य पाठ्यचर्या का हिस्सा हैं। अब तक लगभग 70 बालिकाएँ पी-एच.डी. कर चुकी हैं और अनेक छात्राएँ नेट-जआरएफ (NET-JRF), सरकारी सेवाओं तथा प्रतिष्ठित संस्थानों में शोध के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

आज के समय में जब शिक्षा तेजी से रोजगार-केंद्रित होती जा रही है, आप संस्कृत, संस्कार और आधुनिक शिक्षा के संतुलन को किस प्रकार देखती हैं?

मेरा मानना है कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। संस्कृत हमारी ज्ञान-परंपरा और सांस्कृतिक चेतना की महत्वपूर्ण भाषा है। इसलिए हमने गुरुकुल को केवल पारंपरिक शिक्षा तक सीमित नहीं रखा। संस्कृत बोर्ड के अंतर्गत पारंपरिक शास्त्रीय अध्ययन के साथ विज्ञान और वाणिज्य वर्ग भी प्रारंभ किए गए, ताकि संस्कृत पढ़ने वाली छात्राएँ बीटेक, एमबीबीएस, सीए, सीएस (B-Tech., MBBS, CA, CS) जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भी आगे बढ़ सकें।

आज हमारी छात्राएँ मुख्यधारा में बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। वेद-वेदांगों और शास्त्रों के अध्ययन के साथ आधुनिक विषयों का ज्ञान उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है। मेरा विश्वास है कि प्राचीनता और आधुनिकता, शिक्षा और संस्कार ज्ञान और कौशल का समन्वय ही पूर्ण शिक्षा है।

शिक्षा के अतिरिक्त आपका सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान भी व्यापक है। आप समाज में किस प्रकार का परिवर्तन देखना चाहती हैं?

मेरा प्रयास केवल गुरुकुल तक सीमित नहीं है। महिलाओं के जागरण और सशक्तिकरण के लिए 'बोधमन्त्र' अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ भाग लेती हैं। उन्हें निराशा और चिंता से मुक्त रहने, बच्चों को संस्कारवान बनाने और आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाता है। कन्या प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से आत्मसम्मान, आत्मरक्षा और बौद्धिक विकास पर भी कार्य किया जाता है।

सांस्कृतिक क्षेत्र में यज्ञ-संस्कृति, सोलह संस्कार और वैदिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ विदेशों में भी भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान और कार्यक्रम किए हैं।मेरा विश्वास है कि संस्कृति तभी जीवित रहती है जब वह जीवन का हिस्सा बने। यदि हम शिक्षा के माध्यम से बेटियों को ज्ञान, संस्कार और स्वाभिमान दें तथा अपनी संस्कृति से जोड़ें, तो यही प्रयास सशक्त परिवार, जागरूक समाज और समर्थ राष्ट्र के निर्माण का आधार बनेगा।

विदुषी ने की पर्यावरण से दोस्ती

पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की आवश्यकता बन चुका है। इसी भावना को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर शामली की **विदुषी वशिष्ठ** पिछले कई वर्षों से वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। वर्ष 2016 में एक छात्रा के रूप में शुरू हुआ उनका यह प्रयास आज एक व्यापक पर्यावरणीय अभियान का रूप ले चुका है। अब तक वह लगभग 12,000 पौधों का सफलतापूर्वक रोपण कर चुकी हैं और भविष्य में भी इस अभियान को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

विदुषी वशिष्ठ बताती हैं कि वर्ष 2016 में जब वह अपने पिता के साथ सुबह स्कूल जाती थीं, तब सड़क के दोनों ओर लगे घने और छायादार पेड़ उन्हें विशेष रूप से आकर्षित करते थे। कुछ समय बाद हाईवे को चौड़ा करने के लिए उन्हीं पेड़ों की कटाई शुरू हो गई। सड़क के किनारे लगे पेड़ एक-एक करके काट दिए गए और हाईवे का विस्तार कर दिया गया। पेड़ों की इस कटाई ने उन्हें भीतर तक प्रभावित किया। उन्हें लगा कि जिन पेड़ों को काटे जाने से वे नहीं बचा सकतीं, उनकी भरपाई नए पेड़ लगाकर अवश्य की जा सकती है। इसी भाव से उन्होंने वृक्षारोपण को अपने जीवन का संकल्प बना लिया।

उन्होंने विभिन्न स्थानों पर पौधे लगाने का कार्य शुरू किया। शुरुआत में उन्होंने एक वर्ष में एक हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा, जिसे उन्होंने पहले ही वर्ष पूरा कर लिया। इसके बाद उन्होंने अपने लक्ष्य को लगातार बढ़ाया। वर्ष 2016 से 2024 तक लगभग 12 हजार वृक्षों का सफलतापूर्वक रोपण किया जा चुका है। १२ हजार पौधे लगाने के बाद भी उनका अभियान रुका नहीं है। उन्होंने अगले चार वर्षों में फिर से 10 हजार पौधे लगाने का संकल्प लिया है।

स्काउट-गाइड से मिली सामाजिक चेतना- विदुषी की पर्यावरणीय गतिविधियों का संबंध उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता से भी जुड़ा है। उन्होंने देश और समाज की सेवा के उद्देश्य से भारत स्काउट्स एंड गाइड्स (उत्तर प्रदेश) में प्रवेश लिया। वहां उन्होंने सफलतापूर्वक कैंप किए और वर्ष 2022–23 में स्काउट गाइड राज्य पुरस्कार भी प्राप्त किया, जो महामहिम राज्यपाल द्वारा प्रदान किया गया। स्काउट-गाइड से जुड़ने के बाद उनकी सामाजिक गतिविधियों को और गति मिली। उन्होंने विभिन्न स्कूलों, सड़कों और अन्य संस्थानों में समाजसेवी लोगों के साथ मिलकर वृक्षारोपण का कार्य किया।

शिक्षा के साथ पर्यावरण संरक्षण- विदुषी ने 12वीं के बी.एससी. (B.Sc.) में प्रवेश लिया। प्रकृति के प्रति अपने लगाव को देखते हुए उन्होंने ऐसे विषयों का चयन किया जो पर्यावरण और प्रकृति से जुड़े थे। उन्होंने बॉटनी, जूलॉजी और जियोलॉजी जैसे विषयों का अध्ययन किया। इस शिक्षा ने उनके पर्यावरणीय अभियान को वैज्ञानिक आधार भी प्रदान किया। बी.एससी. के तीनों विषयों के माध्यम से उन्हें पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं, जलवायु, पर्यावरण और पृथ्वी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। उनका मानना है कि इस ज्ञान के माध्यम से वह प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण में और अधिक प्रभावी योगदान दे सकती हैं। इस प्रकार उनके लिए शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि प्रकृति को समझने और उसके संरक्षण का साधन भी बनी।

'पर्यावरण प्रहरी' के रूप में पहचान- पर्यावरण के प्रति विदुषी के लगातार प्रयासों को देखते हुए उन्हें विभिन्न स्तरों पर सम्मान और जिम्मेदारियां भी मिलीं। उनके कार्यों को देखते हुए वन विभाग शामली, ग्रामीण जलापूर्ति विभाग, नमामि गंगे, राज्य स्वच्छ गंगा मिशन तथा उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से उन्हें 'पर्यावरण प्रहरी' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

उन्हें गंगा और उसकी सहायक नदियों के संरक्षण, पुनरुद्धार, स्वच्छता और निर्मलता के लिए कार्य करने का दायित्व भी मिला। वह जिला गंगा समिति, शामली की सदस्य के रूप में बैठकों में नियमित रूप से भाग लेती हैं। वर्ष 2023–24 में वन विभाग शामली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पर्यावरण एवं वन्यजीव जागरूकता कार्यक्रम में सहयोग के लिए उन्हें प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए भी चयन- विदुषी वशिष्ठ की उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण पड़ाव यह भी है कि भारत स्काउट्स एंड गाइड्स की ओर से उनका चयन राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए किया गया है। इस पुरस्कार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण कार्यक्रम वह अंबाला कैंट में पूरा कर चुकी हैं और इसके परिणाम की प्रतीक्षा है। यह उपलब्धि उनके वर्षों के सामाजिक और पर्यावरणीय कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

बूंद-बूंद से बनती है नदी : विदुषी का मानना है कि बड़े परिवर्तन की शुरुआत छोटे-छोटे प्रयासों से ही होती है। उनका संदेश है- 'बूंदें छोटी जरूर होती हैं, लेकिन उनका लगातार बरसना बड़ी-बड़ी

सम्मानों की लंबी सूची

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उनके कार्यों को समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं और जनप्रतिनिधियों ने सम्मानित किया है। उनके प्रमुख सम्मानों में शामिल हैं -

♦ 14 जून 2023 को भारत सरकार के तत्कालीन आयुष मंत्री द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र।

♦ 1 अगस्त 2023 को भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री द्वारा पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र।

♦ 8 जुलाई 2023 को उत्तर प्रदेश सरकार के वन, पर्यावरण, जंतु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की ओर से 10,000 वृक्षारोपण के लिए प्रशस्ति-पत्र।

♦ 26 जुलाई 2023 को शामली के विधायक द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान और 10,000 पौधारोपण के लिए शुभकामना संदेश।

♦ 14 जून 2024 को उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किए गए कार्यों के लिए प्रशस्ति-पत्र।

♦ 24 जनवरी 2025 को उत्तर प्रदेश दिवस समारोह में पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके कार्यों का सम्मान।

♦ 7–10 मार्च 2025 को आयोजित शामली महोत्सव में पर्यावरण संरक्षण के कार्य के लिए जिला प्रशासन शामली द्वारा सम्मान।

♦ 2 अप्रैल 2025 को शामली के विधायक द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रशस्ति-पत्र।

♦ 5 जुलाई 2025 को उत्तर प्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र।

इसके अतिरिक्त पूर्व कैबिनेट मंत्री, पूर्व विधायक, जिला सूचना अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, महिला थाना प्रभारी तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने भी उनके कार्यों की सराहना और सम्मान किया है। 25 मई 2024 को भारतीय विद्यार्थी संगम, शामली द्वारा पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं पौधारोपण के लिए उन्हें दो बार स्मृति-चिह्न प्रदान किया गया।

नदियों का बहाव बन जाता है।' इसी सोच के साथ वह लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने का लगातार प्रयास करती हैं। उनका मानना है कि किसी भी अच्छे परिवर्तन के लिए पहली पहल अत्यंत आवश्यक है। यदि हर व्यक्ति अपने स्तर पर एक छोटा कदम उठाए तो सामूहिक रूप से उसका प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है।

पर्यावरण संरक्षण का अभियान, : विदुषी वशिष्ठ के लिए वृक्षारोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं है। उनका व्यापक उद्देश्य जीव-जंतुओं, नदियों, वायु, मिट्टी, जलवायु और समूचे पर्यावरण का संरक्षण है। उनका विश्वास है कि यदि समाज संगठित होकर आगे बढ़े तो अनेक जीव-जंतुओं को बचाने, नदियों और जलस्रोतों को संरक्षित करने, विलुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करने तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सफलता मिल सकती है।

वर्ष 2016 में सड़क चौड़ीकरण के दौरान पेड़ों की कटाई देखकर उत्पन्न हुई पीड़ा से शुरू हुआ उनका यह सफर आज 12 हजार पौधों के वृक्षारोपण और अनेक पर्यावरणीय सम्मानों तक पहुंच चुका है। लेकिन विदुषी इसे अपनी मंजिल नहीं मानतीं। अगले चार वर्षों में 10 हजार और पौधे लगाने का उनका संकल्प बताता है कि उनके लिए पर्यावरण संरक्षण कोई अस्थायी अभियान नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाला जीवन-कार्य है।

आज जब पर्यावरणीय संकट पूरी दुनिया के सामने चुनौती बनकर खड़ा है, विदुषी वशिष्ठ जैसी युवा पर्यावरण प्रहरी यह संदेश देती हैं कि एक व्यक्ति की छोटी-सी पहल भी बड़े परिवर्तन की शुरुआत बन सकती है।

भारतीय ज्ञान-परंपरा की धरोहर

शोध परक अध्येता, लेखिका, साहित्यकार एवं सामाजिक विचारक डॉ० प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार की प्रेरक जीवन गाथा

16 मार्च 1977 को लखीमपुर खीरी में जन्मीं **डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार** का पैतृक संबंध देवरिया जनपद से है। उनका पालन–पोषण ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ शिक्षा, संस्कार, संस्कृति, अध्यात्म और सामाजिक सरोकारों को जीवन का आधार माना जाता था। उनके पिता श्री वीर बहादुर जी उनके प्रथम गुरु रहे। उन्होंने बचपन से ही उन्हें वेद–मंत्र कंठस्थ कराया, साहस, आत्मनिर्भरता और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनकी माता श्रीमती साावित्री जी स्त्रीरोग चिकित्सक थीं। माता–पिता ने उन्हें पुत्रवत् स्वतंत्रता, षिक्षा और अवसर प्रदान किए। बचपन में उन्हें स्नेह भाव से ''गुड्डू'' कहकर पुकारा जाता था। इस लेख में उनकी जीवन–यात्रा को **बिन्दुवार** प्रस्तुत किया जा रहा है।

डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार का जीवन भारतीय ज्ञान-परंपरा, संस्कार, साहित्य, शोध, सेवा और सामाजिक जागरण को समर्पित एक प्रेरक यात्रा है। उनका व्यक्तित्व इस विचार को साकार करता है कि भारतीय संस्कृति में निहित जीवन-मूल्यों को आधुनिक समय की आवष्यकताओं से जोड़कर नई पीढ़ी के लिए अधिक सार्थक बनाया जा सकता है।

♦बाल्यकाल से ही उनका रुझान अध्ययन की ओर रहा। विज्ञान, सामान्य ज्ञान, साहित्य और महापुरुषों के जीवन से संबंधित पुस्तकें उनके व्यक्तित्व-निर्माण का आधार बनीं। सातवीं कक्षा में लिओर्डो दा विंची के जीवन से प्रेरित होकर उन्होंने ''यूनिवर्सल वुमन'' बनने का संकल्प लिया। आज विभिन्न क्षेत्रों में उनकी सक्रियता उनके पिताश्री की अविस्मरणीय प्रेरणा उसी बाल-संकल्प की सार्थक परिणति है।

♦ वे कभी भी कठिनाईयों एवं संकट के विषय में चर्चा करना उचित नहीं समझतीं, जबकि विषम परिस्थितियों में जीवन में संतुलन कैसे बनाया जाये, इस विषय पर प्रकाष डालना अधिक श्रेष्ठ मानती हैं।

♦ जीवन में आए संघर्षों और कठिनाइयों ने उन्हें तोड़ा नहीं, बल्कि अधिक दृढ़ बनाया। पिता द्वारा प्रदान किया गया वेद-वाक्य 'उद्यानं ते पुरुषं नावयानम्'-अर्थात् परमात्मा ने मनुष्य को ऊपर उठने के लिए बनाया है, नीचे गिरने के लिए नहीं-को उन्होंने जीवन का मार्गदर्शक माना। उन्होंने संकटों को अपना गुरु समझा और ईश्वर पर विश्वास बनाए रखते हुए आगे बढ़ती रहीं। उनका मानना है कि जो व्यक्ति चट्टान की तरह अडिग रहकर जीवन में झंझावातों का सामना करता है उसके सामने कठिनाइयाँ अंततः शीश झुका देती हैं।

♦ उन्होंने जीवन में यही प्रेरणा ली कि संकट और समस्याएं चाहे जीवन में जितने भी तूफान लाएं, वह मानव ही क्या जो टूट जाए, बिखर जाए।

♦ कोई व्यक्ति या समाज चाहे जितनी विघ्न-बाधाएं डाले, उनका मानना है कि नदी की धारा को, पुष्प की सुगंध को, चन्दन की महक को और अध्यात्म व सत्य मार्ग पर चलकर आगे बढ़ने वाले को न तो कोई रोक सका है, न ही कोई रोक सकता है।

उनका कहना है कि- ''धूप लगने से सब्जियों की लहक नहीं जाती,वर्षा के पानी से फूलों की रंगत नहीं जाती, सिल पर घिसने से चंदन की महक नहीं जाती।''

♦ शोध उनके कार्य का महत्वपूर्ण आयाम रहा है। पर्यावरण विषय पर किए गए उनके शोध को 2004 में इण्डिया इंटर नेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 'इको लर्निंग अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। पर्यावरण, समाज, महापुरुषों और भारतीय ज्ञान-परंपरा से जुडे विषयों पर उन्होंने शोधपरक अध्ययन एवं लेखन करती रहीं हैं। कोरोना काल में पारंपरिक ज्ञान से संबंधित ''भैशज्य दीप'' पर उनका शोध भोपाल के समाचार पत्र दैनिक दीन बन्धु में प्रकाषित हुआ, जिसने अनेक लोगों को प्रेरित किया।

♦ वैदिक चिंतन उनके जीवन-कार्य का केंद्रीय आधार है। उन्होंने अनेक 108 कुंडीय और 200-कुंडीय यज्ञानुष्ठानों का आयोजन कराया तथा सोलह संस्कारों के अलावा उन्होंने तीन दाह संस्कार को भी सम्पन्न कराया है। वैदिक परंपरा के अनुरूप समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया। विज्ञान और चिकित्सा की पृष्ठभूमि के कारण वे यज्ञ, संस्कार और भारतीय परंपराओं के अध्यात्म, वैज्ञानिक, तार्किक, सामाजिक, व्यावहारिक तथा पर्यावरणीय पक्ष को युवाओं के सामने सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करती हैं।

♦ सोलह संस्कारों के परंपरा की विशेष बात यह है कि विवाह संस्कार आदि अन्य संस्कार इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं व्यवसाय से जुड़े युवा तथा अनेक अप्रवासी भारतीय (एन.आर.आई.) भी आपसे संस्कारों को सम्पन्न कराते हैं, जिसका मुख्य कारण मंत्रों की व्याख्या अंग्रेजी भाषा में करने के

साथ-साथ वैज्ञानिक तार्किक, सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष को भी प्रस्तुत करती हैं।

♦ होम्योपैथी के माध्यम से वे जरूरतमंद लोगों तक चिकित्सा-सेवा पहुँचाती रही हैं। नारी युवा शक्ति महोत्सव, नायक दिवस और वीरांगना दिवस जैसे आयोजनों द्वारा उन्होंने युवाओं और महिलाओं में संस्कार, संस्कृति और राष्ट्र-चेतना जागृत करती रहीं हैं। इसी व्यापक दृष्टि को उन्होंने 'वेद वसुंधरा मॉडल' के रूप में संगठित सामाजिक पहल का स्वरूप दिया है।

♦ विवाह उपरान्त पारिवारिक उत्तरदायित्वों के साथ लेखन, आध्यात्मिक चिंतन और सामाजिक सेवा में संतुलन बनाए रखना उनके जीवन की विशेष उपलब्धि है। जीवनसाथी श्री सत्येन्द्र जी का अमूल्य सहयोग और दो संतानों (एक पुत्र, एक पुत्री) का अद्‌भूत स्नेह उन्हें निरंतर शक्ति देता रहा है। वे मानती हैं कि भारतीयता और आधुनिकता, विज्ञान और अध्यात्म, शिक्षा और संस्कार तथा परंपरा और प्रगति के संतुलन से ही राष्ट्र का वास्तविक विकास संभव है। यही संतुलित दृष्टि डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार के जीवन और कार्य की विषिष्ट पहचान है।

♦ साहित्य उनके सामाजिक चिंतन एवं जीवन मार्ग को अपने अनुकूल बना लेने की सशक्त अभिव्यक्ति है। वेदों की सूक्तियों, भारतीय जीवन-मूल्यों और आध्यात्मिक चिंतन को आधार बनाकर उन्होंने युवाओं की समकालीन समस्याओं को समझने और उन्हें सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया है। उनकी कृतियाँ ''जलता दीया हवाओं पर'' तथा ''मिट्टी के रंग जीवन के संग'' विशेष रूप से युवा-मन को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने निराशा को आशा में, नकारात्मकता को सकारात्मकता में तथा निरर्थकता की भावना को सार्थक जीवन-दृष्टि में बदलने का प्रयास किया है। उनका साहित्य युवाओं को आत्मविश्वास, संस्कार, आध्यात्मिक चेतना और उद्देश्यपूर्ण जीवन की ओर प्रेरित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य-निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। वेदपाठियों को तैयार करने और वेद-अध्ययन की परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने में भी उनका योगदान रहा है।

वैदिक चिंतन उनके जीवन-कार्य का केंद्रीय आधार है। उन्होंने अनेक 108 कुंडीय और 200 कुंडीय यज्ञानुष्ठानों का आयोजन कराया तथा सोलह संस्कारों के अलावा उन्होंने तीन दाह संस्कार को भी सम्पन्न कराया है।

♦ आज 'वेद वसुंधरा मॉडल' उनके जीवन-कार्य का संकल्प बन चुका है-आत्मनिर्भर, गौरवशाली एवं विकसित भारत के निर्माण हेतु ''नारी-युवा शक्ति संकल्प महोत्सव-2040'' के रूप में। इसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान, शिक्षा, संस्कार, संस्कृति, विज्ञान और आधुनिकता को एक सूत्र में जोड़कर राष्ट्र की युवा एवं नारी शक्ति को सशक्त बनाना है। उनका संकल्प है कि ''वेद वसुंधरा मॉडल'' को एक राष्ट्रीय अभियान के रूप में देशभर में प्रसारित किया जाए ताकि संस्कारित, जागरूक, आत्मनिर्भर और राष्ट्रनिष्ठ युवा एवं नारी शक्ति विकसित भारत की आधारशिला बन सके। यही अब उनके जीवन की दिशा, साधना और सबसे बड़ा सामाजिक संकल्प है।

♦ अध्ययन और प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति उनकी विशेष रुचि रही है। विभिन्न शिक्षक पात्रता एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं, जैसे टीईटी, सुपर टीईटी, सीटीईटी तथा बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना उनकी अध्ययनशीलता और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। अनेक अवसरों के बावजूद उन्होंने नौकरी को अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं बनाया। उनके लिए समाज में कुछ नया करने, युवा एवं नारी शक्ति के लिए सार्थक पहल खड़ी करने और भारतीय ज्ञान-परंपरा को समकालीन जीवन से जोड़ने का संकल्प अधिक महत्वपूर्ण रहा। इसी जीवन-दृष्टि ने उन्हें सामाजिक कार्य के मार्ग पर आगे बढ़ाया और आज 'वेद वसुंधरा मॉडल'' के माध्यम से युवाओं एवं स्त्रियों के जीवन सम्बन्धित एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान करना ही उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य एवं संकल्प बन चुका है।

College Code No. 1549
NIOS NO: 210316
Regd.No. 2011
ESTD. 1996
For the best academic career and sure success in the board examination
"व्यक्तित्व निर्माण की संस्कारशाला"
माँ श्री महाकाली विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज
NPS ACADEMY
WORK IS WORSHIP
C.B.S.E. PATTERN, NEP BASED, NCERT SYLLABUS, U. P. BOARD
Offered Courses
सीधे डॉक्टर बनें
Diploma in Naturopathy
Duration 2 Years course, Six Month Internship (योग्यता कक्षा 12 उत्तीर्ण)
नौकरी हेतु पहली बार सरकार द्वारा NTT कोर्स
Certificate in Early Childhood Care & Education
Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
होम्योपैथी में भविष्य बनायें
Certificate in Homeopathy Dispensing
Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
पढ़ाई के साथ सरकारी कंप्यूटर कोर्स
Certificate in Computer Application
Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
सरकारी नौकरी हेतु
Certificate in Yoga Teacher Training Programme
Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 12 उत्तीर्ण)
English Medium
PLAY GROUP AND DAY BOARDING WITH ALL FACILITIES
• Lecture room for Higher Classes.
• Leadership Programme through Scout-Guide & NSS.
• Charitable Academic and Educational Programme for all.
• Our target is reach to unreachable.
• Minimum fee with high moral value education.
• Our moto is making personality & all round development of child.
OUR BRANCHES
1. NPS ACADEMY, VIJAY NAGAR, SEC-B, NILMATHA ESTD 1996.
2. MAA SRI MAHAKALI VIDYA MANDIR INTER COLLEGE HARIHARPUR, NILMATHA, LUCKNOW. ESTD. 2003
3. DISTANCE LEARNING CENTRE FOR REACH TO UNREACHED NIOS- STUDY CENTRE CODE - 210316
4. SUSHEELA CONVENT, JAWAHARNAGAR, PANT NAGAR, UTTRAKHAND ESTD. 2001
5. GREEN VALLEY SENIOR SECONDARY SCHOOL PITHORAGARH, UTTRAKHAND. ESTD. 2003
6. MAA SRI MAHAKALI INSTITUTE OF PROFESSIONAL EDUCATION ESTD. 2002
BA, BA (JMC), M.COM, M.LIB, MBA, BCA, DBA, DCA, ADCA
9450609011, 8419018191, 9415578649
Dr. Reeta Bhatt (Principal)
mahakaliconvent123@gmail.com
maasrimahakalividyamandir@gmail.com
www.maamahakaligroup.org
Add:- Vijay Nagar, Near Saheed Path - Neelmatha, Lucknow Uttar Pradesh
follow us : # mahakaliconvent

जिसकी लड़ाई, उसकी अगुवाई

25 वर्षों में महिला नेतृत्व की एक सशक्त यात्रा

काशी की रहने वाली रेखा दीदी ने "जिसकी लड़ाई, उसकी अगुवाई" सोच को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर पिछले 25 वर्षों में ग्रामीण महिलाओं के बीच नेतृत्व, स्वावलंबन और अधिकारों की एक ऐसी यात्रा शुरू की, जिसका प्रभाव आज हजारों महिलाओं के जीवन में दिखाई देता है। 10 जुलाई 2000 को महिला स्वरोजगार समिति की स्थापना कर ग्रामीण महिलाओं के बीच नेतृत्व और स्वावलंबन की यात्रा शुरू की। असवारी गाँव की अनुसूचित जाति बस्ती में मात्र ₹150 में कार्यालय– सह–आवास बनाकर उन्होंने महिलाओं के बीच रहकर काम किया। स्टेट बैंक, यूनियन बैंक और नाबार्ड NABARD के सहयोग से लगभग 400 स्वयं सहायता समूह बने और आज संगठन से करीब 25,000 महिलाएँ जुड़ी हैं।

उनका मन इलाहाबाद (प्रयाग) में सिविल सेवा की तैयारी करने का था, लेकिन उन्होंने तैयारी को बहुत अधिक समय नहीं दिया। शायद उनके जीवन की दिशा कुछ और तय थी। उनके मन में यह विचार लगातार मजबूत होता गया कि महिलाओं में नेतृत्व विकास और व्यक्तित्व निर्माण के लिए काम किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि सरकारी नौकरी उन्हें केवल अपने जीवन-यापन तक सीमित कर देगी और एक निर्धारित दायरे में रहकर काम करना होगा, जबकि समाज के बीच रहकर किया गया प्रयास व्यापक बदलाव ला सकता है।

इसी दौरान सेवापुरी, गहरपुर के प्रख्यात समाजसेवी, गांधीवादी और सामाजिक कार्यकर्ता स्वर्गीय इक़बाल भाई, जिन्हें वे स्नेहपूर्वक 'अंकल' कहती थीं, के संपर्क में आने का अवसर मिला। उन्होंने उन्हें मार्गदर्शन देते हुए कहा कि वे एक संगठन बनाएं और उसके माध्यम से पांच पंचायतों में काम शुरू करें। यही मार्गदर्शन आगे चलकर उनके जीवन की दिशा बन गया।

आराजी लाइन ब्लॉक के असवारी गांव पंचायत की अनुसूचित जाति बस्ती में मात्र 150 रुपये में एक छोटा-सा कार्यालय-सह-आवास बनाया गया। वे स्वयं वहीं रहने लगीं। गरीब महिलाओं के बीच, उनके साथ और उनके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समझते हुए। धीरे-धीरे यह प्रयास एक बड़े महिला आंदोलन में बदलने लगा। स्टेट बैंक, यूनियन बैंक और नाबार्ड के सहयोग से लगभग 400 स्वयं सहायता समूह बनाए गए। वर्ष 2008 में संस्था ने बैरवान, मोहनसराय में अपना प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया। इसी परिसर में इन महिलाओं के बच्चों के लिए आईटीआई (ITI) भी शुरू किया गया। महिलाओं की सुविधा के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा ने वहीं अपनी एक छोटी शाखा खोली और महिला शाखा प्रबंधक की नियुक्ति की।

आज वही प्रयास एक विशाल नारी संगठन का रूप ले चुका है, जिससे लगभग 25 हजार महिलाएँ जुड़ी हैं। इन महिलाओं में अब केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता ही नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता और नेतृत्व की क्षमता भी विकसित हुई है। आज वे अपने मुद्दों को लेकर थाना-पुलिस और न्यायालय तक जाती हैं तथा संविधान द्वारा दिए गए अपने अधिकारों की बात मजबूती से रखती हैं।

पंचायत चुनाव हों या अन्य चुनाव, इन महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अब दिखाई देती है। वे केवल मतदाता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बन चुकी हैं। उनकी इस यात्रा को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली। 2017 में संयुक्त राष्ट्र संघ, जिनेवा (UN) में उन्हें महिला सशक्तिकरण पर अपने अनुभव साझा करने का अवसर मिला। उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए और विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने अनुभव साझा करने तथा दूसरों से सीखने का अवसर मिला। कई देशों की यात्राओं के दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण से जुड़ी योजनाओं को समझने और यह जानने का प्रयास किया कि उन्हें किस प्रकार लागू किया जाता है।

उनका कार्य केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। जब सोनभद्र और चंदौली में नक्सलवाद चरम पर था, तब उन्होंने वहां भी महिलाओं के समूह बनाए और रोजगार के माध्यम से उनके साथ काम किया। वाराणसी को केंद्र बनाकर चंदौली, सोनभद्र, मिर्जापुर तथा मध्य प्रदेश के निकटवर्ती आदिवासी क्षेत्र सिंगरौली में भी महिला सशक्तिकरण का कार्य आगे बढ़ाया।

आज उन्हें गर्व है कि जिस संगठन की नींव

उन्होंने रखी थी, उसे वर्तमान में ग्रामीण महिलाएँ स्वयं संचालित कर रही हैं। यही आत्मनिर्भरता उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। अब उन्हें राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में जाकर महिलाओं के साथ काम करने और प्रशिक्षण देने का अवसर मिलता है।

इन 25 वर्षों में उन्होंने केवल सामाजिक कार्य ही नहीं किया, बल्कि इसी यात्रा के दौरान MSW और LLB की पढ़ाई भी पूरी की। आज उनकी संस्था में सैकड़ों सफल केस स्टडी हैं ऐसी महिलाओं की, जिन्होंने अपने जीवन में अनेक उपलब्धियां हासिल कीं और अब उनकी पहचान उनके काम से होती है।

सबसे महत्वपूर्ण बदलाव शायद यह है कि आज ये महिलाएँ एफआईआर (FIR) और एनसीआर (NCR) के अंतर को समझती हैं। वे ग्राम सभा की खुली बैठक में रूप पत्र आठ जैसे दस्तावेजों के महत्व को जानती हैं और अपने अधिकारों एवं सरकारी प्रक्रियाओं के बारे में सवाल पूछने का साहस रखती हैं। जो बातें कभी उनके लिए अनजानी थीं, आज वे उनके अधिकार-बोध का हिस्सा बन चुकी हैं।

बूढ़े हों, बच्चे हों, नौजवान हों, किशोर-किशोरियाँ हों या महिलाएँ, सभी उन्हें स्नेह से रेखा दीदी कहते हैं। उनका जीवन इन ग्रामीण परिवारों के बीच ही बीता है। वे मानती हैं कि एक महिला जब अकेले अपने आत्मविश्वास और मजबूत इरादों के साथ निकलती है तो रास्ते में बहुत संघर्ष आते हैं। लेकिन जब उद्देश्य स्पष्ट हो और काम समाज के हित में हो, तो धीरे-धीरे वही लोग सहयोगी और प्रशंसक बन जाते हैं जो कभी रास्ते की कठिनाई थे। वर्ष 2000 में देखा गया सपना आज साकार हो चुका है - "जिसकी लड़ाई, उसकी अगुवाई।" आज ग्रामीण महिलाएँ अपनी लड़ाई खुद लड़ रही हैं, अपने अधिकारों की बात स्वयं कर रही हैं और अपने समुदाय का नेतृत्व कर रही हैं। उनके लिए इससे बड़ा गर्व और क्या हो सकता है कि जिस परिवर्तन का सपना उन्होंने 2000 में देखा था, आज उसका प्रभाव जमीन पर साफ दिखाई देता है।

संघर्ष किया तो शोहरत मिली

कमांडर रेनू त्यागी की प्रेरक जीवन-यात्रा

"परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन हों, यदि संकल्प दृढ़ हो तो मंजिल तक पहुँचना संभव है।" मेरठ जिले के ग्राम कक्केपुर की बेटी कमांडर रेनू त्यागी की कहानी संघर्ष, संकल्प, मातृशक्ति और राष्ट्रसेवा की प्रेरक कहानी है। मात्र सात वर्ष की आयु में पिता को खो देने के बाद उनका बचपन कठिन परिस्थितियों में बीता। उनकी पढ़ाई कभी ताऊजी तो कभी मामा के घर रहकर पूरी हुई। उनकी माता जी, जो उस समय एम.ए. (इकोनॉमिक्स) शिक्षित थीं, ने पति के निधन के बाद खेतों में मेहनत करते हुए अपने बच्चों का पालन-पोषण किया और उनकी शिक्षा को कभी बाधित नहीं होने दिया।

रेनू के लिए विज्ञान पढ़ना भी आसान नहीं था। दसवीं कक्षा में 59 लड़कों के बीच वे अकेली लड़की थीं। शिक्षकों ने उन्हें आर्ट्स लेने की सलाह दी, लेकिन माँ के दृढ़ विश्वास ने उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने विज्ञान वर्ग चुना और अपने विद्यालय में विज्ञान पढ़ने वाली पहली लड़की बनीं। उनसे प्रेरित होकर उनकी दो सहेलियों ने भी विज्ञान लिया।

बी.एससी. में हिंदी माध्यम से अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकों में बदलाव उनके लिए चुनौतीपूर्ण रहा। पहली बार अंग्रेजी पुस्तकों को रटकर परीक्षा देने के कारण अंक कम आए, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अगले वर्ष हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों से पढ़ाई की और मेहनत के बल पर प्रथम श्रेणी प्राप्त की। इसके बाद माँ और बड़े भाई के सहयोग से मेरठ में रहकर एम.एससी. (गणित) पूरी की।

शिक्षा के बाद उनका लक्ष्य भारतीय सशस्त्र सेनाओं में जाना था। लड़कियों के लिए सीडीएस के माध्यम से सेना में प्रवेश का अवसर आया तो उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की। एसएसबी भी दिया, लेकिन आर्मी की मात्र 15 सीटों वाली मेरिट में उनका स्थान 21वाँ रहा। आर्मी में चयन नहीं हो सका, लेकिन शायद नियति ने उनके लिए भारतीय नौसेना का रास्ता चुना था।

2009 में उनका चयन भारतीय नौसेना में सब-लेफ्टिनेंट के पद पर हुआ। उन्होंने Indian Naval Academy, Kerala में बेसिक ट्रेनिंग पूरी की और पहली पोस्टिंग आईएनएस चिल्का, ओडिशा (INS Chilka, Odisha) में मिली। उनके लिए यह केवल नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा के सपने का साकार होना था।

उनकी सफलता में माता जी और बड़े भाई के साथ कर्नल राजीव देवगन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने रेनू की कमियों को पहचाना, इंटरव्यू की तैयारी कराई और उनमें आत्मविश्वास विकसित किया। रेनू आज अपनी उपलब्धि को ईश्वर का आशीर्वाद, परिवार का सहयोग और गुरु के मार्गदर्शन का परिणाम मानती हैं।

उनकी यात्रा में कई छोटे-छोटे संयोग भी उन्हें ईश्वर की कृपा प्रतीत होते हैं। सरूरपुर कॉलेज जॉइन करने के समय उस रूट पर बस सुविधा नहीं थी, लेकिन उसी वर्ष वहाँ सिटी बस सेवा शुरू हो गई। सपनों की ऊँचाई परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि हमारा संकल्प तय करता है।

बिजनौर के नूरपुर ब्लॉक की प्रमुख **आकांक्षा चौहान** की यात्रा किसी राजनीतिक विरासत से नहीं, बल्कि मेहनत, सामाजिक सरोकार और आगे बढ़ने के दृढ़ संकल्प से बनी है। एक सामान्य परिवार से निकलकर महिला मोर्चा की जिला उपाध्यक्ष और फिर ब्लॉक प्रमुख के पद तक पहुँची आकांक्षा आज ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा और गांवों के विकास को अपनी प्राथमिकता मानती हैं। उनका प्रयास रहा है कि ब्लॉक की प्रत्येक ग्राम पंचायत विकास की प्रक्रिया से जुड़े और विकास का लाभ वास्तव में लोगों तक पहुँचे। प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के प्रमुख अंश–

साक्षात्कार /आकांक्षा चौहान

संघर्ष से उभरा नेतृत्व

अपने बारे में और यहाँ तक की अपनी यात्रा के बारे में बताइए।

यहाँ तक का सफर मेरे लिए आसान नहीं रहा। मैं एक बेहद सामान्य परिवार से आती हूँ और मेरे परिवार में पहले कोई राजनीति में नहीं रहा। मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि यदि मन और नीयत अच्छी हो और व्यक्ति मेहनत के साथ लगातार आगे बढ़ता रहे, तो कठिन रास्ते भी मंजिल तक पहुँचाते हैं। मैंने भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा में जिला उपाध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी निभाई और आज ब्लॉक प्रमुख के पद पर कार्य कर रही हूँ। इस पूरी यात्रा ने मुझे यही सिखाया है कि परिस्थितियाँ चाहे जितनी कठिन हों, मजबूत इरादे और निरंतर मेहनत व्यक्ति के लिए आगे बढ़ने का रास्ता बनाते हैं।

ब्लॉक प्रमुख जैसे पद तक पहुँचने में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

प्रमुख पद तक पहुँचना आसान नहीं था। कई तरह की कठिनाइयाँ आईं, लेकिन मजबूत इरादों और हिम्मत के साथ मैंने उनका सामना किया। इस यात्रा में मेरे पति राशु चौहान का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा। हमारे समाज में आज भी कुछ ऐसी सोच मौजूद है, जो महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका में आगे बढ़ते हुए सहजता से स्वीकार नहीं करती। मुझे भी ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, लेकिन मैंने इन्हें अपने रास्ते की रुकावट नहीं बनने दिया। समाज के लिए कुछ सार्थक करने का उद्देश्य लेकर आगे बढ़ती रही। साथ ही मुझे बहुत से अच्छे लोगों का सहयोग और प्रोत्साहन भी मिला। मेरा मानना है कि नीयत अच्छी हो, मेहनत सच्ची हो और ईश्वर का साथ हो तो कठिन रास्ते भी आसान होते जाते हैं।

किन कार्यों को आप अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानती हैं?

मेरी प्राथमिकता हमेशा महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना रही है। आज मेरे ब्लॉक की कई महिलाएँ अपना स्वयं का रोजगार और उद्यम चला रही हैं। इनमें से कुछ महिलाओं को मुख्यमंत्री स्तर पर सम्मान भी प्राप्त हुआ है। मेरा एक विद्यालय भी है, जहाँ ऐसे जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा में सहयोग किया जाता है जो आर्थिक कारणों से फीस नहीं दे पाते। उन्हें निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने में मदद करना मेरे लिए बहुत संतोष की बात है। इसके अलावा जरूरतमंद परिवारों की बेटियों के विवाह में भी यथासंभव सहयोग करती हूँ। लेकिन इन सबके बीच मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि मैं अपनी कुछ बहनों को आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा होने में सहयोग कर पाई। उनकी सफलता मेरे लिए व्यक्तिगत उपलब्धि से कहीं अधिक मायने रखती है।

आपकी नजर में गांव की महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले वर्षों में काफी बदलाव आया है, लेकिन अभी भी जागरूकता बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक आत्मनिर्भरता को लेकर अनेक महिलाएँ पीछे हैं। हमारे समाज में पुरुष प्रधान सोच का प्रभाव भी कई स्थानों पर दिखाई देता है, जिसके कारण ग्रामीण महिलाओं को अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़ने के अवसर नहीं मिल पाते। यदि आज से करीब 10-12 वर्ष पहले की स्थिति की तुलना करें तो निश्चित रूप से बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है। सरकारी योजनाओं और महिला-केंद्रित प्रयासों ने महिलाओं की भागीदारी और आत्मविश्वास बढ़ाया है। राजनीति और सामाजिक नेतृत्व में भी महिलाएँ पहले की तुलना में अधिक सक्रिय हुई हैं। इसके बावजूद बहुत-सी महिलाओं तक अवसर और जागरूकता पहुँचाना अभी बाकी है।

आप किस कार्य को विशेष मानती हैं?

ग्राम पंचायतों में बुनियादी विकास कार्य हमारी जिम्मेदारी का हिस्सा हैं, लेकिन मेरा प्रयास रहा है कि विकास के साथ सामाजिक जरूरतों को भी जोड़ा जाए। बच्चों की सुविधा के लिए कुछ विद्यालयों में मिड-डे मील शेड बनवाए गए। शहीदों की स्मृति और नई पीढ़ी को उनके योगदान से जोड़ने के उद्देश्य से ब्लॉक में अमृत वाटिका का निर्माण कराया गया। महिलाओं को रोजगार का अवसर देने के उद्देश्य से ब्लॉक परिसर में महिला कैंटीन का निर्माण भी कराया गया। गांव-गांव जाकर चौपाल के माध्यम से लोगों से सीधे संवाद करना, उनकी समस्याएँ सुनना और उन्हें विभिन्न विषयों व योजनाओं के प्रति जागरूक करना लगातार जारी है।

सेहत भी, स्वावलंबन भी

सिमरन साहनी की उद्यमिता की यात्रा वर्ष 1999 में लखनऊ के एक छोटे से वेट लॉस सेंटर से शुरू हुई। आज उनकी वेलनेस सेवाओं से 50,000 से अधिक क्लाइंट्स जुड़ चुके हैं, जिन्होंने सामूहिक रूप से 1,50,000 किलो से अधिक वजन कम किया है। वर्ष 2018 में उन्होंने पति सचिन साहनी के साथ Keeros Foods की स्थापना की, जिसे उसी वर्ष LMA के 'Startup of the Year' सम्मान से नवाजा गया। Keeros को राष्ट्रीय पहचान तब मिली, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 108वें एपिसोड में इसका उल्लेख किया।

वर्ष 2020 में सिमरन ने Fortune–U-S- Department of State Global Women*s Mentoring Partnership में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आज वह 200 से अधिक लोगों की टीम का नेतृत्व करती हैं, जिसमें करीब 80 प्रतिशत महिलाएँ हैं। FICCI FLO Lucknow की Chairperson के रूप में वह 550 महिलाओं के समुदाय को भी नेतृत्व और नई दिशा दे रही हैं।

सेहत से स्वावलंबन तक : कभी–कभी एक छोटी–सी शुरुआत अपने भीतर बड़े बदलाव की कहानी समेटे होती है। सिमरन साहनी की कहानी भी ऐसी ही है। वर्ष 1999 में लुधियाना से एक नई दुल्हन के रूप में लखनऊ आई सिमरन के पास न्यूट्रिशनिस्ट की ट्रेनिंग थी और लोगों को बेहतर स्वास्थ्य देने का सपना। पति सचिन साहनी ने उस सपने को अपना विश्वास दिया और दोनों ने मिलकर एक छोटे से वेट लॉस सेंटर की नींव रखी। उस समय शायद उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन यही शुरुआत हजारों लोगों की जिंदगी और सैकड़ों महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की यात्रा से जुड़ जाएगी।

सिमरन के लिए वजन घटाना कभी केवल तराजू पर बदलते अंकों तक सीमित नहीं रहा। उनकी सोच थी कि व्यक्ति अपने शरीर में स्वस्थ, सहज और आत्मविश्वासी महसूस करे। इसी विचार ने एक सेंटर को धीरे–धीरे लखनऊ और पंजाब में फैले वेलनेस सेंटर्स की श्रृंखला में बदल दिया। समय के साथ इसमें होलिस्टिक हेल्थ और सैलून सेवाएँ भी जुड़ीं। दो दशकों से अधिक के सफर में 50,000 से ज्यादा क्लाइंट्स इन सेंटर्स से जुड़े और सामूहिक रूप से 1,50,000 किलो से अधिक वजन कम किया।

स्वाद में सेहत का नया प्रयोग : लोगों की जीवनशैली और खान–पान को करीब से समझते हुए सिमरन और सचिन के सामने एक सवाल बार–बार आता थाकृसेहतमंद भोजन स्वादिष्ट क्यों नहीं हो सकता?

इसी सवाल से 2018 में Keeros Foods का जन्म हुआ। Keeros Super Snacks के पीछे सोच ऐसे बेहतर स्नैक विकल्प तैयार करने की थी, जिनमें स्वाद और सेहत के बीच समझौता न करना पड़े और जिन्हें डायबिटीज से जूझ रहे लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर भी विकसित किया जाए।

इस प्रयास को जल्द पहचान मिली। Keeros ने 2018 में LMA का 'Startup of the Year' सम्मान हासिल किया और सिमरन को एमएसएमई (MSME) विभाग के कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह द्वारा भी सम्मानित किया गया। एक गौरवपूर्ण अवसर तब आया, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 108वें एपिसोड में Keeros का उल्लेख किया।

सफलता से सरोकार तक : सिमरन की यात्रा की एक और महत्वपूर्ण पहचान महिलाओं को आगे बढ़ाने की उनकी प्रतिबद्धता। TiE से जुड़ाव के साथ उन्होंने उद्यमिता के इकोसिस्टम में सक्रिय भूमिका निभाई। वर्ष 2020 में उन्हें Fortune–U-S- Department of State Global Women*s Mentoring Partnership के लिए भारत की एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में चुना गया।

SheRises by FICCI FLO और Project AIRSWEEE जैसे मंचों पर उन्होंने उभरती महिला उद्यमियों का मार्गदर्शन किया। आज FICCI FLO Lucknow की Chairperson के रूप में वह 550 महिलाओं के समुदाय का नेतृत्व कर रही हैं।

परिवार के मजबूत सहयोग और अपनी टीम के साथ सिमरन ने एक छोटे वेट लॉस सेंटर से 200 से अधिक लोगों के संगठन तक का सफर तय किया। इसमें करीब 80 प्रतिशत महिलाएँ हैं।

सेवा और संवेदना की मिसाल

कैंसर जागरूकता अभियान पर विशेष बल

शाहजहांपुर की प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. संगीता मोहन की पहचान उनकी चिकित्सकीय उपलब्धियों से आगे बढ़कर उनकी संवेदना और सेवा भावना से बनी है। स्वास्थ्य जागरूकता से लेकर जरूरतमंदों की सहायता और पर्यावरण संरक्षण तक उनका बहुआयामी योगदान संदेश देता है कि समाज सेवा के लिए किसी विशेष अवसर की नहीं, बल्कि संवेदनशील मन और समर्पित भावना की आवश्यकता होती है। यही सेवा–संकल्प उन्हें एक प्रेरणादायी महिला व्यक्तित्व के रूप में विशिष्ट बनाता है।

पिछले 32 वर्षों से वे चिकित्सा सेवा के साथ महिला स्वास्थ्य, बाल कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और जरूरतमंदों की सहायता जैसे सामाजिक कार्यों से निरंतर जुड़ी हुई हैं। उनके लिए चिकित्सक होना केवल रोग का उपचार करना नहीं, बल्कि पीड़ित व्यक्ति के जीवन में विश्वास, संवेदना और उम्मीद जगाना है।

डॉ. संगीता मोहन का जन्म संस्कारवान परिवार में हुआ। उनकी माता स्व. श्रीमती सुधा जैन और पिता श्री विजयेंद्र जैन हैं। प्रारंभिक शिक्षा डोगरा सेंट्रल स्कूल, मेरठ से प्राप्त करने के बाद उन्होंने राजकीय केजीके होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, मुरादाबाद से बीएचएमएस किया। आगे उन्होंने लंदन से होम्योपैथिक मेडिसिन में एमडी की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1992 में उनका विवाह शाहजहांपुर के चिकित्सक डॉ. रवि मोहन से हुआ। दोनों ने मिलकर चिकित्सा सेवा को अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य बनाया और मोहन होम्यो क्लिनिक एवं रिसर्च सेंटर के माध्यम से लोगों की सेवा को आगे बढ़ाया।

शाहजहांपुर की प्रसिद्ध होम्योपैथिक डॉक्टर संगीता मोहन का जीवन चिकित्सा को मानव सेवा का माध्यम बनाने की प्रेरक कहानी है। रक्तदान, नेत्रदान, जरूरतमंदों के खाद्यान्न संग्रह, निराश्रितों की सहायता और अनाथ बालिकाओं की मदद इनकी सेवा के आयाम हैं।

उनकी चिकित्सा पद्धति में उपचार के साथ आत्मीयता का विशेष स्थान है। वर्षों से उनके संपर्क में रहने वाले मरीज उन्हें केवल डॉक्टर नहीं, बल्कि अपने परिवार का सदस्य मानते हैं। कोई उन्हें भाभी कहता है, कोई आपा, बुआ, बहन या दीदी। यही आत्मीय संबंध उनकी लोकप्रियता और विश्वास की सबसे बड़ी पूंजी है।

डॉक्टर संगीता का कहना है कि पीड़ित मानव की सेवा कर उसके चेहरे पर मुस्कान लाना ही उनके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। महिला और किशोरी स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी डॉ. संगीता मोहन सक्रिय रही हैं। स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और रोगों से बचाव के प्रति जागरूकता फैलाने के साथ उन्होंने कैंसर जागरूकता कार्यक्रमों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लायंस क्लब सहेली द्वारा आयोजित कैंसर जागरूकता कार्यशाला में उन्होंने महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को नजरअंदाज न करने और समय रहते चिकित्सकीय परामर्श लेने के लिए प्रेरित किया।

उनकी सेवा यात्रा स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। रक्तदान, नेत्रदान, जरूरतमंदों के लिए खाद्यान्न संग्रह, निराश्रितों की सहायता, अनाथ बालिकाओं की मदद, गरीब कन्याओं के विवाह में सहयोग, बाढ़ और अग्निकांड से प्रभावित परिवारों की सहायता जैसे अनेक कार्यों में उनकी सहभागिता रही है।

संकट की घड़ी में किसी जरूरतमंद के साथ खड़ा होना वे अपना सामाजिक दायित्व मानती हैं। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े महिला कार्य में प्रांत महिला सह-समन्वयक तथा राष्ट्र सेविका समिति में महानगर संपर्क प्रमुख के रूप में अपनी भूमिका निभा रही हैं। तरुणी सम्मेलनों और महिला जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से वे नई पीढ़ी को स्वास्थ्य, शिक्षा, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता के लिए प्रेरित करती हैं।

पर्यावरण संरक्षण भी उनके सेवा भाव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने अपने घर की छत पर हरित बगीचा विकसित किया और पीपल, नीम तथा बरगद जैसे उपयोगी वृक्ष लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। उनका यह प्रयास संदेश देता है कि सीमित स्थान में भी प्रकृति के संरक्षण की शुरुआत की जा सकती है।

उधमिता से महिला सशक्तिकरण

विगत 18 वर्षों के कॉरपोरेट अनुभव से उद्यमिता और फिर महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ी **अपर्णा मिश्रा** की यात्रा संघर्ष के बीच नए अवसर तलाशने की कहानी है। 100 सीटों का BPO स्थापित कर सात वर्षों तक चलाने के बाद आग की घटना में पूरा सेटअप नष्ट हो गया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। आगे चलकर मेंटरिंग को अपनी नई दिशा बनाया। कोविड के दौरान शुरू हुई 'WomanShine' डिजिटल मैगजीन ने छह वर्षों में 500 से अधिक महिलाओं की यात्राओं को सामने रखा। आज WomanShine Chamber से लगभग 250 महिला उद्यमी जुड़ी हैं। लक्ष्य छोटे शहरों की महिलाओं को अवसर और नेटवर्क प्रदान करना है।

सपने देखने का हक हर किसी को है, पर उन्हें पूरा करने के लिए जी-जान लगा देने का साहस किसी-किसी में ही होता है। अपने सपनों को पूरा करते हुए दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाने की यात्रा और भी खास होती है। अपर्णा मिश्रा की उद्यमिता की यात्रा ऐसे ही सपनों, संघर्षों और फिर से उठ खड़े होने की कहानी है। लखनऊ की रहने वाली अपर्णा की शिक्षा भी यहीं हुई। मैनेजमेंट की पढ़ाई के बाद उन्होंने लगभग 18 वर्ष कॉरपोरेट जगत में बिताए। इस दौरान टाइम्स ऑफ इंडिया, मोदी रेवलॉन और रिलायंस जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ काम करने का अवसर मिला। एक अच्छा करियर था, अनुभव था, लेकिन मन के किसी कोने में अपना कुछ करने की इच्छा लगातार बनी रही।

वर्ष 2008 में उन्होंने उद्यमिता के क्षेत्र में कदम बढ़ाया। राह आसान नहीं थी। व्यवसाय को लेकर ज्ञान और मार्गदर्शन सीमित था और उद्यमिता का कोई पूर्व अनुभव भी नहीं था। फिर भी उन्होंने शुरुआत की। यह यात्रा उन्हें कई वेंचर्स तक ले गई। शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हुए बहुत कुछ सीखा और आगे चलकर 100 सीटों वाला BPO स्थापित किया, जिसे उन्होंने लगभग सात वर्षों तक सफलतापूर्वक चलाया। लेकिन उद्यमिता केवल सफलता का नाम नहीं है, वह अनिश्चितताओं का सामना करना भी सिखाती है। एक आग की घटना में उनका पूरा सेटअप नष्ट हो गया। आर्थिक नुकसान के साथ यह उनके लिए भावनात्मक रूप से भी कठिन समय था। अपर्णा ने इसे अपनी यात्रा का अंत नहीं बनने दिया। उन्होंने स्वयं को फिर संभाला और Goldman Sachs के साथ ISB हैदराबाद पहुँचीं। यहाँ उन्होंने व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाओं की मदद करने की दिशा में काम किया। इसके बाद आईआईटी (IIT) कानपुर में विद्यार्थियों को सिखाने का अवसर मिला। इसी दौरान उन्हें महसूस हुआ कि लोगों को मेंटर करना, उनके विचारों को दिशा देना और उन्हें आगे बढ़ते देखना ही वह काम है, जिससे उन्हें वास्तविक संतुष्टि मिलती है।

इसके बाद उन्होंने दूसरे शहरों की महिलाओं को भी मेंटर करना शुरू किया। कोविड के चुनौतीपूर्ण दौर में उन्होंने 'WomanShine' डिजिटल मैगजीन की शुरुआत की। इसका उद्देश्य ऐसी महिलाओं की उपलब्धियों को सामने लाना था, जो अपने क्षेत्र में कुछ नया कर रही थीं या आगे बढ़ना चाहती थीं। छह वर्षों में इस मंच ने 500 से अधिक महिलाओं की यात्राओं को सामने लाने का काम किया।

इस सोच को और व्यापक बनाते हुए उन्होंने WomanShine Chamber की स्थापना की। उससे आज लगभग 250 महिला उद्यमी जुड़ी हैं। यह केवल महिलाओं को जोड़ने का मंच नहीं, बल्कि उनके लिए नए अवसर तलाशने, नेटवर्क बनाने और व्यवसाय में आगे बढ़ने का माध्यम है। अपर्णा की इच्छा है कि यह दायरा बड़े शहरों तक सीमित न रहे। छोटे शहरों की अधिक से अधिक महिलाएँ इससे जुड़ें, अपनी संभावनाओं को पहचानें और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ें।

अलीगढ़ की रहने वाली **निधि शर्मा** कहती हैं कि मैं युवा पीढ़ी के लिए कहना चाहूंगी कि आप एक अच्छे और सच्चे इंसान बनें, स्वयं ही सेवा भाव उत्पन्न होगा जाएगा। देश को, समाज को आपकी हमेशा जरुरत है। उसे समझें अपना उद्देश्य निश्चित करें, अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए, निभाते हुए, अपने देश को, समाज को और परिवार को आगे बढ़ाएं। अपनी संस्कृति पर कार्य करें, वेदों, पुराणों और ग्रंथों सहित आध्यात्मिक पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त करें।

साक्षात्कार /निधि शर्मा

राष्ट्र की सेवा सबसे पहले

आपको समाज सेवा की प्रेरणा कहाँ से मिली?

हमारे परिवार का माहौल बहुत ही खुशहाल और प्रेरणादायक रहा है, मेरे माता-पिता और परिवार के सभी सदस्य हमेशा सब की मदद किया करते और हर तरह से साथ रहते थे। पिता जी किसी भी तरह का भेद-भाव नहीं करते थे, सब साथ बैठते बड़े-छोटे सबको सुनते बराबर से निष्पक्ष होकर निर्णय लेते। पिता जी हमेशा कहा करते थे कि कभी भी घर में बाहर से हार कर नहीं आना, हमारी परवरिश ऐसी हुई है। आज उनकी ये बात पूरी तरह से समझ आती है। मेरी हमेशा से यही कोशिश रही है कि मुझ से जन-सेवा जैसे भी, जिस भी रूप में हो रही है, उसको अंतिम चरण तक जरुर पहुंचाऊं, हार मान कर बीच में ही नहीं छोड़ती और साथ ही मैं किसी की भी मदद करती हूं तो उनका भी मनोबल टूटने नहीं देती और निस्वार्थ भाव से उन्हें भी प्रेरित करती हूं ताकि वह भी किसी के लिए बिना किसी संकोच के सेवा भाव से मदद के लिए आगे बढ़ें और दूसरों को प्रेरित करें।

दो दशकों में आपने इस किन प्रमुख क्षेत्रों और वर्गों के लिए काम किया?

मेरे जीवन में देश प्रेम, जन सेवा ही प्रमुख स्थान है। जबसे होश संभाला, अपनी कम उम्र से ही बच्चों को पढ़ाया करती थी। मैं हमेशा चाहती थी कि सभी बच्चे अपने जीवन में अपने पैरों पर खड़े हों, आत्मनिर्भर और साहसी बनें। 2015 से मैंने खुद को जन सेवा कार्य के लिए समर्पित किया और पूरी तरह समाजसेवा के लिए समय दिया। विधिक सेवा में जुटी बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा, जागरूकता शिविर, सरकारी योजनाएं, थानों में उन लोगों के लिए सहायक होना जिन्हें जानकारी कम हो, डीएम, एस एस पी, श्रम विभाग, महिला-पुरुष कारागार, स्वच्छता अभियान, एसिड अटैक, किन्नर समाज, वृद्ध आश्रम, बाल यौन शोषण एवं विधिक प्राधिकरण में कार्य किया।

महिलाओं और बालिकाओं के लिए काम करते हुए आपका अनुभव कैसा रहा?

महिलाओं और बालिकाओं की जब भी मुझसे संभव मदद हुई, मैंने उन्हें सिखाते हुए और अपने कार्य कहां से होंगे, कैसे होंगे यह बताते और समझाते हुए की है। उन्हें हमेशा जागरुकता के साथ आगे बढ़ाया है। एसिड अटैक पीड़ितों के साथ बिताया समय और सहायता मुझे वो हमेशा याद रहेगा। सभी के साथ एक गहरा रिश्ता बन गया है, वह सभी मुझसे स्नेह करते हैं जो मेरे लिए प्रेरणादायक है।

दो दशकों की आपकी इस सेवा यात्रा में आपका अनुभव कैसा रहा?

जिला कारागार के लिए किए हर कार्य से मेरा जीवन बदला। उन परिवारों से मिलने के उपरांत जिस पीड़ा को अनुभव किया, जिसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। उन परिवारों के बच्चों की शिक्षा, परिवार जन के राशन, दवा व सरकारी योजनाओं से मिलने वाली हर संभव सहायता का प्रयास किया। किन्नर समाज में कुछ सदस्यों की शिक्षा पर ध्यान दिया। आज वे खुश हैं दुआ देते हैं। एसिड अटैक पीड़ित डॉली हमेशा मुझे याद रहेगी, जिसने मुझे जीवन की उस सच्चाई से सामना करवाया जो बाहरी दिखावे से, भ्रम से, स्वार्थ से और कई कुरीतियों से हमें दूर कर देती है।

एक दिन की महापौर बनीं बेटियों की आवाज

सहारनपुर निवासी **शिवानी गर्ग** की यात्रा का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि एक दिन की महापौर बनने का सम्मान उनके लिए एक दिन तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने उस अनुभव को नेतृत्व की स्थायी जिम्मेदारी में बदल दिया। आज उनकी कोशिश है कि सहारनपुर की कोई बेटी अवसर के अभाव में पीछे न रह जाए। कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न हो और कोई युवा अपनी क्षमता को नशे या निराशा में न खो दे। उनकी कहानी बताती है कि सम्मान किसी यात्रा का अंत नहीं, बल्कि समाज के लिए कुछ और करने की नई शुरुआत है।

सहारनपुर की शिवानी गर्ग की कहानी केवल पुरस्कारों और उपलब्धियों की कहानी नहीं है। यह उस युवा सोच की कहानी है, जिसने शिक्षा को अपने जीवन का आधार बनाया और फिर उसी शिक्षा को समाज के उन वर्गों तक पहुंचाने का संकल्प लिया, जहां अवसर अक्सर पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देते हैं। आज शिवानी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, स्वास्थ्य, नशामुक्ति, आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में निरंतर काम कर रही हैं।

शिवानी की अपनी शैक्षणिक यात्रा भी प्रेरणादायक रही है। एमए गृह विज्ञान में 79.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उन्होंने विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और कुलपति मेडल हासिल किया। उनकी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता को उस समय विशेष पहचान मिली, जब 25 फरवरी 2021 को उन्हें एक दिन के लिए सहारनपुर नगर निगम की महापौर का दायित्व सौंपा गया। इस अवसर पर उन्होंने तत्कालीन राज्यपाल एवं मां शाकुंभरी विश्वविद्यालय की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल से संवाद किया और अपने भविष्य के लक्ष्य साझा किए। यह अनुभव उनके लिए केवल सम्मान नहीं, बल्कि नेतृत्व की जिम्मेदारी को समझने का अवसर भी बना।

लेकिन शिवानी की असली पहचान उनके सामाजिक कार्यों से बनी। सरसावा रेलवे स्टेशन के आसपास की झुग्गी बस्तियों में उन्होंने 'पाठशाला' अभियान शुरू किया। लगभग 90 बच्चों से शुरू हुई यह पहल 140 बच्चों तक पहुंची। बालिकाओं की भागीदारी बढ़ी, विद्यालय नामांकन में सुधार हुआ और ड्रॉपआउट, बाल श्रम तथा भीख मांगने जैसी प्रवृत्तियों में कमी आई। शिवानी ने बच्चों में केवल पढ़ाई नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, नेतृत्व और टीम भावना विकसित करने पर भी जोर दिया।

महिलाओं और किशोरियों के लिए उनका मासिक धर्म स्वच्छता अभियान स्वास्थ्य और गरिमा से जुड़ा महत्वपूर्ण प्रयास रहा। नशामुक्ति अभियानों के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रहने तथा जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के साथ मिलकर 400 से अधिक नागरिकों, शिक्षकों और युवाओं को (सीपीआर), प्राथमिक उपचार और बाढ़ सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। पर्यावरण संरक्षण के लिए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत 200 पौधों का रोपण भी किया गया।

उनके निरंतर सामाजिक योगदान को विभिन्न मंचों पर सम्मान मिला। जिला एवं राष्ट्रीय स्तर के युवा कार्यक्रमों में सहभागिता और उपलब्धियों के साथ उन्हें यूथ अवार्ड (Youth Award@Youth Icon Award) जैसे सम्मानों से पहचान मिली। मेरी माटी, मेरा देश और अमृत कलश यात्रा जैसे राष्ट्रव्यापी अभियानों में योगदान के लिए भी उन्हें सम्मानित किया गया।

चिकित्सा से मानव-सेवा

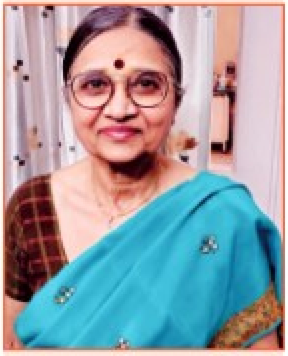

समाज में कुछ लोग अपने पेशे को केवल आजीविका का माध्यम बनाते हैं, जबकि कुछ अपने पेशे को सेवा का माध्यम बना देते हैं। मेरठ की वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कानन त्यागी ने चिकित्सा सेवा को मानव सेवा से जोड़ते हुए इसे अपने जीवन का उद्देश्य बनाया है। निराश्रित, बेसहारा तथा मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ लोगों के प्रति उनका समर्पण संवेदना और सेवा की प्रेरक मिसाल है। वर्ष 2018 में उनके द्वारा शुरू किया गया 'अपना घर आश्रम' आज उन लोगों के लिए आश्रय, उपचार और अपनत्व का केंद्र बन चुका है, जिन्हें जीवन ने अकेला छोड़ दिया था।

मेरठ की स्याना निवासी डॉ. कानन त्यागी के व्यक्तित्व को आकार देने में उनके माता-पिता और श्वसुर-परिवार से मिले संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जीवन के छोटे-बड़े निर्णयों में उनके पति डॉ. आनन्द प्रकाश शर्मा का निरंतर सहयोग उन्हें मिला। अपने चिकित्सकीय जीवन के प्रारंभिक दौर में उन्होंने एचआईवी पीड़ित बच्चों और बाल संरक्षण गृह में रहने वाली महिलाओं को चिकित्सा सहयोग प्रदान किया। इन अनुभवों ने उनके भीतर समाज के वंचित वर्गों के प्रति संवेदना को और गहरा किया। उनके जीवन की दिशा को नई प्रेरणा तब मिली, जब उनका संपर्क माँ माधुरी ब्रजवारिस सेवा संस्थान के संस्थापक डॉ. बी.एस. भारद्वाज और माँ माधुरी से हुआ। मानव सेवा के प्रति उनके समर्पण ने डॉ. त्यागी को गहराई से प्रभावित किया और उन्होंने सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया।

राजस्थान के भरतपुर आश्रम से प्रेरित होकर डॉ. कानन त्यागी और उनके पति ने अक्टूबर 2018 में गढ़ रोड स्थित एक किराए के मकान से 'अपना घर आश्रम' की शुरुआत की। सड़क, फुटपाथ और अन्य स्थानों पर बेसहारा जीवन जी रहे लोगों को आश्रम में लाकर उनका उपचार, भोजन और रहने की व्यवस्था की जाने लगी।

कई लोग गंभीर शारीरिक घावों, मानसिक अवसाद और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे होते हैं। डॉ. त्यागी मानसिक रोग विशेषज्ञों के सहयोग से उनके उपचार के साथ उन्हें सबसे महत्वपूर्ण चीज अपनेपन और सम्मान का अनुभव देने का प्रयास करती हैं।

आज यह छोटा-सा प्रयास साबुन गोदाम, चंद्रलोक में एक बड़े आश्रम का रूप ले चुका है। वर्तमान में 57 से अधिक निराश्रितों की देखभाल की जा रही है। आश्रम की स्थापना से अब तक 385 लोगों को सहारा दिया जा चुका है और 70 से अधिक निराश्रितों को उनके स्वजनों से मिलाया जा चुका है। स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में डॉ. त्यागी महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर भी सजग हैं। उनका मानना है कि आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं में कुपोषण और उससे जुड़ी बीमारियाँ अभी भी बड़ी चुनौती हैं, जबकि सम्पन्न वर्ग में मोटापा और उससे संबंधित समस्याएँ बढ़ रही हैं। वह महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य परीक्षण को प्राथमिकता देने की सलाह देती हैं। खून की कमी, थायराइड, ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर जैसी समस्याओं की समय पर जाँच आवश्यक है। उनके अनुसार शिक्षा और सामूहिक संवाद के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है।

आज डॉ. कानन त्यागी की पहचान केवल एक चिकित्सक के रूप में नहीं, बल्कि उन निराश्रित जीवनों के लिए उम्मीद की किरण के रूप में है, जिन्हें समाज ने भुला दिया था।

मुजफ्फरनगर के हसमपुर गांव के एक साधारण किसान परिवार में जन्मी **प्रीति पाल** की कहानी संघर्ष, हौसले और आत्मविश्वास की ऐसी मिसाल है जो बताती है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, सपनों को उड़ान देने का जज्बा हो तो मंजिल हासिल की जा सकती है।

पेरिस पैरालिंपिक 2024 का मंच ऐतिहासिक रहा। प्रीति ने 100 मीटर और 200 मीटर की T35 स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। वह पैरालिंपिक की ट्रैक एंड फील्ड स्पर्धाओं में दो पदक जीतने वाली भारत की पहली महिला एथलीट बनीं।

प्रीति पाल ने दी मुश्किलों को मात

प्रीति के पिता अनिल कुमार पाल दूध का व्यवसाय करते हैं। परिवार साधारण था और संसाधन भी सीमित थे, लेकिन प्रीति के जीवन की सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक नहीं, बल्कि शारीरिक थी। जन्म के महज छह दिन बाद ही उनके पैरों में कमजोरी के कारण प्लास्टर चढ़ाना पड़ा। बचपन से ही वह सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित थीं। इस कारण उनके शरीर और मस्तिष्क के बीच समन्वय में कठिनाई होती थी और उनके लिए सामान्य रूप से चल पाना भी आसान नहीं था।

बचपन से ही उनके सामने ऐसी चुनौतियां थीं, जिन्हें देखकर कोई भी निराश हो सकता था। लेकिन प्रीति ने अपनी शारीरिक स्थिति को पहचान बनने नहीं दिया। उनके भीतर कुछ अलग करने की इच्छा धीरे-धीरे मजबूत होती गई।

17–18 वर्ष की उम्र में सोशल मीडिया पर पैरालिंपिक के वीडियो देखते हुए उनके मन में भी खेलों की दुनिया में आगे बढ़ने का सपना जगा। उन्होंने महसूस किया कि शारीरिक चुनौतियां किसी व्यक्ति के सपनों को रोक नहीं सकतीं। इसी प्रेरणा ने उन्हें मेरठ तक पहुंचाया, जहां उन्होंने स्टेडियम में एथलेटिक्स का प्रशिक्षण शुरू किया। यहीं उनकी मुलाकात एथलीट फातिमा खातून से हुई। फातिमा ने प्रीति की प्रतिभा और जज्बे को पहचाना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। यह मुलाकात उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। ट्रैक पर शुरुआती कदम आसान नहीं थे। शरीर का संतुलन बनाना और गति हासिल करना उनके लिए सामान्य एथलीटों की तुलना में कहीं अधिक कठिन था। उन्होंने हर दिन अभ्यास किया और अपनी कमियों को अपनी ताकत में बदलने की कोशिश जारी रखी।

धीरे-धीरे मेहनत रंग लाने लगी। प्रीति ने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी। विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पदक जीतकर उन्होंने अपनी क्षमता साबित की और पैरालिंपिक के लिए क्वालीफाई किया। फिर आया पेरिस पैरालिंपिक 2024 का ऐतिहासिक मंच। प्रीति ने 100 मीटर और 200 मीटर की T35 स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। वह पैरालिंपिक की ट्रैक एंड फील्ड स्पर्धाओं में दो पदक जीतने वाली भारत की पहली महिला एथलीट बनीं। उनकी उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। लेकिन प्रीति की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद उनके पदक नहीं, बल्कि वह विश्वास है जो उन्होंने लाखों लोगों में जगाया है।

जिस बच्ची के पैरों में जन्म के छह दिन बाद प्लास्टर चढ़ाना पड़ा था और जिसके लिए ठीक से चल पाना भी कभी चुनौती था, उसी ने आगे चलकर पैरालिंपिक के ट्रैक पर दौड़ते हुए भारत के लिए दो कांस्य पदक जीते। प्रीति पाल की कहानी हमें सिखाती है कि कमजोरियां हमारे रास्ते की पहचान नहीं होतीं। उन्हें पार करने का साहस ही हमारी असली पहचान बनता है। उन्होंने साबित कर दिया कि मंजिल तक पहुंचने के लिए कदमों का मजबूत होना ही जरूरी नहीं, हौसले का मजबूत होना भी उतना ही जरूरी है।

हाथों को हुनर, मेहनत को अवसर

लखनऊ की **रेनू अग्रवाल** और स्वावलम्बन केन्द्र शक्ति एक दूसरे के प्रयाय हैं। 'शक्ति' यह संदेश दे रहा है कि एक छोटी–सी शुरुआत भी समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकती है। जब महिलाओं को अवसर, सम्मान और अपने हुनर को पहचानने का मंच मिलता है तो वे केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति ही नहीं बदलतीं बल्कि समाज को भी नई दिशा देती हैं। रेनु अग्रवाल और 'शक्ति' से जुड़ी महिलाओं की यह यात्रा इस बात का सशक्त उदाहरण है कि– "जब हाथों को हुनर, मेहनत को अवसर और इरादों को विश्वास मिल जाए, तो रसोई से निकलने वाली खुशबू भी समाज परिवर्तन की पहचान बन सकती है।"

महिला सशक्तिकरण केवल बड़े मंचों पर दिए जाने वाले भाषणों या योजनाओं का विषय नहीं है। जब एक महिला अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने साथ अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ने का अवसर देती है, तभी सशक्तिकरण अपने वास्तविक अर्थों में जीवंत होता है। लखनऊ के विकास नगर में ऐसा ही एक प्रेरक प्रयास वर्षों से महिलाओं के जीवन में आत्मविश्वास और स्वावलम्बन की नई रोशनी भर रहा है। इस पहल के पीछे हैं रेनु अग्रवाल, जिन्होंने आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्वावलम्बन केन्द्र 'शक्ति' की स्थापना की।

आज यह केन्द्र केवल काम करने की जगह नहीं, बल्कि लगभग 12–15 महिलाओं के लिए एक परिवार बन चुका है। यहाँ प्रत्येक महिला को उसकी कार्यकुशलता और क्षमता के अनुसार कार्य दिया जाता है, जिससे वह सम्मानपूर्वक अपनी आजीविका अर्जित कर सके।

'शक्ति संयम सहायता समूह' के अंतर्गत घर की रसोई जैसी शुद्धता और स्वाद के साथ अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार किए जाते हैं। नमकीन, गुझिया, मेवा लड्डू, अचार, पापड़, विभिन्न मसाले, आटा और बेसन हर उत्पाद को गुणवत्ता, स्वच्छता और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए बनाया जाता है। यही कारण है कि कामकाजी महिलाएँ अपने परिवार और बच्चों के लिए यहाँ के उत्पादों को विश्वास के साथ चुनती हैं। इतना ही नहीं, अपने देश से दूर रहने वाले परिवारीजन के लिए विदेश भेजने हेतु भी लोग यहाँ से विशेष रूप से सामान ले जाना पसंद करते हैं।

इस पहल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ अर्जित आय केवल महिलाओं की आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं रहती। इसका एक हिस्सा समाज के उन वर्गों तक भी पहुँचता है जिन्हें सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता है। सरकारी विद्यालयों के नवीनीकरण, जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा, तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भी इस आय का उपयोग किया जाता है। साथ ही, कल्याणं करोति संस्था के माध्यम से प्रतिमाह एक जरूरतमंद नेत्र रोगी के ऑपरेशन में सहयोग किया जाता है। रेनु अग्रवाल के लिए यह केवल एक उद्यम नहीं, बल्कि जीवन का एक उद्देश्य है। उनका मानना है कि–

"मेरा प्रयास केवल घर जैसा शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराना नहीं है, बल्कि महिलाओं में और स्वयं अपने भीतर स्वावलम्बन की भावना को मजबूत करना है। अपने परिश्रम के माध्यम से समाज के लिए कुछ कर पाना ही मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

जिला अदालत से सर्वोच्च विधिक पद तक

डॉ. अंजू राठी राणा की संघर्ष, सेवा और नेतृत्व की प्रेरक यात्रा

डॉ. अंजू राठी राणा की यात्रा उत्तर प्रदेश की जिला अदालत से भारत के सर्वोच्च विधिक प्रशासन तक पहुँचने की प्रेरक कहानी है। वर्ष 1994 में मुजफ्फरनगर जिला न्यायालय से अधिवक्ता के रूप में शुरुआत करने वाली डॉ. राणा ने अभियोजन सेवा, भारतीय विधि सेवा और विधिक प्रशासन के विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्व निभाए। वर्ष 2025 में वे भारत सरकार की पहली महिला विधि सचिव बनीं। बाद में उन्होंने 23वें विधि आयोग की सदस्य सचिव का दायित्व संभाला। उनकी यात्रा केवल उपलब्धियों की सूची नहीं, बल्कि तीन दशकों के परिश्रम, नेतृत्व, सार्वजनिक सेवा और महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलने की प्रेरक मिसाल है।

डॉ. अंजू राठी राणा की विधिक यात्रा सत्ता के गलियारों से नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश के उन शहरों और कस्बों से शुरू हुई, जहाँ उन्होंने अपना बचपन बिताया, शिक्षा प्राप्त की और अंततः मुजफ्फरनगर की जिला अदालत में वर्ष 1994 में अधिवक्ता के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। तीन दशक से अधिक की इस यात्रा में उन्होंने वकालत, अभियोजन, विधिक प्रशासन, कानून सुधार और सार्वजनिक नीति के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं।

मार्च 2025 में उनकी यात्रा ने एक ऐतिहासिक पड़ाव हासिल किया, जब वे भारत सरकार की पहली महिला विधि सचिव नियुक्त हुईं। यह नियुक्ति भारत के विधिक प्रशासन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। नवंबर 2025 में उन्होंने 23वें विधि आयोग की सदस्य सचिव के रूप में कार्यभार संभाला।

डॉ. राणा का जन्म श्री हरपाल सिंह राठी और श्रीमती राजबाला राठी के परिवार में हुआ। उनके पिता उत्तर प्रदेश राज्य सेवा के गन्ना विभाग में कार्यरत रहे और जिला गन्ना अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्ष 1994 में अधिवक्ता के रूप में नामांकन के बाद उन्होंने मुजफ्फरनगर जिला न्यायालय में प्रैक्टिस शुरू की। वर्ष 1999 में वे दिल्ली सरकार के अभियोजन निदेशालय से जुड़ीं। वर्ष 2017 में वे भारतीय विधि सेवा (Indian Legal Service) में शामिल हुईं और विधि एवं न्याय मंत्रालय के विधि कार्य विभाग में संयुक्त सचिव एवं विधि सलाहकार बनीं। वर्ष 2022 में अतिरिक्त सचिव और वर्ष 2025 में विधि सचिव का दायित्व संभाला। अपने कार्यकाल में उन्होंने मध्यस्थता, वाणिज्यिक विवाद समाधान, विधिक सहयोग और संस्थागत क्षमता निर्माण जैसे क्षेत्रों में कार्य किया। नए आपराधिक कानूनों पर देशभर में आयोजित सम्मेलनों के माध्यम से न्यायपालिका, विधिक समुदाय, पुलिस, शिक्षाविदों और अन्य हितधारकों के बीच संवाद को आगे बढ़ाया। अप्रैल 2025 में सरकार के मुकदमों के प्रभावी एवं कुशल प्रबंधन के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए। साथ ही LIMBS Live Cases Dashboard की शुरुआत हुई, जिससे सरकारी मुकदमों की निगरानी और समयबद्ध निर्णय प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायता मिली।

उनकी जिम्मेदारियाँ केवल विधिक प्रशासन तक सीमित नहीं रहीं। वे ब्रिक्स (BRICS) और संघाई सहयोग संगठन (Shanghai Cooperation Organisation) जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। विधि आयोग, India International Arbitration Centre, National Judicial Academy, Indian Law Institute सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थानों से भी उनका जुड़ाव रहा है।

सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में डॉ. राणा ने Denotified, Nomadic and Semi& Nomadic Communities (Ghumantus) के साथ भी कार्य किया। उन्होंने गाड़िया लोहार, गेहरा, सांसी और सपेरा समुदायों के बीच जाकर उनके आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, रोजगार, कानूनी अधिकारों और सरकारी योजनाओं से जुड़ी समस्याओं को समझा। महिलाओं और बच्चों के मुद्दों पर भी उन्होंने विशेष ध्यान दिया तथा महिला सम्मेलनों और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व को प्रोत्साहित किया।

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना 25 अक्टूबर 1936 (विजयादशमी) को वर्धा में वंदनीय **लक्ष्मीबाई केलकर "मौसीजी"** द्वारा की गई। उस समय समाज में स्त्रियों की भूमिका मुख्यतः परिवार तक सीमित मानी जाती थी। मौसीजी का स्पष्ट विचार था कि स्त्री केवल परिवार की सीमा तक सीमित न रहे, बल्कि अपने भीतर निहित शक्ति और सामर्थ्य को पहचानकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाए। इसी भावना को केंद्र में रखकर मौसीजी ने राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की। प्रारंभ में अपने घर की बालिकाओं को साथ लेकर उन्होंने इस कार्य का बीजारोपण किया। धीरे–धीरे यह कार्य आगे बढ़ा और महिलाओं में राष्ट्रभाव, आत्मविश्वास, संगठन, संस्कार एवं सेवा की भावना विकसित होने लगी।

राष्ट्र सेविका समिति

मातृशक्ति में राष्ट्र जागरण की आधारशिला

- सुरभि भदौरिया, प्रो वांसलर, प्रताप विश्वविद्यालय, जयपुर

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना करने वाली वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर 'मौसीजी' ने डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति से प्रेरित होकर उन्होंने महिलाओं के लिए इसी प्रकार की संगठित कार्यपद्धति विकसित की। समिति की कार्यपद्धति में नियमित शाखा के माध्यम से शारीरिक, बौद्धिक एवं संस्कार आधारित प्रशिक्षण को प्रमुख स्थान दिया गया।

समिति का प्रारंभिक विस्तार : स्थापना के बाद समिति का कार्य धीरे-धीरे विभिन्न क्षेत्रों में फैलने लगा। 1946 तक नागपुर, वर्धा, मुंबई, गुजरात आदि क्षेत्रों में समिति की शाखाएँ प्रारंभ हो चुकी थीं। गुजरात में भी समिति के कार्य का विस्तार हुआ और वहाँ शाखाओं के माध्यम से महिलाओं को संगठन से जोड़ने का कार्य आगे बढ़ा। इस कालखंड में समिति की लगभग 20 शाखाओं तक कार्यविस्तार की जानकारी मिलती है। यह विस्तार केवल संख्या की दृष्टि से नहीं, बल्कि समाज में संगठित एवं राष्ट्रनिष्ठ नारी शक्ति के निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था।

समिति की प्रार्थना : समिति के कार्य और भावना को अभिव्यक्त करने के लिए प्रार्थना का भी विशेष महत्व रहा। प्रारंभिक समय में समिति की प्रार्थना मराठी भाषा में होती थी। मौसीजी के भावों और समिति के मूल उद्देश्य के अनुरूप बाद में कुसुम ताईजी द्वारा प्रार्थना संस्कृत में रचित की गई। इस प्रकार प्रार्थना समिति की विचारधारा, राष्ट्रभक्ति, मातृभूमि के प्रति समर्पण और सेवा-भाव को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनी। इस प्रारंभिक दशक में राष्ट्र सेविका समिति ने अपने कार्य की ऐसी नींव रखी, जिसमें नारी शक्ति का जागरण, संस्कार, संगठन, आत्मविश्वास और राष्ट्रसेवा प्रमुख आधार बने। यही बीज आगे चलकर देशभर में विस्तृत संगठन और व्यापक सामाजिक कार्य के रूप में विकसित हुआ।

1937 : **भगवा ध्वज को गुरु का स्थान :** 1937 में समिति ने भगवा ध्वज को गुरु का स्थान दिया। किसी व्यक्ति विशेष को गुरु न मानकर भगवा ध्वज को गुरु मानने की परंपरा प्रारंभ हुई। इसका उद्देश्य व्यक्ति-पूजा के स्थान पर तत्वनिष्ठा को महत्व देना था। ध्वज की प्रेरणा से ही सेविकाएँ अपने कार्य का मार्गदर्शन प्राप्त करें, यह भावना स्थापित की गई।

दूसरा दशक : राष्ट्र सेविका समिति का कार्य जैसे-जैसे आगे बढ़ा, वैसे-वैसे इसकी शाखाएँ देश के विभिन्न प्रांतों में विस्तृत होने लगीं। 1947 तक महाराष्ट्र, पंजाब, सिंध और गुजरात सहित अनेक क्षेत्रों में समिति का कार्य पहुँच चुका था। नागपुर के प्रशिक्षण वर्गों के माध्यम से तैयार हुई सेविकाएँ विभिन्न स्थानों पर जाकर शाखाओं के विस्तार और संगठन के कार्य को आगे बढ़ा रही थीं। उस समय सिंध तथा तत्कालीन पश्चिमोत्तर सीमांत क्षेत्रों में भी समिति की शाखाएँ सक्रिय थीं।

1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता की प्रसन्नता के साथ ही देश के विभाजन का गहन दुःख भी सामने आया। भारतमाता का विभाजन हुआ और अनेक परिवारों के साथ-साथ समिति की सेविकाओं

के समक्ष भी अत्यंत कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं। किंतु इस संकट की घड़ी में भी मौसीजी ने धैर्य नहीं खोया। मौसीजी ने यह निश्चय किया कि वे स्वयं कराची जाएँगी और वहाँ की सेविकाओं से भेंट करेंगी। अत्यंत विषम परिस्थितियों के बीच वे कराची पहुँचीं। वहाँ बड़ी संख्या में सेविकाएँ उनके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने लगभग 1,200 सेविकाओं को संबोधित किया और उन्हें धैर्य, साहस तथा संगठन के प्रति निष्ठा बनाए रखने का संदेश दिया। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के बाद देश में अनेक हिंदू संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। राष्ट्र सेविका समिति का कार्य भी इससे प्रभावित हुआ। शाखाओं का नियमित संचालन बाधित हुआ, किंतु सेविकाओं का मनोबल अडिग रहा।

अंततः 1949 में प्रतिबंध हटने के बाद समिति का कार्य पुनः गति पकड़ने लगा। नागपुर सहित अनेक स्थानों पर शाखाएँ पुनः प्रारंभ हुईं। अब कार्य को केवल शाखाओं तक सीमित न रखकर समाज की विविध आवश्यकताओं से जोड़ा जाने लगा। भजन-कीर्तन, शिशु-शिक्षा, उद्योग प्रशिक्षण, भोजन व्यवस्था तथा गृहिणी प्रशिक्षण केंद्र जैसे अनेक सेवा एवं सामाजिक प्रकल्प प्रारंभ किए गए। संगठन का उद्देश्य स्पष्ट था कि समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचकर

महिलाओं को आत्मनिर्भर, संस्कारित और सामाजिक रूप से सक्रिय बनाना। इसी क्रम में संगठन की आर्थिक एवं कार्यपद्धति को सुदृढ़ करने हेतु गुरुदक्षिणा की व्यवस्था पर भी विचार किया गया। सेविकाएँ अपनी क्षमता के अनुसार संगठन के कार्य में योगदान दें, यह भावना धीरे-धीरे और अधिक सुदृढ़ होती गई।

1950 में 'देवी अष्टभुजा' की संकल्पना प्रस्तुत की गई। इसकी परिकल्पना मौसीजी द्वारा एक बैठक में की गई, जिसमें भारतीय नारी के आदर्श गुणों को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया। इस संकल्पना का चित्रण प्रसिद्ध चित्रकार दलाल जी द्वारा किया गया। इसके पश्चात वर्धा में अष्टभुजा देवी मंदिर की स्थापना की गई, जो आज भी सेविका कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा-स्थल माना जाता है।समिति के कार्य का एक महत्वपूर्ण आयाम महिलाओं के व्यक्तित्व विकास और गृहजीवन के सशक्तीकरण से भी जुड़ा रहा। इसी उद्देश्य से 'गृहिणी अभ्यास पाठ्यक्रम' तैयार करवाया गया, ताकि महिलाएँ अपने जीवन, परिवार और सामाजिक दायित्वों को अधिक प्रभावी ढंग से निभाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और दृष्टि प्राप्त कर सकें।

इसके पश्चात 1953 का वर्ष संगठनात्मक दृष्टि से एक नई उपलब्धि लेकर आया। इस वर्ष 'सेविका प्रकाशन विभाग' की स्थापना की गई और 'हिंदू सेविका' नामक वार्षिक प्रकाशन का शुभारंभ हुआ। इसका उद्देश्य समिति के विचारों, कार्यों और सेविकाओं के अनुभवों को व्यापक समाज तक पहुँचाना था।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए 1953 में मा. बकुलताइ के नेतृत्व एवं प्रेरणा से समिति के तत्वावधान में 'स्त्री जीवन विकास परिषद' की स्थापना का निर्णय हुआ। इस पहल का उद्देश्य महिलाओं के जीवन के विभिन्न पक्षों के विकास के लिए व्यवस्थित मार्गदर्शन और प्रशिक्षण उपलब्ध कराना था। इसी व्यापक दृष्टि के अंतर्गत गृहिणी अभ्यास पाठ्यक्रम को भी औपचारिक प्रशिक्षण संरचना से जोड़ा गया।

तीसरा दशक : 1956 तक आते-आते राष्ट्र सेविका समिति का कार्य अधिक सुदृढ़ और विस्तारित हो गया था तथा भारतीय स्तर पर समिति का कार्य विस्तार पाने लगा था। इसी क्रम में गोवा मुक्ति आंदोलन में भी

सेविकाओं ने सक्रिय भाग लिया। वर्ष 1958 में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की शताब्दी के अवसर पर समिति ने नासिक में रानी लक्ष्मीबाई स्मृति दिवस मनाया तथा 'रानी लक्ष्मीबाई स्मारक समिति' की स्थापना की।

1962 में चीन के आक्रमण के समय समिति ने राष्ट्रीय सुरक्षा के कार्य में सहयोग दिया। तत्कालीन रक्षा मंत्री से भेंट कर 100 सेविकाओं को नागरिक सुरक्षा के लिए उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई। इसके बाद 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान सेविकाओं ने विभिन्न स्थानों पर सैनिकों के लिए चाय, भोजन तथा अन्य आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराईं और आवश्यक सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार युद्धकाल में भी सेविकाओं ने राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को सेवा के माध्यम से निभाया। 1965 में देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति की स्थापना नागपुर में हुई। इसी क्रम में 1966 में प्रथम घोष प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुआ।

चौथा दशक : 1966 से 1976 का दशक राष्ट्र सेविका समिति के लिए सेवा, संगठन-विस्तार और संघर्ष का महत्वपूर्ण काल रहा। इस अवधि में संगठनात्मक अनुशासन और वैचारिक दृढ़ता को मजबूत आधार मिला तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में समिति का कार्य निरंतर विस्तारित होता गया।

1966 में संगठनात्मक दायित्वों का विस्तार हुआ और ऊषा ताई जी को उत्तर प्रदेश की पालक अधिकारी बनाया गया। यह निर्णय आगे चलकर उत्तर प्रदेश में संगठन के सुदृढ़ विस्तार की नींव बना। इसके बाद 1968 में उत्तर प्रदेश में पहला वर्ग आयोजित हुआ, जिसमें मौसी जी एवं प्रेमिला ताई जी उपस्थित रहीं। इसी वर्ष पुणे में समग्र सम्मेलन भी आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 1300 सेविकाओं की उपस्थिति रही।

1971 में संगठनात्मक गतिविधियों का विस्तार आगे बढ़ा और ग्वालियर में अगला समग्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी वर्ष मार्च 1971 में समिति ने मुक्ति वाहिनी का सहयोग करते हुए बांग्लादेश की आजादी के संघर्ष में भी सहायता प्रदान की। 1975 में देश में आपातकाल लागू हुआ। इस कठिन समय में भारतवर्ष में सत्याग्रह का इतिहास बना। समिति की सेविकाओं ने लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रवादी विचारों की रक्षा के लिए सक्रिय सहभागिता की। इस सत्याग्रह में 13–17 वर्ष की युवतियों से लेकर 60–65 वर्ष की आयु की सेविकाओं तक ने भाग लिया। विभिन्न आयु-वर्ग की यह सहभागिता संगठन की व्यापक सामाजिक पहुंच, साहस और वैचारिक दृढ़ता का प्रमाण बनी।1976 में राजस्थान के अजमेर में पहला वर्ग आयोजित हुआ।

पाँचवाँ दशक - इसी कालखंड में समिति के कार्य को अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं ने नई दिशा दी। 1976 में आपातकाल के दौरान समिति की सेविकाओं ने जेल में बंद लोगों के परिवारों की सहायता के लिए आगे बढ़कर कार्य किया। आपातकाल के कठिन दौर के बाद राष्ट्र सेविका समिति ने पुनः अपने कार्य को गति दी। वर्ष 1976 में विविध योग 'विद्या पीठ' के प्रमुखों को बुलाकर मौसी जी ने स्वयं सत्र लिया। यह उनके मार्गदर्शन और संगठन के प्रति उनकी सक्रिय भूमिका को दर्शाता था।

वर्ष 1978 में समिति का 10वाँ सम्मेलन आयोजित किया गया। जनवरी माह में लगभग 2000 सेविकाओं की उपस्थिति में यह सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में संगठन के कार्य और भविष्य की दिशा पर विचार किया गया। इसी अवसर पर 'पुनर्वसन निधि' देने का निर्णय भी लिया गया। 15 नवम्बर 1978 में मौसीजी का शरीर शांत हो गया। मानो जैसे समिति नहीं पूरा देश विलाप कर रहा था। मातृशक्ति की आवाज़, उनके जीवन को दिशा देने वाली वंदनीय मौसीजी का परलोक गमन

हो गया था। समिति का एक अध्याय पूर्ण हुआ परंतु मक़सद नहीं। समिति के लक्ष्य को आगे बढ़ाने हेतु अब नेतृत्व अब सरस्वती ताई आप्टे के कंधों पर था।

वर्ष 1978 में ही पूर्वांचल क्षेत्र में कार्य का प्रारंभ हुआ। 1978 से लेकर 1984 तक संगठन के विस्तार का कार्य लगातार आगे बढ़ता रहा। उनके मार्गदर्शन में संगठन का विस्तार तेजी से हुआ और कार्य की नई संभावनाएँ विकसित हुईं। इसी प्रकार 1976 से 1986 का दशक राष्ट्र सेविका समिति के लिए पुनर्स्थापन, संगठनात्मक पुनर्गठन और व्यापक विस्तार का काल रहा।

छठा दशक : यह दशक राष्ट्र सेविका समिति के लिए केवल संगठन-विस्तार का समय नहीं था, बल्कि राष्ट्रजीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों से जुड़कर सेवा, संघर्ष और सामाजिक जागरण के नए अध्याय लिखने का काल था।

इसी दशक के आरंभ में रामजन्मभूमि आंदोलन देश के जनमानस को आंदोलित कर रहा था। भगवान श्रीराम के प्रति श्रद्धा और रामजन्मभूमि की मुक्ति का भाव समाज के मन में गहराता जा रहा था। राष्ट्र सेविका समिति की सेविकाएँ भी इस आंदोलन से स्वयं को अलग नहीं रख सकीं। उन्होंने अपने-अपने स्तर पर जनजागरण किया और आंदोलन में सक्रिय सहयोग दिया।

रामजन्मभूमि आंदोलन के संदर्भ में 1990 का वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। 1984 में प्रारंभ हुआ यह आंदोलन धीरे-धीरे व्यापक जनआंदोलन का रूप ले चुका था और 1990 तक कारसेवा का आह्वान सामने आ गया। सेविकाओं ने भी इसमें सक्रिय भागीदारी की। अयोध्या सहित देश के विभिन्न भागों में होने वाली गतिविधियों में उन्होंने सहयोग दिया। शिलान्यास के अवसर पर भी अनेक सेविकाओं ने प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर अपनी भूमिका निभाई।

इसी क्रम में 1996 में श्रीलंका में हिंदू सेविका समिति के संगठनात्मक कार्य का आरंभ हुआ। यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इससे समिति के कार्य को भारत की सीमाओं से बाहर विस्तार मिला और हिंदू समाज के

बीच संगठन तथा सांस्कृतिक चेतना के प्रयासों को नई दिशा मिली। इस प्रकार 1986 से 1996 का दशक राष्ट्र सेविका समिति की यात्रा में संघर्ष, सेवा, संस्कार और संगठन-विस्तार का दशक बनकर सामने आया। रामजन्मभूमि आंदोलन जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय सहभागिता से लेकर अरुणाचल की बालिकाओं के लिए शिक्षा और संस्कार की व्यवस्था, वनवासी क्षेत्रों में कार्य-विस्तार और श्रीलंका तक संगठन की पहुँचकृइन सभी प्रयासों ने समिति को एक व्यापक सामाजिक संगठन के रूप में और अधिक सुदृढ़ किया।

सातवा दशक : 1996 से 2006 का दशक राष्ट्र सेविका समिति के लिए सेवा-विस्तार, संगठन-सुदृढ़ीकरण और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय सहभागिता का काल रहा। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक जागरण से जुड़े सेवा-प्रकल्पों का विस्तार हुआ। साथ ही, महिला नेतृत्व के निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया गया। देश के विभिन्न भागों में सेविकाओं की सक्रियता बढ़ी और विदेशों में भी समिति का कार्य विस्तार पाने लगा। 1996 में अमेरिका ज़ोन के विभिन्न देशों से संपर्क और कार्य-विस्तार का क्रम आगे बढ़ा। कैरेबियन क्षेत्र के त्रिनिदाद और गुयाना में संघ-कार्य प्रारंभ हुआ। वहाँ सेविका शाखाओं के कार्य को गति मिली और वर्ष 2000 तक वर्ग भी लगने लगे।

1998—99 में जीजामाता की समाधि पर लगभग 1,000 सेविकाओं का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी अवसर पर उनके जन्मस्थान पर अखंड ज्योति प्रज्वलित की गई और पत्थर पर पंक्तियाँ अंकित की गईं। यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि उन आदर्शों और प्रेरणाओं के स्मरण का अवसर था, जिनसे सेविकाओं को निरंतर कार्य करने की ऊर्जा मिलती रही। 1999 में एक विशेष उपलब्धि सामने आई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने विज्ञान भवन, दिल्ली में उनके नाम से विशेष डाक टिकट का विमोचन किया।

2001 में सेविकाओं के उच्च्व संस्कार और उनके सामाजिक योगदान के स्वरूप पथसंचलन आयोजित करने का सम्मान प्राप्त हुआ। इससे विदेशों में भारतीय संस्कृति, परिवार और संस्कारों के संरक्षण के कार्य को और बल मिला। 2002-03 में मौसी जी की अटूट आस्था पर आधारित 'रामरक्षा' स्तोत्र की छोटी पुस्तक सभी प्रांतों के विद्यालयों में वितरित की गई। इसी क्रम में निर्धारित समय पर प्रतिदिन एक घंटे की शाखा आयोजित करने की पहल हुई। इससे विद्यार्थियों और नई पीढ़ी तक संगठन के संस्कार एवं विचार पहुँचाने का प्रयास अधिक व्यवस्थित हुआ।

इसी अवधि में प्रकाशन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य हुआ। 'रामायण' के मराठी विशेषांक का प्रकाशन किया गया और 'श्री माँ' का पांडिचेरी में विमोचन हुआ। प्रकाशनों के माध्यम से समिति के विचार, कार्य और प्रेरणाओं को समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास निरंतर जारी रहा।

N.C.C., Scout & Guide

Shooting Range

Library

First Aid & Medical Facilities

Digital White Board & Smart Board

Online Learning Platform

Cultural Activity Hall & Auditorium

Atal Tinkering Lab. for Robotics & innovation

Well Equipped Laboratory

National Rank in Sports Competition

BHAURAV DEVRAS
SARASWATI VIDYA MANDIR

H-107, Sector-12, NOIDA

E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com

Contact No. 0120-423817, 9910665195

Website: www.bdsvidyamandirnoida.com

Facebook: bdsvidyamandirnoida

YouTube: BDSVM

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष: 0120-4545608

ई-मेल: ssm.noida@gmail.com
वेबसाइट: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताएं

- भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
- नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजेक्ट, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
- आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबंध।
- पुस्तक देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानसिक व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
- सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
- विद्यालय के श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

- कोंच द्वारा कराटे क्लासेस, स्विमिंग क्लासेस की व्यवस्था।
- नवीन तकनीकी द्वारा शैक्षिक व्यवस्था की सुविधा उपलब्ध्ध (स्मार्ट बोर्ड द्वारा शिक्षण)
- पॉडकास्ट हेतु उद्यन स्टूडियो की व्यवस्था।

नन्हे मनों को संस्कारित कर, उज्ज्वल भविष्य का निर्माण।

मूल्यों से युक्त शिक्षा, जीवनभर का सीखना।

प्रदीप भारद्वाज (अध्यक्ष)	राजीव नाईक (व्यवस्थापक)	जितेन्द्र गौतम (कोषाध्यक्ष)	देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28